महाकाल महामृत्युंजय विशेषांक

फरवरी 2026
वर्ष – 16

मूल्य : 40/-
अंक – 06

निखिल-मंत्र-विज्ञान

फाल्गुन कृष्ण पक्ष शिवकल्प - 2 फरवरी 2026 से 17 फरवरी 2026

महाशिवरात्रि - 15 फरवरी 2026 - सूर्य ग्रहण - 17 फरवरी 2026

काल पर विजय

महाकाल महामृत्युंजय दीक्षा

काल अर्थात् समय, काल अर्थात् भय, काल अर्थात् रोग, काल अर्थात् बाधा

महाकाल-महामृत्युंजय की शरण सर्व बाधाओं से मुक्ति...

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

जीवन में सुगन्ध, पुष्टि, तुष्टि, शांति, आरोग्य, उन्नति, तृप्ति, महाकाल-महामृत्युंजय की असीम कृपा से ही संभव है और सद्‌गुरु अपने शक्तिपात से शिष्य के आज्ञा चक्र के बिन्दुओं को स्पन्दित कर उसे भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते है।

शिष्य का कर्त्तव्य है कि वह महादेव की असीम कृपा प्राप्त हेतु सद्‌गुरु चरणों में निवेदन कर अपने जीवन काल में निरन्तर महाकाल-महामृत्युंजय ग्रहण करता रहे और निरन्तर साधना और अभिषेक सम्पन्न करता रहें।

शिव कल्प फाल्गुन कृष्ण पक्ष में अवसर प्रदान कर रहा है देवाधिदेव महादेव से एकाकार होने का... जिसमें है सबसे बड़ा पर्व महाशिवरात्रि...

शिव और गुरु एक ही है, शिष्य को आश्रय में लेकर उसे 'सर्व बाधा विनिर्मुक्तो, धन धान्य सुतान्वितः' से परिपूर्ण करते है। महाकाल-महामृत्युंजय के आशीर्वाद से साधक -

दीर्घायु, यश और वैभव प्राप्त होता है।

भय, व्याधि समाप्त होते है और व्याधि से लड़ने की शक्ति प्राप्त होती है।

जीवन के ग्रहदोष समाप्त होते हैं।

सकारात्मक ऊर्जा में तीव्र गति से वृद्धि होती है, तनाव समाप्त हो जाते हैं।

ओजस्विता, तेजस्विता, शौर्य और पौरुष का संचार होता है।

शिव साधना, मंत्र जप, अनुष्ठान आदि में शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

महाकाल-महामृत्युंजय दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. 3100/-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

वर्ष 16 | फरवरी 2026

मूल्य मासिक रुपये 40/- | मूल्य वार्षिक रुपये 405/-

निखिल आलेख

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

अंक 06 | पृष्ठ 68

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

संयोजक
श्री राम चैतन्य शास्त्री
मनोज भारद्वाज

व्यवस्थापक मण्डल
नितेश कुमार
संजय 'निखिल'

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
नन्द किशोर श्रीमाली
निखिल मंत्र विज्ञान
द्वारा
सालासर ईमेजिंग सिस्टम,
ए-97, सेक्टर-58
नोएडा (उ.प्र.) - 201301
से मुद्रित तथा
निखिल मंत्र विज्ञान,
14 अ मेन रोड
हाईकोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर से प्रकाशित

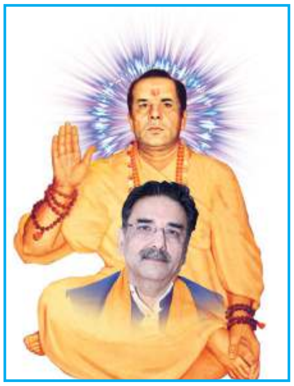

निखिल सम्यक्

सद्गुरु प्रवचन - 'श्री' रूपी फल रहे जीवन में सदा स्थापित ...37
गुरु वाणी ...34
शिष्य धर्म ...36
इस माह की प्रमुख साधनाएं ...57
नक्षत्रों की वाणी ...60
काल निर्णय ...62
वराहमिहिर ...63
शिविर जानकारी ...64

साधनाएं

चैत्र नवरात्रि - त्रिशक्ति साधना पूजन ...07
होलाष्टक : आठ तंत्र प्रयोग ...12
फेत्कारिणी शमन साधना ...16
पापांकुशा साधना ...18
नचिकेता अग्नि विद्या साधना ...27
चन्द्र ग्रहण - सूर्य ग्रहण साधनाएं ...33
रम्भा साधना : सौन्दर्य अभिव्यक्ति ...54

विशेष

महाकाल - महामृत्युंजय दीक्षा ...02
शमन महादीक्षा ...20
तंत्र बाधा निवारण दीक्षा ...24
कामदेव - रति अनंग दीक्षा ...56

निखिल विचार प्रवाह

पाप का दण्ड : आत्मशांति का लोप ...17
तंत्र विद्या क्या है? ...21
जीवन संधिकाल : परिवर्तन का अवसर ...25
गुरु गीता और साधक की जिज्ञासा ...30
कलहपूर्ण वातावरण में स्वयं की सुरक्षा ...50
परिवर्तन का काल : वंसत ...52

14 A, मेन रोड हाईकोर्ट कॉलोनी, सेनापति भवन के पास, जोधपुर, फोनः 9799988915, 9799988930, SMS & WhatsApp 9602334847
आरोग्य धाम, गुजरात अपार्टमेंन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोनः 9799988970, 9799988904, 9799988905
www.nikhilmantravigyan.org E-mail – nmv.guruji@gmail.com facebook.com\nikhilmantravigyan.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'निखिल मंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायं, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर–न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय द्वारा किसी भी सामग्री का विक्रय नहीं किया जाता, केवल उस पर मंत्र साधना, यज्ञ इत्यादि सम्पन्न किया जाता है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। पत्रिका में प्रकाशित आलेखों को किसी भी प्रिन्ट या डिजिटल माध्यम से प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक/सम्पादक कार्यालय से स्वीकृती अवश्य प्राप्त कर लें।

☆ प्रार्थना ☆

अभ्यर्थिनां नम शिरोत्तमानां,
सत्साधकानां ननु भागधेयं।
तन्नौमि निखिलेश्वर देवदेवं,
यस्मिन प्रसन्ने सकलार्थ सिद्धिः।।

भौतिक और आध्यात्मिक कामनाओं की पूर्ति हेतु श्री चरणों में झुके हुए श्रेष्ठतम साधकों के सौभाग्य रूप, देवाधिदेव गुरुदेव निखिल के श्री चरणों में भक्तिभावयुक्त प्रणामांजलि अर्पित करता हूं। जिनकी प्रसन्नता से सिद्धियां स्वतः फलीभूत होती हैं। अन्य देवी देवताओं की आराधना या उपासना से कुछ भी प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि सभी शक्ति तत्वों में गुरु ही समाहित होकर चेतना पुंज को प्रदान करते हैं।

☆☆ ईश्वर प्राप्ति ☆☆

एक व्यक्ति गुरु के पास पहुंचा और बोला, गुरुजी मुझे ईश्वर का साक्षात्कार करा दीजिये। गुरु ने कहा कि – तुममें कितनी लगन है। उसने कहा – यदि लगन न होती तो मैं यहां आता ही क्यों?

गुरुजी ने कहा कि – इस प्रक्रिया में दस वर्ष लगेंगे। इस पर वह व्यक्ति बोला गुरुजी अध्यात्म का मुझे अच्छा ज्ञान है। मैंने बहुत पुस्तकें पढ़ रखी हैं और मुझे ज्ञान प्राप्त करने का शौक भी है। तब तो मुझे कम समय लगना चाहिए, ईश्वर साक्षात्कार में। इस पर गुरुजी बोले, तब तो तुम्हें 15 वर्ष लगेंगे।

यह सुनकर वह व्यक्ति आश्चर्य से भर उठा और बोला यह कैसे संभव है? मैं तो कई अध्यात्मिक कार्यशालाओं में भाग भी ले चुका हूं। मैं पहले से ही काफी कुछ जानता हूं।

इस पर गुरुजी बोले – तब तो ईश्वर साक्षात्कार में तुम्हें 20 वर्ष लगेंगे। इस पर वह व्यक्ति और अधिक चौंका और उसके सब्र का बांध टूट सा गया और बोला जब भी मैं आपको बताता हूं कि मुझे अध्यात्मिक ज्ञान है आप ईश्वर साक्षात्कार का समय और अधिक बढ़ा देते हैं, इसका क्या कारण है?

गुरुजी बोले – **ईश्वर साक्षात्कार के लिए आवश्यक नहीं कि हम क्या जानते हैं। बल्कि यह आवश्यक है कि हम जो जानते हैं उससे और ऊपर उठकर स्वयं को भुला दें। जब हम अपने अहंकार को भूल जाते हैं तभी ईश्वर का साक्षात्कार हो सकता है। हमें जितना अधिक ज्ञान होगा, उतना ही अधिक समय लगेगा उसे खाली करने में अतः उतना ही अधिक समय लगेगा ईश्वर प्राप्ति में।**

अपनों से अपनी बात...

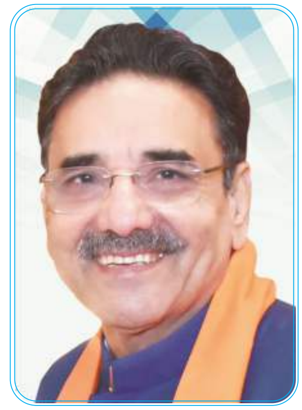

मेरे प्रिय आत्मीय,

शुभाशीर्वाद,

प्रत्येक मनुष्य के शरीर में तीन विभाग होते है। पहला भाग है - उसका दिखने वाला शरीर दूसरा भाग है उसका मन, जो दिखता नहीं है लेकिन सदैव शरीर के साथ विद्यमान रहता है और तीसरा भाग है - उसकी आत्मा जो निरपेक्ष भाव से मनुष्य के मन और शरीर को कार्य करते हुए देखती रहती है।

शरीर की साधना सबको आती है और इस शरीर को निरन्तर युवामय, सौन्दर्यवान बनाने के लिये विविध-विविध प्रयत्न करते है।

साधना का सीधा अर्थ है, शरीर और मन को साधना और शरीर को साधने की क्रिया तो बहुत सरल है। उचित खान-पान, व्यायाम द्वारा शरीर आरोग्य युक्त रह सकता है लेकिन मन को साधना सबसे कठिन क्रिया है। जिसने मन को साध लिया वह मनुष्य योनि में ही मनस्वी बन जाता है श्रेष्ठ व्यक्तित्व बन जाता है। अपने जीवन को सार्थक कर सकता है, अपने लक्ष्यों का संधान कर सकता है।

आप सबके मन में भी यही प्रश्न बार-बार आता है कि गुरुदेव मैं अपने मन को कैसे साधूं? और यही प्रश्न भगवान श्रीराम ने अपनी शिक्षा-दीक्षा के उपरान्त अपने गुरु वशिष्ट से पूछा था और महान् योगी वशिष्ट ने कहा -

चेतन चेतः शममाशा नीत्वा शुद्धेन घोरास्त्रमिवास्त्रयुक्त्या।
चिराय साधो त्यज चञ्चलत्वं विमर्कटो वृक्ष इवाक्षतश्रीः।।

हे राम! यह मन एक वृक्ष के समान है। जिसकी जड़े पूरे शरीर में फैली हुई है। चिन्ताएं और दुःश्चिन्ताएं इसके पुष्प है और इच्छाएं और भोग भी इसके फूल है। रोग और बुढ़ापा इसके फल है। आशाएं और लालसाएं इसकी शाखाएं है। विकार और विकृतियां इसके पते है। पर्वत के समान अटल दिखाई देने वाला इस वृक्ष को निरन्तर 'अनुसंधान' रूपी प्रचण्ड कुलहाड़े से तरासते रहो।

हे राम! ये मन एक हाथी के समान है जो शरीर रूपी वन में विचरण करता है लेकिन इसकी दृष्टि भ्रम के कारण क्षीण हो गई है। मन के उस कौने में यह प्रविष्ट हो चुका है जहां अज्ञान है। यह ज्ञानी लोगों को सुनने के कारण सत्य को देखना चाहता है पर अपनी धारणाओं और मानसिक बद्धता के कारण सुख-दुःख में लिप्त रहता है। इसलिये हे राम तुम बाघ समान बनों और अपनी 'तीव्र बुद्धि' द्वारा इस हाथी पर प्रहार कर समाप्त करो।

हे राम! यह मन उस कौएं की भांति है जो शरीर रूपी घौसलें में रहता है। यह उस गन्दगी में ही रंगरेलियां मनाता है और शरीर रूपी मांस का भक्षण कर बहुत मजबूत हो गया है। यह मन दूसरों के हृदय को भी पीड़ा पहुंचाता है। मूर्खता के कारण यह कटु और काला है। सदा शोर मचाता है, धून का पक्का है। इसे अपने से बहुत दूर भगा दो, राग-रंग में मन को दूषित मत करो।

हे राम! यह मन एक भूत की तरह है और लालसा नामक भूतनी इसकी सेविका है। अज्ञान रूपी वन में यह निवास करता है और भ्रम के कारण अपने रूप बदलता रहता है। इसे ज्ञान और अनाशक्ति के माध्यम से पीछा छुड़ाया जा सकता है। केवल मंत्रोच्चार से यह नहीं होगा। गुरु कृपा, स्व प्रयास और मंत्रोच्चार द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त किया जा सकता है लेकिन उसके पहले तुम्हें ज्ञान और अनासक्ति के

माध्यम से इस भूत से पीछा छुड़ाना है। वास्तव में संसार सागर में सभी दुःखों की जड़ अति आसक्ति ही है। जीवन में प्रेम रखें, पर जब ये प्रेम आसक्ति में परिवर्तित हो जाता है तो जीवन अज्ञानमय हो जाता है और जीवन में प्रेम रखों, पर आसक्ति को दूर रखो।

हे राम! यह मन तो एक बन्दर के समान है। यह पूरे जीवन निरन्तर फल प्राप्ति, पुरस्कार, आनन्द की चाह में छलांगे लगाता रहता है और निरन्तर आनन्द, निरन्तर आनन्द, निरन्तर फल की इसकी चाह कभी पूरी होती ही नहीं है...।

तुम्हें पूर्णत्व प्राप्त करना है तो मरकट के समान, बंदर के समान इस मन को चारों तरफ से घेर कर इस बंद कर लो। मन की व्यर्थ की कूद-फांद को रोको...।

हे राम! यह मन बादल के समान है। बादल आते है, जाते है। निरन्तर प्रवाहवान रहते है। उसी प्रकार यह मन भी तरह-तरह की धारणाएं बनाता है, तरह-तरह के संकल्प करता है। जो आवश्यक नहीं है उसे भी प्राप्त करना चाहता है और जो प्राप्त है उसका सही से उपयोग और उपभोग भी नहीं करता है। इसलिये मन के ऊपर छाये हुए इस अज्ञान रूपी बादल को हटा दो। फिर तुम्हारे भीतर एक तेज पुंज प्रकट होगा। वह तेज पुंज है तुम्हारी आत्मा का प्रकाश। तब तुम अपने जीवन की सभी क्रियाएं निश्चिन्त भाव से, द्वंद्व रहित होकर सम्पन्न कर सकोंगे।

हे राम! जिस प्रकार किसी विशेष भयावह शस्त्र का, प्रहार का सामना उससे अधिक शक्तिशाली शस्त्र से करने से ही विजय पाई जा सकती है। उसी प्रकार साधक को इस भयावह मन को, मन की सहायता से ही शांत किया जा सकता है, मन को नियन्तित किया जा सकता है। उस पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

हे राम! किसी भी प्रकार की मानसिक उतेजना से बचना है। तुम देखों एक वृक्ष पर पचासों बंदर उपद्रव करते है लेकिन वृक्ष सदैव शांत रहता है। इसलिये तुम अपने अन्दर 'आत्मशांति' बनाएं रखों।

मन को सुनों, उस पर विचार करो लेकिन उस विचार को आत्मा की कसौटी पर कसो तब तुम्हं मन के विचारों की सत्यता का और असत्यता का विचार होगा।

जो विचार आत्मा द्वारा शुद्ध हो जाये उस विचार को जीवन में अपना लो...।

हे राम! इस मन की धारणाएं, कल्पनाएं, बहुत सूक्ष्म और तीक्ष्ण होती है। यह हाथी, कौए, भूत, बन्दर, बादल के समान है। इसलिये मन में विचार आते ही, मन में धारणा आते ही उसको अपने जीवन में निश्चित मत करो। इस मन ने अपने आपको समय के जोड़ लिया है और समय के साथ-साथ धारणाएं और कल्पनाएं मन को और अधिक शक्तिशाली बना देती है। तब तुम्हारा मन तुम्हारे वश में नहीं रहता। यह मन तुम्हारी चेतना पर अधिकार स्थापित कर ले, उसके पहले ही बुद्धि, विवेक, ज्ञान और आत्म चिन्तन द्वारा निरन्तर मनन करो कि मेरे जीवन में क्या आवश्यक है और क्या अनावश्यक है। मैं इस संसार सागर में विशुद्ध कैसे रह सकता हूं? और अपनी ज्ञान चेतना को कैसे निरन्तर प्रज्जवलित रख सकता हूं। तब ही तुम्हें परमानन्द की प्राप्ति होगी।

प्रिय साधक सदैव याद रखों, मन ही शत्रु है, मन ही मित्र है। इस पर तुम्ही नियन्त्रण कर सकते हो अपनी चेतना के द्वारा चेतनावान, प्रज्ञावान साधक बनों...।

नन्द किशोर श्रीमाली

नव संवत्सर - विक्रम संवत् - 2083

चैत्र नवरात्रि - 19 मार्च 2026 से 27 मार्च 2026

हे आद्या शक्ति! आप हमारे जीवन में सदैव स्थापित रहें...

नवरात्रि शक्ति साधना महोत्सव

त्रिशक्ति साधना पर्व

घट स्थापन : प्रातः 06:52 से 08:02 तक

सनातन धर्म में नवरात्रि केवल एक पर्व नहीं, बल्कि चेतना के पुनर्जागरण का काल है। वर्ष में आने वाली दो प्रमुख नवरात्रियां वासंती (चैत्र) और शारदीय (आश्विन) ऋतु-संधि पर आधारित हैं। चैत्र नवरात्रि विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वसंत ऋतु के प्रारम्भ, नववर्ष की चेतना और शक्ति-तत्व की सक्रियता तीनों का एक साथ संगम है।

चैत्र नवरात्रि का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। यही तिथि अनेक परंपराओं में हिंदू नववर्ष की भी मानी जाती है।

प्रकृति के स्तर पर यह वह समय है जब जड़ता समाप्त होकर नव अंकुर फूटते हैं, वृक्षों में नई कोपलें आती हैं और सृष्टि पुनः सृजन की ओर बढ़ती है। शास्त्रीय दृष्टि से यही कारण है कि इस काल को शक्ति-साधना का सिद्ध मुहूर्त कहा गया है क्योंकि जब प्रकृति स्वयं चेतन हो रही हो, तब साधक के भीतर क्रिया, चेतना का जागरण सहज होता है।

क्रिया रजोगुण से जुड़ी है और साधना के माध्यम से वही क्रिया आगे चलकर सत्त्वगुण में परिवर्तित होती है। नवरात्रि साधक को तमस से रजस और रजस से सत्त्व की ओर ले जाने की प्रक्रिया है।

चैत्र नवरात्रि में साधक निष्क्रिय अवस्था से निकलकर कर्तव्य, धर्म और आत्मविकास की दिशा में बढ़ने लगता है। इसी कारण नवरात्रि को जागरण का पर्व कहा गया है यह भीतर की चेतना को प्रज्वलित करने का अवसर है।

चैत्र नवरात्रि हमें यह स्मरण कराती है कि देवी बाहर नहीं, भीतर जाग्रत की जानी हैं। यह पर्व बाह्य अनुष्ठानों से अधिक आंतरिक रूपांतरण का आह्वान है, जहां साधक अपने भीतर शक्ति को स्थापित कर, जीवन-संघर्षों से नहीं डरता, बल्कि उन्हें साधना बना लेता है।

नवरात्रि पर्व को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है, और तीनों शक्ति के तीन स्वरूप हैं। नवरात्रि अर्थात् नवीन रात्रि और नौ रात्रि त्रिशक्ति को समर्पित हैं। इसमें **प्रथम शक्ति है - दुर्गा, द्वितीय शक्ति - लक्ष्मी जिसे धनदात्री देवी कहा जाता है, और तीसरी शक्ति है - सरस्वती,** जिसे ज्ञान की शक्ति कहा जाता है। ये तीनों शक्तियां संयुक्त रूप से परमात्मा का स्त्री शक्ति रूप में प्रगटीकरण है।

शक्ति की स्पष्ट शास्त्रीय व्याख्या है - **'शक्ति'** शब्द में **'श'** ऐश्वर्य सूचक तथा **'क्ति'** पराक्रम सूचक है। शक्ति का ही अन्य पर्यायवाची शब्द प्रकृति भी है तथा प्रकृति शब्द का **'प्र'** - सत्व गुण सूचक **'कृ'** रजोगुण सूचक एवं **'ति'** तमोगुण सूचक घोषित किया गया है। इस का स्पष्ट अर्थ यही है कि प्रकृति अर्थात् पराशक्ति त्रिगुण - त्रिशक्ति स्वरूप को अपने में समाहित किए हुए है, जिसकी उपासना हम महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती के त्रिशक्ति स्वरूप में करते हैं।

नवरात्रि की मूल भावना इन्हीं तीनों शक्तियों की आराधना, साधना एवं इससे भी अधिक उनके वरदायक प्रभाव की प्राप्ति की कामना ही है।

चैत्र नवरात्रि का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि इसका समापन राम नवमी से होता है। इसका प्रतीकात्मक अर्थ गहरा है शक्ति की उपासना के बिना मर्यादा, धर्म और आदर्श की स्थापना संभव नहीं। पहले नौ दिन शक्ति का जागरण और पूर्णता अर्थात् नवमी को श्रीराम का अवतरण यह संकेत देता है कि जब शक्ति संतुलित और संस्कारित होती है, तभी वह धर्म के रूप में प्रकट होती है।

प्रत्येक गृहस्थ साधक, स्त्री-पुरुष द्वारा चैत्र नवरात्रि त्रिशक्ति पूजन सम्पन्न करने हेतु आवश्यक सामग्री पूजा स्थान में स्थापित करें - **1. मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त त्रिशक्ति यंत्र, 2. महाकाली सिद्धि महिषी, 3. महालक्ष्मी सिद्धि सिद्ध चक्र, 4. सरस्वती सिद्धि प्रज्ञिका, 5. मंत्र जप हेतु शक्ति माला।**

नित्य पूजन - विधान

प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर उत्तर की ओर मुख कर बैठ जाएं, सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर गुरु-चित्र एवं **भगवती दुर्गा** का चित्र स्थापित करें।

पवित्रीकरण

बांएं हाथ में जल लेकर दाएं हाथ से ऊपर छिड़कें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

साधक अपने दांईं ओर धूप, दीप जलाएं एवं निम्न मंत्र बोलकर कुंकुम, अक्षत, अर्पित करें -

भो दीप देव रूपस्वत्वं कर्म साक्षि ह्यविद्घ्न कृत्
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावदत्र स्थिरो भव।

आसन शुद्धि

अपने आसन के नीचे कुंकुम से एक त्रिकोण बनाएं तथा निम्न मंत्र बोलकर उस पर पुष्प, अक्षत, कुंकुम चढ़ाएं।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

दिग्बन्धन

बांएं हाथ में अक्षत लेकर निम्न मंत्र बोलकर सभी दिशाओं में अक्षत के दाने फेंकें -

अपसर्पनतु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः,
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्,
सर्वेषाम्अ विरोधेन पूजा कर्म समारम्भे।

भैरव-स्मरण

हाथ जोड़कर भगवान भैरव का ध्यान करें -

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम,
भैरवाय नमस्तुभ्यं मनुज्ञां दातुमर्हसि।
ॐ भ्रं भैरवाय नमः।

संकल्प

(दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प करें)

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे चैत्र मासे शुक्ल पक्षे अमुक वासरे (दिन का नाम बोलें) *अमुक गोत्रोत्पन्नोहं* (गोत्र बोलें) *अमुक शर्माहं* (नाम बोलें) *भगवती दुर्गा प्रीत्यर्थ गुरोरज्ञया यथा मिलितोपचारैः पूजनं अहं करिष्ये।*

(जल जमीन पर छोड़ दें।)

कलश-स्थापन

कलश को जल से भरकर अपनी बांईं ओर पुष्पों का आसन देखकर रखें, उसमें वरुण देवता का आह्वान करें। हाथ जोड़कर बोलें -

सर्वे समुद्रा सरिता तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षय कारकाः॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणा स्थिताः।

वं वरुणाय नमः का 21 बार जप करें तथा कलश में गंध, अक्षत, पुष्प और सिक्का डालकर तीर्थों का आह्वान करें -

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
ब्रह्माण्डोरदक तीर्थानि करैः पृष्ठानि ते रेवः।
तेन सत्येन मे देव, तीर्थं देहि दिवाकर।।

निम्न मंत्र बोलकर कलश की चारों दिशाओं में कुंकुम से चार बिन्दियां लगाएं।

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः। पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः।

इसके बाद एक नारियल को कलश पर स्थापित करें और कलश पर मौली बांध दें। कलश पर तिलक, अक्षत, पुष्पादि अर्पित करें और दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें -

भो वरुण! प्रसन्नो भव, वरदो भव, अनया पूजया वरुणादि आवाहिता देवता प्रीयन्ताम्।

गणपति पूजन

गणपति विग्रह या चित्र को अपने सामने स्थापित करें और दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

ॐ गजाननं भूतं गणधि सेवतिं, कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणं।
उमासुतं शोक विनाश कारकं, नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजं।।

इसके पश्चात् विग्रह चित्र को स्नान कराकर, वस्त्र, पुष्प, अक्षत, नैवेद्य इत्यादि अर्पित करें।

ॐ गं गणपतये नमः स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि नमः। तिलकं अक्षतान् पुष्पाणि समर्पयामि नमः। नैवेद्यं निवेदयामि नमः। (स्नान, वस्त्र, पुष्प, अक्षत, नैवेद्य अर्पित करें)

गुरु पूजन

(हाथ जोड़कर गुरुदेव से प्रार्थना करें)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
ध्यान मूलं गुरो र्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्ः।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।
श्री पारमेष्ठि गुरुं निखिलेश्वरानन्दं आह्वाययामि स्थापयामि नमः।

आपके पास जो गुरुचित्र, गुरु पादुका है उसे स्नान कराकर कुंकुम, अक्षत, पुष्पदीप अर्पित करें -

स्नानं समर्पयामि गुरुर्देवाय नमः। गन्धं समर्पयामि अक्षतान् समर्पयामि। धूपं दीपं पुष्पाणि समर्पयामि।

निम्न मंत्र बोलकर नैवेद्य अर्पित करें -

जगद्गुरुः जगन्नेता जगदन्तः जनार्दनः।
जयनेश्वरश्च विष्णुर्जगन्मंगल दायकः।
श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

दोनों हाथों में पुष्प लेकर '*ॐ गुरुदेवाय नमः*' बोलकर साधना में सफलता की प्रार्थना कर गुरु-चित्र पर चढ़ाएं।

प्रारम्भिक दुर्गा पूजन -

इस पूजन क्रम के पश्चात् उसी बाजोट/चौकी पर **प्राण प्रतिष्ठित त्रिशक्ति यंत्र** तथा **शक्ति माला** स्थापित कर दें। दुर्गा की स्तुति निम्न ध्यान मंत्र से करें -

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्। हस्तैश्चक्र गदासिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

अब कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प से **त्रिशक्ति यंत्र और माला** का पूजन करें। इसके पश्चात् **नौ सुपारी** स्थापित करें, उनका पूजन नवदुर्गा के नौ स्वरूपों का आह्वान करते हुए करें, प्रत्येक सुपारी पर कुंकुम से तिलक करें -

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं काल रात्रिति महगौरीति चाष्टमम्।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामामि ब्रह्मणैव महात्मनाः।।

इसके पश्चात् शक्ति माला से दुर्गा के मूल मंत्र एवं नवार्ण मंत्र का जप करें।

मूल मंत्र

।।ॐ दुं दुर्गायै नमः।।

नवार्ण मंत्र

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे।।

नित्य पूजन विधान सम्पन्न करने के पश्चात् नवरात्रि की विशेष साधना प्रारम्भ करें। यह तो प्रारम्भिक त्रिशक्ति दुर्गा पूजन है अब तीन-तीन दिवस क्रमशः **महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती पूजन एवं साधना** सम्पन्न करें।

शक्ति की उपासना का उद्देश्य केवल लाभ प्राप्ति नहीं, बल्कि जीवन के चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का संतुलन है। यदि जीवन में केवल धन है तो जीवन शुष्क हो जाता है, और यदि केवल त्याग है तो जीवन निष्क्रिय। चैत्र नवरात्रि हमें सिखाती है कि शक्ति के बिना न भोग संभव है, न योग। यही कारण है कि इस पर्व को जीवन के नवीनीकरण का उत्सव कहा गया है।

प्रथम तीन दिवस - महाकाली दुर्गा

नित्य पूजन विधान सम्पन्न करने के पश्चात् प्रथम तीन (19-21 मार्च 2026) दिवस महाकाली पूजन के लिए हैं। अपने सामने पूजा स्थान में स्थापित **'त्रिशक्ति यंत्र'** का पूजन कर, महाकाली स्वरूप **'महिषी'** को अपने सिर से तीन बार घुमाकर यंत्र के सामने स्थापित करें। फिर दोनों हाथ जोड़कर अपने दुर्गुणों के नाश हेतु दुर्गा का ध्यान करें -

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य दुःख भय हारिणी कात्वदन्या,
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता।।
ॐ जगदम्बायै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

इदं पुष्पासनं समर्पयामि नमः। (यंत्र को पुष्पासन दें)
पाद्यं समर्पयामि नमः। (यंत्र पर दो आचमनी जल चढ़ाएं)
अर्घ्यं समर्पयामि नमः। (हाथ में जल, कुंकुम लेकर चढ़ाएं)
स्नानं समर्पयामि नमः। (यंत्र को जल से स्नान कराएं)
वस्त्रं समर्पयामि नमः। (यंत्र पर मौली अर्पित करें)
गन्धं समर्पयामि नमः। (कुंकुम अक्षत चढ़ाएं)
नैवेद्यं समर्पयामि नमः। (नैवेद्य अर्पित करें)
पुष्पांजलि समर्पयामि नमः।

हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना बोलें। **'त्रिशक्ति माला'** से निम्न मंत्र की 11 माला जप करें -

।।क्रीं ह्रीं हुं दक्षिण कालीके क्रीं ह्रीं हुं नमः।।

मंत्र जप के पश्चात् गुरु आरती एवं दुर्गा आरती कर प्रसाद ग्रहण करें।

मध्य के तीन दिवस - लक्ष्मी साधना

नित्य पूजन विधान सम्पन्न करने के पश्चात् नवरात्रि के चतुर्थ दिवस (22-24 मार्च 2026) तक इस विधान अनुसार पूजन सम्पन्न करें। प्रथम दिवस पर स्थापित किए गए **'त्रिशक्ति यंत्र'** व महिषी का स्थान परिवर्तन न करें। यंत्र के दांईं ओर समृद्धि हेतु **'सिद्ध चक्र'** स्थापित कर लक्ष्मी का आह्वान करें -

सर्व मंगल मांगल्ये विष्णु वक्षः स्थलायये।
आवाहयामि देवि! त्वां क्षीर सागर सम्भवे।।

निम्न मंत्र बोलकर यंत्र पर कुंकुम, अक्षत, पुष्प, दीप आदि अर्पित करें और अपनी मनोकामना का उच्चारण करें -

श्री महालक्ष्म्यै नमः आह्वानं समर्पयामि। गंधं, अक्षतान्, पुष्पाणि, धूपं, दीपं समर्पयामि नमः।

निम्न मंत्र बोलकर विविध भोज्य पदार्थ, मिष्ठान्न,फलादि यंत्र पर चढ़ाएं -

नाना मोदक भक्ष्यैश्च फल लड्डु समन्वितं
नैवेद्यं गृह्यतां देवि नारायण कुटुम्बिनी।
श्री महालक्ष्मयै नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।
नाना ऋतु फलानि च समर्पयामि।

इसके बाद पांच बत्तियों का दीपक जलाकर महालक्ष्मी की निम्न प्रकार से आरती या नीराजन करें-

नीराजनं समानीतं क्षीरसागर सम्भवे,
गृह्यतां अर्पितं भक्त्या गरुड़ध्वज भायिनी।
श्रीमहालक्ष्म्यै नमः नीराजनं समर्पयामि।

दोनों हाथों में खुले पुष्प लेकर पुष्पांजलि दें।

पुष्पांजलिं गृहाण मम पुरुषोत्तम वल्लभे।
भक्त्या समर्पितं देवि! सुप्रीता भव सर्वदा
श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि नमः।

'त्रिशक्ति माला' से निम्न मंत्र की 11 माला जप करें -

मंत्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी आगच्छ ॐ नमः।।

अब गुरु आरती एवं दुर्गा आरती कर प्रसाद ग्रहण करें। महाकाली दुर्गा इच्छा शक्ति तथा महालक्ष्मी क्रिया शक्ति के पूजन के पश्चात् नवरात्रि के शेष तीन दिन ज्ञान शक्ति सरस्वती की आराधना सम्पन्न करें।

अंतिम तीन दिवस - सरस्वती साधना

नित्य पूजन विधान के पश्चात् नवरात्रि के सातवें दिवस से नवमीं तक इस विधान अनुसार पूजन सम्पन्न करें। प्रारम्भिक पूजन के बाद **'त्रिशक्ति यंत्र'** के बांईं ओर समृद्धि हेतु **'प्रज्ञिका'** स्थापित करें। सरस्वती आह्वान करें -

चतुर्भुजां चतुर्वर्णां चतुरानन वल्लभां।
आवाहयामि वाग्देवीं वीणा पुस्तक धारिणीं।।
श्री सरस्वत्यै नमः आह्वानं ध्यानं च समर्पयामि। गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि श्री सरस्वत्यै नमः। (यंत्र पर कुंकुम, पुष्प, दीप, नैवेद्य अर्पित करें)

निम्न मंत्र बोलते हुए पुष्प की पंखुड़ियां अर्पित करें -

ॐ ऐं श्रौं नमः। ॐ ऐं श्रीं नमः। ॐ ऐं हंसं नमः। ॐ ऐं हौं नमः। ॐ ऐं ह्रीं नमः। ॐ ऐं अं नमः। ॐ ऐं क्लीं नमः। ॐ ऐं चां नमः। ॐ ऐं मुं नमः। ॐ ऐं डां नमः। ॐ ऐं यैं नमः। ॐ ऐं वि नमः।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प लेकर भगवती सरस्वती को पुष्पांजलि समर्पित कर अपनी मनोकामना बोलें -

पुष्पांजलिं मया दत्तां गृहाण वर्ण मालिनि।
शारदे लोक मातस्त्वां आश्रितेष्ट प्रदायिनि।।
श्री सरस्वत्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि।

इसके पश्चात् **'त्रिशक्ति माला'** से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करें-

मंत्र

।। ॐ ऐं ऐं वागीश्वर्यै ऐं ऐं ॐ नमः।।

मंत्र जप के पश्चात् गुरु आरती एवं दुर्गा आरती कर प्रसाद ग्रहण करें। इस प्रकार सम्पूर्ण नवरात्रि में विधिवत् पूजन सम्पन्न करना है। **नवरात्रि की नवमीं (27 मार्च 2026)** को जप समाप्ति के बाद साधना सामग्री को लाल वस्त्र में बांधकर जल में प्रवाहित कर दें। कलश के जल को सारे घर में छिड़कें, शेष जल तुलसी के पौधे में डाल दें।

यदि सम्भव हो, तो अन्तिम दिन नौ कुमारी कन्याओं को भोजन कराकर उचित दक्षिणा प्रदान करें। नवरात्रि में साधक को पूर्ण स्वाध्याय के साथ साधना सम्पन्न करनी चाहिए। इस प्रकार नवरात्रि में की गई साधना का प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता ही है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 490/-

दुर्गा की आरती

ॐ जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी।।१।।
ॐ जय अम्बे...

मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोऊ नयना, चंद्रवदन नीको।।२।।
ॐ जय अम्बे...

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ।।३।।
ॐ जय अम्बे...

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर, नर, मुनिजन सेवत, तिनके दुःखहारी ।।४।।
ॐ जय अम्बे...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति।।५।।
ॐ जय अम्बे...

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती।।६।।
ॐ जय अम्बे...

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।।७।।
ॐ जय अम्बे...

तुम ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।८।।
ॐ जय अम्बे...

चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरु
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू।।९।।
ॐ जय अम्बे...

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहर्ता, सुख सम्पत्ति करता।।१०।।
ॐ जय अम्बे...

भुजा आठ अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।।११।।
ॐ जय अम्बे...

कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योति ।।१२।।
ॐ जय अम्बे...

श्री अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे ।।१३।।
ॐ जय अम्बे...

1. दरिद्रता का सम्पूर्ण रूप से समापन करें -

किसी भी त्यौहार को मनाने का सही अर्थ यही है कि सबसे पहले तो घर से दरिद्रता दूर की जाए एवं सुख-सौभाग्य के क्षण आएं। इसके बिना न तो पर्व का कोई अर्थ है और न ही आगे की किसी साधना का। इस वर्ष पर्व को सही रूप में उल्लासमय बनाने के लिए ही यह विशिष्ट प्रयोग सबसे पहले प्रस्तुत कर रहे हैं। इस प्रयोग में **लघु मोती शंख** लेकर इसी पर संक्षिप्त साधना करनी है।

होलाष्टक में किसी भी रात्रि को 8 से 10 बजे के मध्य लघु मोती शंख को केशर से पूरी तरह रंग कर पीले चावलों की ढेरी पर स्थापित कर **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र की केवल एक माला मंत्र जप करना है और मंत्र जप पूर्ण होने पर चावलों को सुरक्षित रख दें और होलिका दहन पर इन्हें होलिका की अग्नि में विसर्जित कर दें। यह प्रयोग अत्यंत ही तीक्ष्ण तथा सम्पूर्ण रूप से दरिद्रता का विनाश करने वाला है।

मंत्र

।।ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं।।

मंत्र जप के उपरांत माला और शंख को जल में विसर्जित कर देने का विधान है।

प्राण प्रतिष्ठा मोती शंख - 300/-, प्राण प्रतिष्ठा मूंगा माला - 300/-

✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤

2. रोग का निवारण आवश्यक है -

दरिद्रता नाश के साथ ही आरोग्यता पूर्ण जीवन प्राप्त करना साधक की दूसरी प्रमुख आवश्यकता है कि न तो साधक के शरीर में कोई बीमारी या क्षीणता रहे और न ही उसकी पत्नी और बच्चों के साथ किसी प्रकार की कोई शारीरिक बाधा हो। होली की रात्रि को एक **तांत्रोक्त नारियल** लेकर (परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए अलग-अलग तांत्रोक्त नारियल आवश्यक है) उसे सिन्दूर से पूरी तरह रंग लें और स्वयं के भी सिन्दूर से तिलक कर अपनी बीमारी बोलें तथा परिवार के लिए भी प्रयोग करने पर उनकी भी बाधाएं बोलकर, परिवार का मुखिया **मूंगे की माला** से एक माला निम्न मंत्र का जप करे, **इसमें अलग-अलग सदस्यों के लिए मंत्र जप आवश्यक नहीं है। एक माला मंत्र जप से ही प्रत्येक को पूर्ण प्रभाव प्राप्त हो जाता है।**

मंत्र

ॐ चित् पिंगल हन हन दह दह पच पच
सर्वज्ञा ज्ञापय स्वाहा।।

मंत्र जप के उपरांत माला और सभी तांत्रोक्त नारियलों को होलिका-दहन की रात्रि में ही जाकर अग्नि में समर्पित कर दें और लौट कर हाथ पांव धो लें। यह प्रत्येक जटिल एवं पीड़ाकारक व्याधियों का भी अचूक प्रयोग है।

प्राण प्रतिष्ठा तांत्रोक्त नारियल - 150/-, मूंगा माला - 300/-

✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤

3. तांत्रिक प्रयोगों का पलट कर वार हो -

समाज ऊपरी तौर पर भले ही सभ्य और आधुनिक कहा जाने लगा है लेकिन अंदर ही अंदर जिस प्रकार से तीव्र घात-प्रत्याघात चलते रहते हैं, उनके बाद तो यह आवश्यक है कि होली की रात्रि में ऐसा प्रयोग कर जहां एक ओर सुरक्षा-चक्र बना लिया जाए वहीं ऐसा प्रयोग करने से यदि कोई तांत्रिक प्रयोग, व्यापार बंध, बुद्धि-स्तम्भन, गर्भ बंधन जैसे काले प्रयोग करे या करवाए गए हों तो वे भी पलट कर विपक्षी के पास लौट जाते हैं।

होलाष्टक में किसी भी रात्रि को अथवा किसी भी रविवार को **दस तांत्रोक्त फलों** को लेकर भूमि पर रखें तथा प्रत्येक फल के आगे एक तेल का दीपक जला कर **काली हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ स्रां ॐ स्रीं ॐ स्रूं ॐ स्रः।

यह मंत्र जप एक ही रात्रि में पूर्ण हो जाना चाहिए। साधक दस बजे के बाद इस साधना में कभी भी बैठ सकता है और दूसरे दिन सुबह सभी तांत्रोक्त फलों को किसी सुनसान स्थान पर फेंक दें। इससे व्यापार बंध, स्तम्भन आदि प्रयोगों से मुक्ति मिल जाती है।

प्राण. तांत्रोक्त फल - 300/-, काली हकीक माला - 300/-

✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤

4. गृह-दोष, पितृ-दोष जीवन में अभिशाप है -

घर में अभिशप्त आत्माओं की उपस्थिति जीवन में ऐसा अभिशाप है जिससे पूरा का पूरा जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है और स्थिति यहां तक बिगड़ते देखी गई है कि पीड़ित व्यक्ति घबरा कर आत्महत्या करने की बात भी सोचने लगता है। ऐसे समस्त दोषों और पितृ दोषों की समाप्ति यदि पूर्ण रूप से संभव हो सकती है तो केवल विशेष तंत्र सिद्ध मुहूर्तों पर ही संभव है, अन्यथा इसका निवारण अत्यंत कठिन ही होता है। होलाष्टक की किसी भी रात्रि में यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। एक **भैरव गुटिका** को स्थापित कर उसका धूप, दीप, सिन्दूर व गुड़ के नैवेद्य से पूजन कर तथा उसी के ठीक बगल में एक **मधुरूपेण रुद्राक्ष** स्थापित कर उसके चारों ओर दस हकीक पत्थर स्थापित करें। मधुरूपेण रुद्राक्ष का पूजन केवल पुष्पों से कर सभी दस हकीक पत्थरों पर सिन्दूर का तिलक करें एवं **रुद्राक्ष माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्व
कर्माणि साधय स्वाहा वौषट्।।

मंत्र-जप करते समय तेल का दीपक लगा लें। यदि मंत्र-जप के मध्य आहट व फुसफुसाहट आरम्भ हो तो भयभीत न हों तथा मंत्र-जप करते रहें। मंत्र-जप के उपरांत भैरव गुटिका, मधुरूपेण रुद्राक्ष, रुद्राक्ष माला तथा शेष सामग्री को काले वस्त्र में बांध कर निर्जन स्थान पर विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा भैरव गुटिका - 150/-
प्राण प्रतिष्ठा मधुरुपेण रुद्राक्ष - 150/-
प्राण प्रतिष्ठा रुद्राक्ष माला - 300/-

✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤

5. शत्रु शांत होता ही है, इस प्रयोग से -

जीवन में सभी सुख हों किन्तु शत्रु-बाधा बनी रहे तो उससे अधिक दुःखदायी कुछ भी नहीं होता। हर समय आशंका बनी रहती है कि पता नहीं अगले पल क्या हो? प्रकट शत्रु से तो एक बार फिर भी निपटा जा सकता है लेकिन जहां कोई छिप कर वार करने की चेष्टा में हो तो वहां समस्या और भी अधिक गंभीर हो जाती है। वहां लड़ें भी तो किससे? ऐसी ही समस्याओं और विशेष कर पीठ-पीछे घात लगाकर, कुचक्र रचकर वार करने वालों के समापन के लिए होलाष्टक ही श्रेष्ठ तांत्रोक्त मुहूर्त है।

होलाष्टक में किसी भी रात्रि को विशेष रूप से मंत्र सिद्ध किया गया **शत्रु बाधा निवारण यंत्र** इस समस्या का सही उपाय है। रात्रि में दस बजे के बाद एकांत में बैठ लाल वस्त्र पहन कर अपने सामने **शत्रु बाधा निवारण यंत्र** स्थापित कर लें। यह यंत्र ताम्र पात्र पर अंकित अथवा ताबीज रूप में भी हो सकता है। इस पर लाल डोरा बांध, **हकीक अथवा मूंगा माला** से निम्न मंत्र की एक माला जप करें -

मंत्र

ॐ ह्रौं ग्लौं भगवति दण्डधारिणि अमुकं
अमुकं शीघ्रं रोधय रोधय भंजय भंजय श्रीं ह्रीं
राज्ये ॐ हुं हुं हुं

मंत्र-जप के उपरांत वहीं बैठे-बैठे पहले से लाकर रखी नीम की 108 पत्तियों से एक छोटे हवन-कुंड में अग्नि प्रज्वलित कर अपने प्रमुख शत्रु (या कई शत्रुओं और गुप्त शत्रुओं की दशा में **'समस्त ज्ञात-अज्ञात'** शत्रुओं) की बाधा-शांति का संकल्प कर उपरोक्त मंत्र से 108 आहुति दें। आहुति के पश्चात् प्रातः हवन-कुण्ड की राख, माला व यंत्र सभी कुछ होलिका-दहन में ले जाकर उपरोक्त मंत्र का एक बार उच्चारण करते हुए समर्पित कर दें तथा एक प्रदक्षिणा कर आनंदपूर्वक घर वापस आ जाएं। ऐसा करने से तीव्र से तीव्र शत्रु शांत होता है और कई बार तो दूसरे ही दिन वह क्षमायाचना या सुलह-समझौते जैसे स्वर में बात करने लग जाता है। यदि कोई आशंका हो, तब तो यह प्रयोग सुरक्षा-चक्र की भांति कर ही लेना चाहिए।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 490/-

6. अटूट लक्ष्मी का स्वागत कीजिए -

केवल दीपावली की रात्रि ही नहीं, होली की रात्रि भी समान रूप से चैतन्य और लक्ष्मी साधनाओं के लिए भी अनुकूल कही गई है। आपके मन में यदि कोई विशेष लक्ष्मी साधना करने की इच्छा हो तो उसके लिए दीपावली के पश्चात् यह एक श्रेष्ठ अवसर है अन्यथा होली के अवसर पर एक विशेष लक्ष्मी साधना भी वर्णित है उसे **'अटूट लक्ष्मी साधना'** की संज्ञा दी गई है।

इस साधना को सम्पन्न करने के बाद साधक को जीवन में कभी भी धन का अभाव नहीं देखना पड़ता। यदि दैवयोग से कोई स्रोत बंद भी हो जाए तो कोई न कोई दूसरा स्रोत अविलम्ब प्राप्त हो ही जाता है। साथ ही लक्ष्मी के समस्त स्वरूपों की प्राप्ति और जीवन में उनको चिरस्थायी बनाए रखने की भी यही साधना है। देश के कुछ उद्योगपति परिवारों की सम्पन्नता और ऐश्वर्य का रहस्य यही साधना है जिसे वे प्रतिवर्ष होली के अवसर पर करते ही हैं, भले ही कोई अन्य साधना न करें।

इस साधना में **लक्ष्मी प्राकाम्य** नामक एक समुद्री पदार्थ की आवश्यकता पड़ती है, जो देखने में शंख जैसा होता है। तांत्रोक्त लक्ष्मी साधनाओं में इसका प्रभाव आश्चर्यजनक माना गया है। इसे होली की रात्रि में ठीक अर्ध-रात्रि के समय पीले चावलों की ढेरी पर स्थापित कर पूर्ण रूप से लक्ष्मी मान, उसी प्रकार से पूजन कर, **कमलगट्टे की माला** से निम्न दुर्लभ मंत्र की एक माला मंत्र जप करना होता है।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रैलोक्य व्यापी ह्रीं श्रीं क्लीं
ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा॥

इस मंत्र जप के पश्चात् **लक्ष्मी प्राकाम्य** को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें तथा होलिका की पवित्र अग्नि में उपरोक्त मंत्र से कमलगट्टे की माला का एक-एक मनका तोड़ कर आहुति दे दें। अगले वर्ष जब यह साधना पुनः करें तो पहले का **लक्ष्मी प्राकाम्य** पवित्र नदी या सरोवर में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा लक्ष्मी प्राकाम्य - 210/-,
प्राण प्रतिष्ठा कमलगट्टे की माला - 300/-

7. सिद्धि प्रयोग -

यह एक ऐसा विलक्षण प्रयोग है जो होली की रात्रि में ही सिद्ध किया जा सकता है। **जहां-जहां होली की रात्रि का उल्लेख होता है वहां साधना की दृष्टि से अर्थ 'होलिका-दहन' की रात्रि से होता है, क्योंकि अगला दिन तो 'धुलंडी' के नाम से जाना जाता है।**

तांत्रिक इस विशेष रात्रि को जहां बहुत दिनों से सोचा गया कोई प्रयोग सम्पन्न करके सफलता प्राप्त करते हैं, वहीं एक प्रयोग ऐसा भी कर लेते हैं जिससे होली की इस चैतन्य रात्रि का प्रभाव आगे भी मिलता रहे। वे कुछ **सिद्धि फलों** को लेकर इसी रात्रि में इस प्रकार चैतन्य कर लेते हैं कि भविष्य में वे जिस भी साधना में साथ रखे जाएं, सफलता मिलती रहे। इसमें संख्या की कोई सीमा निर्धारित नहीं है फिर भी **एक बार में कम से कम पांच सिद्धि फलों को चैतन्य करना आवश्यक है,** जो भविष्य में पांच साधनाओं में सफलतादायक बन सकते हैं।

साधक होली की रात्रि में ग्यारह बजे के आसपास सभी सिद्ध फलों को पीला वस्त्र बिछाकर चावलों की ढेरी पर स्थापित कर **स्फटिक माला** से निम्न और सर्वथा दुर्लभ मंत्र की पांच माला मंत्र-जप करें। (अधिक सिद्धि फल होने पर उनकी संख्या के अनुरूप ही मालाओं की संख्या रहेगी।)

मंत्र

ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः सहस्रार हुं फट्।।

उपरोक्त मंत्र जप के उपरांत सभी सिद्धि फलों को एक डिब्बी में सुरक्षित बंद कर लें और भविष्य में उनको अलग-अलग साधनाओं में प्रयुक्त कर सकते हैं। **इस अवसर पर जिस स्फटिक माला से मंत्र जप हो, वह पहले किसी साधना में प्रयुक्त न हुई हो क्योंकि अप्रयुक्त माला ही उपरोक्त मंत्र के द्वारा स्वतः ही सिद्धि माला के रूप में परिवर्तित हो जाती है। मंत्र जप के पश्चात् स्फटिक माला को अपने गले में धारण कर लें और सवा माह पश्चात् जल में विसर्जित कर दें।**

प्राण प्रतिष्ठा पांच सिद्धि फल - 400/-,
प्राण प्रतिष्ठा स्फटिक माला - 300/-

✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤

8. जीवन में मधुरता लाइए, वशीकरण प्रयोग से -

होलाष्टक सम्मोहन वशीकरण, यक्षिणी साधनाओं, अप्सरा साधनाओं का विशेष तांत्रोक्त काल है और कोई भी प्रयोग सम्पन्न क्यों न किया जाए, सफलता मिलती ही है। फिर भी यदि इस तांत्रोक्त काल को विशेष ध्यान में रखकर कोई साधना सम्पन्न की जाए तो सफलता की संभावनाएं कई गुना बढ़ जाती हैं।

होली एक प्रकार से पूर्व वर्ष की विदाई और नववर्ष के स्वागत का अवसर है और ऐसे में प्रेम-सम्बन्धी, विवाह सम्बन्धी या दाम्पत्य जीवन में मधुरता घोलने की, आगामी वर्ष को रसमय बनाने की यही साधना कही गई है। यह केवल प्रेमी-प्रेमिका के सम्बन्धों को लेकर नहीं बल्कि विवाहित स्त्री-पुरुषों को भी ध्यान में रखकर ढूंढ़ी गई साधना है, जिससे उनके जीवन में नीरसता और जड़ता समाप्त हो सके।

इस साधना को होलाष्टक के किसी भी दिन सम्पन्न किया जा सकता है। साधना हेतु साधक पहले से एक **चित्रित** प्राप्त कर ले जो सम्मोहन मंत्रों से सिद्ध हो तथा **मूंगे की माला** भी प्राप्त कर लें। इस साधना में जिसको सम्मोहित करना है उसके नाम का संकल्प कर निम्न मंत्र की 3 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ कामाय क्लीं क्लीं कामिन्यै क्लीं।।

यदि विवाहित दम्पति में पति-पत्नी दोनों ही एक दूसरे के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर लें तो उनके जीवन में विशेष मधुरता आ जाती है। इसके लिए उन्हें अलग-अलग **दो चित्रित** प्राप्त करने होंगे, यद्यपि माला का संयुक्त रूप से प्रयोग कर सकते हैं।

दूसरे दिन **चित्रित एवं माला** को किसी आम या अशोक की जड़ में दबा दें। यह सम्मोहन-वशीकरण से भी अधिक मधुरता और प्रेम रस घोलने का सिद्ध सफल प्रयोग है।

प्राण प्रतिष्ठा चित्रित - 150/-,
प्राण प्रतिष्ठा मूंगा माला - 300/-

✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤ ✤

यह तो ध्रुव सत्य है कि व्यक्ति का पूर्वजन्म होता है और अपने एक जन्म में किए गए श्रेष्ठ-नेष्ठ कार्यों का भार उसे अगले जन्म में ले जाना ही होता है। कई बार मैं जब पीड़ा से युक्त व्यक्तियों को देखता हूं अथवा ऐसे व्यक्तियों को देखता हूं जो जीवन में प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं होते हैं, तो उसके कारण पूर्वजन्म कृत दोष ही प्रतीत होते है। जो आज किया उसका फल कल भुगतना ही है, ठीक उसी प्रकार पूर्वजन्म में किए गए दोषों का परिणाम इस जन्म में प्राप्त होता है। उसी प्रकार पूर्व में किए गए श्रेष्ठ कार्यों का सौभाग्य फल भी इस जीवन में प्राप्त होता है। ऐसा भी नहीं है कि आपने पूर्व जन्म में केवल दोष युक्त कार्य ही किए हैं लेकिन यदि इस जीवन में बार-बार बाधाएं आ रही हैं तो निश्चय ही इसका स्त्रोत पूर्वजन्म में ही है, जिसकी आपको जानकारी नहीं है। उन पूर्वजन्म कृत दोषों का शमन व्यक्ति स्वयं कर सकता है यदि उसके पास श्रेष्ठ गुरु हैं, ज्ञान है और साधना क्षमता है। आप में तो ये तीनों गुण विद्यमान हैं अतः होली की रात्रि में अवश्य सम्पन्न करें पूर्वजन्म कृत पाप शमन फेत्कारिणी साधना -

यह प्रयोग होली दहन की रात्रि को करें। स्नान आदि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर पीला वस्त्र पहनें तथा पीले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर बैठें। सर्वप्रथम दोनों हाथ जोड़कर भगवान गणपति का स्मरण करें तथा जोर से बोलकर अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए, पारिवारिक सुख के लिए निवेदन करें। इसके पश्चात् गुरु पूजन करके दो माला गुरु मंत्र का जप करें।

गणेश पूजन कुंकुम, पुष्प, अगरबत्ती, दीपक व प्रसाद आदि से करें, फिर अपने सामने साफ तांबे की प्लेट में फेत्कारिणी यंत्र को स्थापित करें। इस पर सिन्दूर की 7 बिन्दियां दाहिने हाथ की अनामिका से लगावें और फिर इसका पूजन उक्त सामग्री एवं पुष्प से करें। इसके पश्चात् दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प बोलें कि 'मैं (अपना नाम) यह प्रयोग गणपति, गुरु को साक्षी रख अपने समस्त दोष निवारण के लिए कर रहा हूं, वे दोष समाप्त हो जाएं और मेरी पुनः उन्नति आरम्भ हो।' यह कहकर जल को भूमि पर छोड़ दें। मूंगा माला से निम्नलिखित मंत्र की 11 माला जप करें।

मंत्र

॥ॐ क्लीं मम समस्त पूर्व दोषान् निवारणाय क्लीं फट् स्वाहा॥

मंत्र जप पूर्ण हो जाने पर फेत्कारिणी यंत्र को घर के सभी सदस्यों पर सात बार घुमा दें। उसके पश्चात् एक काले कपड़े में बांधकर किसी सूनसान स्थान पर डाल दें तथा पीछे मुड़कर नहीं देखें।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 450/-

होली की रात्रि को ही आपके घर में जो कुछ पुरानी प्रयोग की हुई साधना सामग्री है, जिस पर आप साधना-पूजन कर चुके हैं, वह साधना सामग्री एक लाल कपड़े में कुछ तिल और सरसों के साथ मिला दें, अब इस पर गांठ लगा दें और यह सभी सामग्री होलिका अग्नि में समर्पित कर दें।

15 मार्च 2026 – पापमोचिनी एकादशी

वाणी का पाप : सबसे मौन, सबसे घातक

स्वयं को छोटा मानना : मनुष्य का सबसे सूक्ष्म पाप

पाप का दण्ड : आत्म शांति का लोप

सोचकर देखिए, जब हम किसी बच्चे से कहते हैं – 'तुम मंदबुद्धि हो', 'तुम मूर्ख हो' तो क्या उस क्षण हम पाप नहीं कर रहे होते?

ऐसा कहकर हम उस बच्चे के आत्मविश्वास को गहरा आघात पहुंचाते हैं। परिणाम यह होता है कि बड़ा होकर वही बच्चा स्वयं पर विश्वास करने से कतराने लगता है। जीवन में जब-जब परीक्षा के क्षण आते हैं, उसके भीतर से एक ही स्वर उठता है – 'मैं इसके योग्य नहीं हूं..., मैं कुछ कर नहीं सकता...'

जिस बच्चे से हमने कभी क्रोध के क्षण में कह दिया था कि वह मंदबुद्धि है, वह शब्द उसके अंतरमन में जाकर लिपिबद्ध हो जाता है और उसके व्यक्तित्व को भीतर-भीतर गढ़ देता है। वह बच्चा, जो समाज में क्रांति का सूत्रपात कर सकता था, हीनता के दलदल में धंस जाता है। यह एक ऐसा पाप है जिसे हम बिना सोचे-समझे करते चले जाते हैं और उससे हम अवगत भी नहीं होते।

तथाकथित धर्म ने मानो हमारी आंखों पर पट्टी बांध दी है। उसने हमें यह बताया है कि धर्म के विरुद्ध जाना ही पाप है। धर्म का अर्थ हमें सिखाया गया सत्य भाषण, अपरिग्रह का अनुसरण और उदारता का अनुगमन। इसलिए हमने यह मान लिया कि असत्य भाषण पाप है, चोरी करना पाप है, अनाचार पाप है, परस्त्रीगमन पाप है।

परन्तु पाप को जानने के लिए केवल इतना ज्ञान पर्याप्त नहीं है। क्योंकि **दूसरों पर पाप करने से बहुत पहले मनुष्य स्वयं पर पाप करता है। वह अपने ही मन पर छुरा चलाता है, अपने ही मन की प्रसन्नता का अपहरण करता है और यही पाप का सबसे व्यापक और प्रचलित रूप है।**

आज प्रत्येक अध्यात्म मार्गी यह समझ चुका है कि हम उस परमात्मा से अलग नहीं हैं। हमारे भीतर भी उसी का प्रकाश है, वही हमारा वास्तविक सत्य है। परमात्मा स्वयं को हमारे चित्त में जो चिंतन का भी स्थान है उस रूप में अभिव्यक्त करता है। इसलिए जब जीवन में समस्याएं आती हैं, तो लोग चिंता करने लगते हैं, क्योंकि उन्होंने चिंतन और चिंता को एक ही मान लिया है।

वास्तव में चिंता और चिंतन एक नहीं हैं। **चिंतन में हम जीवन के सत्य को समझने का प्रयास करते हैं और चिंता में हम अपने भय को यथार्थ में बदलने का दुष्प्रयास करते हैं। सत्य तो यह है कि जैसा हम सोचते हैं, वैसे ही हम बन जाते हैं। चिंता हमारे चिंतन को विकृत कर देती है और उसका परिणाम यह होता है कि हम स्वयं को दूसरों से अयोग्य, तुच्छ और कमतर समझने लगते हैं।**

फिर क्या होता है? हम अपने स्वप्नों को उड़ान देने से डरने लगते हैं, अपने ही मन को निरंतर कुचलते रहते हैं। यही मानवता की सबसे बड़ी भूल है। मनुष्य ने अपने ही मूल्य को नकार दिया है। उसने स्वयं को छोटा मान लिया है और यहीं से सभी मानसिक विकारों का जन्म होता है अवसाद, हीनभाव, भय और असंतोष। इन सबका मूल यहीं छिपा है।

वास्तव में हमारी अधिकांश अप्रसन्नता का कारण संसार नहीं है हम स्वयं हैं। प्राचीन काल के महान चिंतक अष्टावक्र भी इसी सत्य का समर्थन करते हैं। वे कहते हैं –

'यथा मति तथा गति।'

अर्थात् **जैसी हमारी मान्यता है, हमारी सोच है, वैसी ही हमारी गति हो जाती है। मनुष्य बंधन में है या मुक्त, यह उसके कर्म से अधिक उसके चिंतन पर निर्भर करता है।**

यदि मनुष्य स्वयं को तुच्छ मानता है,

यदि वह स्वयं को अयोग्य समझता है,

यदि वह अपने अस्तित्व को संदेह की दृष्टि से देखता है, तो वह किसी और का नहीं, स्वयं का अपमान कर रहा है।

और अष्टावक्र की दृष्टि में यही सबसे बड़ा पाप है। क्योंकि **आत्मा न पापी है, न पुण्यात्मा। पाप तब जन्म लेता है जब व्यक्ति पूर्ण प्रयास किये बिना ही, पूर्ण सामर्थ्य के साथ प्रयास किये बिना ही स्वयं को असामर्थ्यवान, कमजोर, तुच्छ मान लेता है अर्थात् स्वयं पर अविश्वास करना , खुद पर किया गया पाप है।** अष्टावक्र स्पष्ट कहते हैं

'तू शुद्ध है, बुद्ध है, मुक्त है।'

अब सोचिए, यदि कोई व्यक्ति स्वयं को ही अशुद्ध माने, स्वयं को ही अयोग्य माने, स्वयं को ही तुच्छ माने तो क्या वह सत्य में स्थित है? नहीं।

और असत्य में स्थित होना ही धर्म से विचलन है। यही कारण है कि अष्टावक्र गीता में पाप का अर्थ चोरी, हिंसा या असत्य नहीं है। **पाप का अर्थ है, स्वयं को न जानना।**

जब हम स्वयं से कहते हैं, **'मैं योग्य नहीं हूं...', तो हम अपने भीतर बैठे साक्षी का अपमान करते हैं।**

अष्टावक्र की दृष्टि में यह अज्ञान है और अज्ञान ही सबसे बड़ा पाप है। इसलिए अष्टावक्र गीता हमें सुधारने नहीं, जगाने आई है। वह कहती है **तुम्हें अच्छा बनने की आवश्यकता नहीं है, तुम्हें स्वयं को जानने की आवश्यकता है।**

क्योंकि जिस दिन मनुष्य स्वयं को जान लेता है, उस दिन उसके जीवन से पाप अपने-आप विदा हो जाता है।

15 मार्च 2026 - पापमोचिनी एकादशी

पापांकुशा साधना

पाप अपराध नहीं : आत्मविस्मृति

केवल कर्म ही नहीं, वाणी और विचार भी पाप के कारण हैं...

पापांकुशा साधना वह आध्यात्मिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से साधक अपने जीवन में संचित पापों, दोषों, विकारों और नकारात्मक संस्कारों पर अंकुश लगाता है। अंकुश का अर्थ है नियंत्रण। यह साधना मन, इंद्रियों और चित्त को नियंत्रित करने की विद्या है।

मानव जीवन में पाप केवल कर्म से ही नहीं, बल्कि विचार, वाणी और भाव से भी उत्पन्न होते हैं। अनियंत्रित इच्छा, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार, ये सभी पाप के सूक्ष्म रूप हैं। पापांकुशा साधना का उद्देश्य इन विकारों को दबाना नहीं, बल्कि उन्हें पहचानकर रूपांतरित करना है।

इस साधना के माध्यम से साधक आत्मनिरीक्षण करता है, अपने भीतर छिपी दुर्बलताओं को स्वीकार करता है और गुरु-कृपा तथा मंत्र-साधना के बल पर उन्हें शुद्ध करता है। यह साधना व्यक्ति को आत्मग्लानि से नहीं, आत्मबोध से जोड़ती है। यहां दंड नहीं, प्रायश्चित है; भय नहीं, विवेक है।

पापांकुशा साधना का फल केवल पाप-क्षय नहीं, बल्कि चेतना की निर्मलता है। जब चित्त शुद्ध होता है, तब साधक के जीवन में स्वतः धर्म, करुणा और संतुलन प्रकट होने लगते हैं। यही साधना का वास्तविक लक्ष्य है भीतर के अराजक मन को साधकर उसे धर्म के मार्ग पर अग्रसर करना।

15 मार्च 2026 चैत्र कृष्ण पक्ष एकादशी - **पाप मोचिनी एकादशी** है। इस दिन पापांकुशा साधना सम्पन्न करने का श्रेष्ठ मुहूर्त है। अथवा **किसी भी शनिवार** को यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना विधान

1. साधकों को **पापमोचिनी माला, पापांकुशा गुटिका, पाप निवारण यंत्र** आदि सामग्रियां पहले से ही प्राप्त कर लेनी चाहिए।
2. **पापमचिनी एकादशी या किसी भी पक्ष की एकादशी अथवा किसी भी शनिवार** के दिन इस शमन साधना को सम्पन्न कर सकते है।
3. सांयकालीन साधना में साधक साधना से पूर्व स्नान आदि से निवृत्त होकर पीली धोती पहनें और गुरु चादर ओढ़कर पीले आसन पर बैठ जाएं।
4. **पश्चिम दिशा** की ओर मुंह करके बैठें।
5. अपने सामने चौकी पर एक पीला वस्त्र बिछाकर गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र अथवा पादुका स्थापित करें। पापों का त्राण गुरुदेव निखिल के आशीर्वाद के बिना संभव ही नहीं है। सर्वप्रथम दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव निखिल का ध्यान करें -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

6. निखिल ध्यान के पश्चात् गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/ पादुका को जल से स्नान करावें -

ॐ निखिलम् स्नानम् समर्पयामि।।

7. इसके पश्चात् स्वच्छ वस्त्र से पौंछ लें निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए कुंकुम, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप-दीप से पंचोपचार पूजन करें -

ॐ निखिलम् कुंकुम समर्पयामि।
ॐ निखिलम् अक्षतान समर्पयामि।
ॐ निखिलम् पुष्पम् समर्पयामि।
ॐ निखिलम् नैवेद्यम् निवेदयामि।
ॐ निखिलम् धूपम् आघ्रापयामि, दीपम् दर्शयामि।

(धूप, दीप दिखाएं)

8. पंचोपचार पूजन के पश्चात् तीन आचमनी जल गुरु चित्र पर घुमाकर छोड़ दें। इसके पश्चात् गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

9. गुरु पूजन के पश्चात् मूल साधना-पूजन निम्न प्रकार सम्पन्न करें। इसी बाजोट पर एक प्लेट या थाली में **'पाप निवारण यंत्र'** को स्थापित कर दें।
10. इसके पश्चात् यंत्र को जल से स्नान कराकर, पौंछ लें और यंत्र पर कुंकुम से तिलक करें।
11. **'पापाकुंशा गुटिका'** को भी यंत्र के सामने स्थापित कर दें और उसका भी कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें।
12. फिर धूप और दीप दिखाकर यंत्र और गुटिका का पूजन सम्पन्न करें।
13. साधक आसन पर खड़े होकर के **'ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं'** मंत्र का क्रमशः पश्चिम, उत्तर, पूर्व और दक्षिण चारों दिशाओं की ओर मुख करके **'पापमोचिनी माला'** से एक-एक माला मंत्र जप सम्पन्न करें।
14. चारों दिशाओं में मंत्र जप के पश्चात् प्रारम्भिक अवस्था अर्थात् पश्चिम की ओर मुख करके, आसन पर बैठकर मूल मंत्र की 11 माला मंत्र जप **'पापमोचिनी माला'** से करें -

मंत्र

ॐ सर्व पापनाशाय ह्रां ह्रीं नमः ।

15. मूल मंत्र जप के पश्चात् गुरु कृपा हेतु पुनः एक माला **गुरु मंत्र** का जप करें।
16. जप समाप्ति के बाद समस्त सामग्री को दूसरे दिन किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें तथा वापिस घर की ओर लौटते समय मुड़कर नहीं देखें।
17. फिर घर आकर, हाथ-पैर धोकर तीन बार आचमन करें।

इस साधना से निश्चय ही साधक के दोष, चाहे वह इस जन्म के हों या किसी ओर जन्म के समाप्त होंगे ही। इस साधना के बाद साधक ऐसा अनुभव करेगा कि मेरा यह कार्य सफल एवं निश्चित फलदायी रहा है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौछावर - 700/-

15 मार्च 2026 – पापमोचिनी एकादशी

शमन महादीक्षा

'शमन दीक्षा' जीवन की परम आवश्यक दीक्षा है। शमन का तात्पर्य है, शरीर में स्थित विकारों का नाश। विकार का अर्थ है जीवन के दोष, वे चाहे इस जन्म के हों अथवा पूर्व जन्मों के, क्योंकि पूर्वजन्मों में किये गये कृत्यों का प्रभाव इस जीवन (जन्म) पर भी पड़ता है।

शमन अर्थात् समाप्त करना और समाप्त करना है उन दोषों को, जिन दोषों ने जीवन को जीर्ण क्षीण कर दिया है। इस जीवन के अज्ञान का शमन हो अथवा पूर्वजन्मों के दोषों का शमन हो, उसका एकमात्र उपाय है गुरुदेव से शमन दीक्षा प्राप्त करना।

रुद्रयामल तंत्र' के अनुसार जो साधक अपने गुरु के पास जाकर पूर्ण सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं,उन्हें गुरु मंत्र जप द्वारा अपनी आत्मशुद्धि कर शमन दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए, इस दीक्षा का स्वरूप अत्यन्त ही उपयोगी और प्रभावकारी है, यह तो आगे बढ़ने की दिशा में पहला प्रयास है।

शमन दीक्षा एक ऐसी तीव्र चमत्कारी अग्नि है जो आपके जीवन में एक बार प्रज्वलित हो जाने पर अग्निशिखा बन पूरी देह, मानस में व्याप्त हो जाती है। जब एक बार शुद्धिकरण और शमन की यह क्रिया प्रारम्भ हो जाती है तो जीवन के समस्त दोषों को समाप्त कर देती है।

यह दीक्षा साधारण दीक्षा नहीं है, जब इस दीक्षा द्वारा इष्ट देव और गुरुदेव के ध्यान में चित्त तन्मय हो जाता है, और दीक्षा द्वारा उनकी कृपा प्राप्त होती है। जब शिष्य के भाग्य का उदय होता है और उसमें समर्पण की भावना आती है, तब जाकर उसे गुरु कृपा कर यह महान् दीक्षा प्रदान करते हैं। इस दीक्षा से पहले यह आवश्यक है कि शिष्य साधना के पथ पर आगे बढ़ता रहे। इस सम्बन्ध में आवश्यक पूर्व-जन्मकृत दोष निवारण साधना (पापांकुशा साधना) भी अवश्य सम्पन्न करें। जब शिष्य गुरु के सम्मुख उपस्थित होता है अथवा निवेदन करता है तो सद्गुरु उसे शक्तिपात के माध्यम से शमन दीक्षा प्रदान करते हैं। इसी के पश्चात् शिष्य को साधनाओं में सफलताएं प्राप्त हो सकती हैं।

विशेष –

- **शमन दीक्षा से 'पूर्व जन्म' के दोषों का क्षय होता है। शमन दीक्षा से मन पर छाई असुरक्षा, अशांति और क्लेश का निवारण होता है।**
- **शमन दीक्षा से मन की शक्ति तीव्र हो जाती है।**
- **साधक स्वयं शक्तिवान हो जाता है।**
- **पूर्वजन्मकृत पापदोषों के शमन से अध्यात्मिक और भौतिक जीवन की बाधाएं समाप्त होती है।**
- **शमन दीक्षा तीन चरणों की दीक्षा है। आप यह तीन चरण की दीक्षा बारी-बारी से अथवा एक साथ भी ग्रहण कर सकते हैं। इस क्रिया में दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् विशिष्ट दीक्षा मंत्र का जप अनिवार्य है। आपने जिस चरण की दीक्षा प्राप्त की है, उसी चरण के दीक्षा मंत्र का, बताए गए निर्देशानुसार, जप करें अथवा यदि आपने तीनों चरणों की दीक्षा एक साथ ग्रहण की है तो तीनों चरणों के बताए गए मंत्रों का निर्देशानुसार जप करें।**

प्रथम चरण दीक्षा मंत्र

ॐ परमशिव सुषुम्नापथेन मूलश्रृंगाटक उल्लस उल्लस ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल सोऽहं हंसः स्वाहा।।

द्वितीय चरण दीक्षा मंत्र

ॐ यं लिंगशरीरं शोषय शोषय स्वाहा।।

तृतीय चरण दीक्षा मंत्र

ॐ ह्रीं वैष्णवै प्रतिष्ठा कमलात्मनै हुं नमः

शमन महादीक्षा न्यौ. (प्रति चरण) – 3100/-

तंत्र विद्या क्या है?

तंत्र विद्या मनुष्य के कर्म को उसकी चेतना और उत्तरदायित्व से जोड़ती है...

कलियुग में तंत्र विद्या, सतयुग की वैदिक उपासना के समान फल देती है...

तंत्र का अर्थ है - तन के अन्दर झांकने की प्रक्रिया, जिससे मानव जीवन में ऊर्ध्वगामी हो सकने की क्षमता प्राप्त कर सके।

तंत्र का अभिप्राय है - **एक विस्फोटात्मक ऊर्जा का प्रादुर्भाव, जिससे सूक्ष्म शरीर में स्थित सुप्त प्राण-शक्ति का ऊर्ध्वगामी विकास तेजी से हो सके, ताकि तीव्र क्रिया शक्ति का जागरण हो सके।**

सीधे-सीधे शब्दों में कहा जाय तो **तंत्र वह क्रिया है, जिसमें स्वस्थ तन, स्वस्थ मन, स्वस्थ बुद्धि तथा स्वस्थ विवेक का पूर्ण समायोजन होकर एक दिशा में गतिशील हो।** जीवन में जिसे एक लगन लग जाना कहते हैं, कि मैं अपने जीवन में यह प्राप्त करके ही रहूंगा, तो वह एक प्रकार से तांत्रिक क्रिया कर रहा है, क्योंकि तंत्र मनुष्य की त्रुटियों, समस्याओं और कुन्ठाओं से मुक्त करता है, तंत्र मानसिक, शारीरिक और संवेदनात्मक रूप को संतुलित करता है, तो फिर तंत्र को क्यों नहीं अपनाएं क्योंकि तंत्र जीवन की श्रेष्ठत्तम विद्या है, लेकिन तंत्र में सर्वाधिक प्रयोग मंत्र का होता है।

तंत्र प्रकृति और ब्रह्माण्ड में सामंजस्य स्थापित करने की क्रिया है। **प्रकृति अर्थात् शक्ति और ब्रह्माण्ड जो शिव हैं।** इन्हीं दोनों का संयोग तो सृष्टि है, तभी तो शक्ति तंत्र की विधाओं के विषय में शिव से प्रश्न करती है।

कलियुग में तंत्र विद्या, तंत्र साधना की विशेष महिमा है, तंत्र एक जांचे-परखे मार्ग द्वारा ब्रह्म, परमात्मा की खोज का मार्ग है।

वास्तव में सफलता का, लक्ष्य प्राप्ति का सीधा सम्बन्ध उसकी प्राप्ति में हुए प्रयास, विफलताए, बाधाएं, परेशानियां और सर्वाधिक जूझने की शक्ति से ही है। तंत्र वास्तव में सफलता, लक्ष्य सिद्धि की गारण्टी है, तंत्र व्यक्ति की शक्तियों, क्रियाओं में सन्तुलन स्थापित करता है।

तंत्रः शिव और शक्ति कृपा स्वरूप

दरअसल, तंत्र का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम शिव और शक्ति के मध्य संवाद है। शक्ति जो शिव की प्रिया हैं, उनसे प्रश्न करती हैं और शिव उसके उत्तर में एक विधि बताते हैं। यहां शक्ति शिष्य की भूमिका में नजर आती हैं, क्योंकि उनमें

जिस प्रकार प्रकाश का ज्ञान शब्दों से नहीं, दृष्टि से होता है, उसी प्रकार आत्म-तत्व का ज्ञान तर्क से नहीं, साधना से होता है...

तंत्र मनुष्य की आंखों से अज्ञान का आवरण हटाता है और उसे उसके ही भीतर स्थित सत्य से परिचित कराता है...

तंत्र के मार्ग में विवाद नहीं या प्रतिरोध नहीं होते है..., केवल स्वीकार्यता होती है।

शिव की भांति तंत्र भी 'जो है' उसे वैसा ही स्वीकार करता है, बिना किसी सजावट, बिना किसी अस्वीकार्यता के...

तंत्र की वास्तविक सिद्धि किसी को पराजित करने में नहीं, स्वयं पर विजय पाने में है...

जो व्यक्ति स्वार्थ, भय या अहंकार से प्रेरित होकर तंत्र शक्ति का प्रयोग करता है, वह तंत्र के मर्म को तो समझता ही नहीं है...

तंत्र में प्रत्येक क्रिया का प्रभाव पहले कर्ता पर पड़ता है। यह विद्या उतनी ही सूक्ष्म है जितनी गहरी...;

और उतनी ही उत्तरदायित्वपूर्ण है जितनी शक्तिशाली...

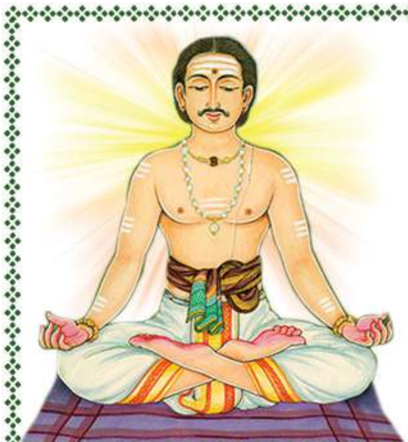

सच को जानने की छटपटाहट है। शक्ति पूछती हैं, प्रभु आपका सत्य क्या है, और शिव तरीका बताते हैं, उस सत्य को जानने, उसे समझने का, उसे आत्मसात करने का।

जरा समझिए, आप किसी अंधे व्यक्ति को प्रकाश (रोशनी) के विषय में दसियों बातें समझा दीजिए, उसे कुछ भी समझ नहीं आएगा पर आप उसे आंखें दे दीजिए, और वह स्वयं रोशनी से साक्षात्कार कर लेगा।

तंत्र आपकी आखों से अज्ञान का पर्दा हटाता है, और आपको वह जांचा-परखा मार्ग बताता है, जिसके द्वारा कार्य सिद्ध होंगे। कोई प्रश्न नहीं, कोई विवाद नहीं, शिव की तरह तंत्र जो है, जैसा है, उसे उसी रूप में स्वीकार कर लेता है।

कलियुग में तंत्र साधना की विशेष महिमा है। शक्ति ने शिव से प्रश्न किया कि कलियुग में मनुष्य अपने पापों का नाश कैसे करेगा? महादेव का उत्तर था कि कलियुग में तंत्र साधना ही सतयुग की वैदिक पूजा की तरह फल देगी। तंत्र एक जांचे-परखे मार्ग द्वारा उस ब्रह्म, उस परमात्मा के खोज की प्रक्रिया है, जिसमें साधनात्मक प्रयोग निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

तांत्रिक प्रयोग - मुख्य कारण

तांत्रिक प्रयोग सरल नहीं है, किन्तु आजकल छोटे-मोटे टुच्चे किस्म के कई तांत्रिक बन गये हैं, जो किसी का हित तो कर नहीं पाते, पर दूसरों को नुकसान अवश्य पहुंचा देते हैं।

कुछ विशेष वर्ग के लोगों ने इस प्रकार के छोटे-मोटे तांत्रिक प्रयोग सीख लिए हैं और वे दूसरों के द्वारा पैसा मिलने पर इस प्रकार का प्रयोग कर देते हैं, इसके कारण सामने वाले की भरी-पूरी गृहस्थी बरबाद होकर रह जाती है।

विशेष बात यह है कि कोई व्यक्ति स्वार्थ वश किसी के विरुद्ध तंत्र प्रयोग करता है तो चाहे भले ही एक बार सामने वाले को नुकसान पहुंचा दे, लेकिन अंततः उसे स्वयं भी घोर हानि, पीड़ा उठानी ही पड़ती है।

यह तो वैसी बात हुई, कि किसी व्यक्ति को चाकू से सब्जी, फल काटने की कला मालूम है जबकि एक अज्ञानी भी चाकू से सब्जी, फल काट सकता है परन्तु उसमें उसके स्वयं के घाव लगने का डर रहता है और यदि शरीर पर घाव लग जाये तो कटे हुए स्थान की चिकित्सा करने की आवश्यकता होती है अन्यथा घाव सड़ सकता है, नुकसान हो सकता है और कभी-कभी लापरवाही में बड़ी हानि भी हो सकती है।

इसका तात्पर्य यह हुआ है कि घाव लगने में एक क्षण का समय लगता है परन्तु जो घाव होता है, उसको ठीक करने में लम्बा समय लग सकता है।

ठीक यही बात तांत्रिक प्रभाव की है। तांत्रिक प्रयोग कोई भी कर सकता है, परन्तु उसके परिणाम व्यक्ति को गहराई के साथ भोगने पड़ते हैं, और एक प्रकार से देखा जाए, तो पूरी जिन्दगी अस्त-व्यस्त हो जाती है। हमला करने या तांत्रिक प्रयोग कराने की विद्या सीखने में बहुत ज्यादा साधना की जरूरत नहीं होती, परन्तु तांत्रिक प्रयोग यदि हो गया है, तो उसे दूर करने के लिए कठिन साधना, सिद्धि या अनुभवी व्यक्ति की जरूरत होती ही है।

क्योंकि तांत्रिक प्रयोग हो जाने की स्थिति में उसको दूर करना विशेष विद्वान या जानकार के द्वारा ही संभव है और तांत्रिक प्रयोग हो जाने की स्थिति में उसको दूर करने के लिए यह जानना आवश्यक होता है, कि विद्याओं में से कौन

सा तांत्रिक प्रयोग हुआ है और किस प्रयोग से वह तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो सकता है। इसके लिए तंत्र बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करना एक श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण उपाय है।

तांत्रिक बाधा के संभावित परिणाम

दैनिक जीवन में घटने वाली घटनाओं से हम आसानी से मालूम कर सकते हैं, कि हम पर तांत्रिक प्रयोग हुआ है कि नहीं। यद्यपि दूसरे परिणाम भी हो सकते हैं, किन्तु यदि जीवन के सहज प्रवाह में अवरोध उत्पन्न होने लग जाएं, तो तंत्र प्रयोग की संभावना ही अधिक होती है।

यहां पर कुछ तथ्य दिये जा रहे हैं जिनके माध्यम से आप यह जान सकते हैं, कि तांत्रिक प्रयोग है या नहीं -

1. यदि स्वयं बीमार रहें, तबीयत ठीक नहीं रहे और इलाज कराने पर भी उसका परिणाम प्रतीत न हो, तो समझ लेना चाहिये, कि आप पर तंत्र प्रयोग हुआ है।
2. यदि आप हर समय चिन्ताग्रस्त रहते हैं या मन हर समय विचलित रहता है, तो समझना चाहिए, कि जरूर किसी ने आप पर तांत्रिक प्रयोग करवाया है।
3. यदि विवाह के कुछ वर्ष बीतने पर भी संतान नहीं हो रही हो और मेडिकल रिपोर्ट सही आ रही हो, तो यह समझ लेना चाहिए, कि किसी ने गर्भ बांध दिया है।
4. यदि आपने मकान बनाया है और उसके बाद बराबर कोई न कोई विपत्ति या परेशानी आती है तो समझ लेना चाहिए कि इसका कारण तांत्रिक प्रयोग ही है।
5. यदि आपका मनोबल समाप्त हो गया है, आप स्वयं को कमजोर महसूस करते है, जीवन को जीने का उत्साह खत्म हो गया हो, उन्नति की इच्छा ही मर गई हो, तो यह तांत्रिक प्रयोग का ही प्रभाव है।
6. यदि भाई-भाई में अकारण शत्रुता बढ़ गई हो और प्रयत्न करने पर भी समझौता नहीं हो अथवा एक दूसरे के प्रति व्यर्थ के मतभेद बढ़ते जा रहे हों, तो यह तांत्रिक प्रयोग का ही प्रभाव है।
7. यदि जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा पार करने के बावजूद भी आपका मकान नहीं बन रहा हो या कोई नई जमीन नहीं खरीद पा रहे हों या मकान अधूरा रह रहा हो, तो निश्चय ही **'गृह बंधन प्रयोग'** है, जिसकी वजह से यह परेशानी आपको उठानी पड़ रही है।

तंत्र मन की चंचलता, बुद्धि की अस्थिरता और इन्द्रियों के बिखराव को एक दिशा में समाहित करता है....

तंत्र तो संतुलन की विद्या है...

और जहां संतुलन, वहां सृजन होगा...

और जहां असंतुलन, वहां विकार...

8. यदि संतान का शारीरिक और बौद्धिक विकास भली प्रकार से नहीं हो रहा हो, तो इसका कारण तांत्रिक प्रयोग हो सकता है।
9. यदि आपके जीवन में अकारण शत्रु बनते जा रहे हों, आप जिसकी भी भलाई करें, वही शत्रु बन जाय या आपको हानि पहुंचाने की कोशिश करे, तो इसका सीधा-सादा तात्पर्य तांत्रिक प्रयोग ही है।
10. यदि पति-पत्नी में मतभेद हो, घर में कलह का वातावरण हो, तो यह कलह तंत्र प्रयोग है।
11. यदि प्रयत्न करने के बावजूद भी आपके कार्य सफल नहीं हो रहे हों, जो काम दूसरों से आसानी से हो जाते हैं पर आप आसानी से वह काम नहीं कर पाते है, तो तांत्रिक प्रयोग के अलावा और कोई कारण नहीं हो सकता।
12. यदि जीवन का बहुत बड़ा भाग व्यतीत करने पर भी आपका भाग्योदय नहीं हो रहा हो और हर क्षण बाधाएं आ रही हों, जो उन्नति होनी चाहिए वह नहीं हो रही हो, तो इसका तात्पर्य भाग्य बंधन अथवा इसी तरह का कोई तांत्रिक प्रयोग समझना चाहिये।
13. यदि आपके साधन कमजोर हो गये हों, प्रयत्न और परिश्रम के बावजूद भी लक्ष्मी-आगमन नहीं हो रहा हो, ग्राहक नहीं आते हों, लक्ष्मी की वृद्धि नहीं हो रही हो, व्यापार कमजोर पड़ गया हो, तो यह तांत्रिक प्रयोग के कारण से ही हो सकता है।

उक्त बिन्दुओं के आधार पर यह आसानी से जान सकते हैं कि हम वर्तमान परेशानी किस कारण से भुगत रहे हैं और इसका एकमात्र उपाय तंत्र बाधा का निवारण करने से ही संभव है।

जीवन में यदि बिना स्पष्ट कारण के ☆ स्वास्थ्य बिगड़ता जाए, ☆ मन निरन्तर विचलित रहे, ☆ प्रयत्न निष्फल होते जाएं, ☆ संबंध टूटने लगें, ☆ उन्नति का मार्ग बार-बार अवरुद्ध हो...

तो यह केवल संयोग नहीं होता...

यह सत्य है कि हर समस्या तंत्र के कारण नहीं परन्तु जब जीवन का सहज प्रवाह रुक जाए, तब कारण सूक्ष्म स्तर पर भी खोजे जाने चाहिए...

तंत्र बाधा का निवारण डर से नहीं... ज्ञान, साधना और सही मार्गदर्शन से होता है...

तंत्र बाधा निवारण दीक्षा

तंत्र तो जीवन निर्माण की प्रक्रिया है, लेकिन जब इसका दुरुपयोग होने लगता है तो सीधे साधे आदमी का जीवन कष्टमय बन जाता है उस स्थिति में एक ही उपाय है, समर्थ गुरु से 'तंत्र बाधा निवारण दीक्षा' प्राप्त करें -

तंत्र प्रकृति और ब्रह्माण्ड में सामंजस्य स्थापित करने की क्रिया है, यह मनुष्य के भीतर स्थित ऊर्जा को जाग्रत करने का मार्ग है।

वास्तव में तंत्र तो भय के पार जाने की क्रिया है, जिसके मूल में विश्वास और समर्पण है तंत्र में संशय को लेश मात्र भी स्थान नहीं है। तंत्र जीवन में नवीन ऊर्जा का संचार करता है, बस आप गुरु के शरणागत हो जाएं और विश्वास के साथ गुरुदेव से तंत्र बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त कर साधना मार्ग में आगे बढ़ें।

☆ तंत्र बाधा निवारण दीक्षा से शारीरिक और मानसिक बाधाओं का निवारण होता है। रोग, शोक, दुःख, आधि-व्याधि सब का नाश होता है। ☆ कैसा भी विरुद्ध तंत्र किया हो, तंत्र बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करने से तंत्र बाधा समाप्त होती है। ☆ शत्रु बाधा, कोर्ट-कचहरी का भय, कारोबार की समस्या, आर्थिक समस्या इन सब का निराकरण तंत्र बाधा निवारण दीक्षा द्वारा संभव है। ☆ किसी भी दीर्घकालीन समस्या का एक ही निवारण है सद्गुरुदेव से तंत्र बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करना।

शिष्य गुरु से व्यक्तिगत भेंट कर तंत्र बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करे, यदि यह संभव नहीं हो पाता तो ऐसे शिष्य फोटो के माध्यम से भी दीक्षा प्राप्त कर सकते है। वस्तुतः तंत्र-बाधा-निवारण दीक्षा सात चरण में प्राप्त होना इस कठिनाई के युग में एक वरदान से भी उच्च स्थिति है। यह परम पूज्य गुरुदेव की हम पर कृपा दृष्टि है।

तंत्र बाधा निवारण दीक्षा (प्रति चरण) - 3100/-

जीवन संधिकाल में परिवर्तन अवसर है...
तीव्र परिवर्तन के युग में जीवन-संयम...
मनुष्य को रूपांतरित होने की शक्ति देती है...

नचिकेता अग्नि विद्या

संसार में सबसे चिरंजीवी मनुष्य का स्वभाव है। संवत्सर, वर्ष, काल, बदलते रहते है लेकिन मनुष्य का स्वभाव युगों-युगों पहले था वैसा ही आज भी है। दान की प्रवृति में पहले भी दिखावा बहुत था और आज भी है। श्रेष्ठ दान वह है जो समाज के लिये उपयोगी, सार्थक और उन्नति प्रदायक हो।

इस सम्बन्ध में कठोपनिषद् में उद्दालक यज्ञ और उनके पश्चात उनके पुत्र नचिकेता और यम का संवाद बहुत महत्वपूर्ण है। मानव समाज की गहराईयों को प्रकट करते इस संवाद को प्रत्येक साधक समझे और चिन्तन करें कि उसका स्वभाव किस दिशा में जाना चाहिये। जो आज बाजार में जाकर किसी पूजा पर्व के समय यजमान पंडित जी के वस्त्रों का नाम लेकर दुकानदार को यह बताया जाता है कि उसे किस प्रकार के वस्त्र चाहिए और फिर अत्यन्त निम्न कोटि के वस्त्रों को दान के नाम पर दे दिया जाता है। वह वास्तव में केवल दान का स्वांग होता है। यह कोई आज की बात नहीं है।

महर्षि उद्दालक को मुक्ति की कामना हुई। उन्होंने अपना सम्पूर्ण धनधान्य दान कर देने का संकल्प लिया। उनका नचिकेता नाम का एक पुत्र था। **'नचिकेता' का शाब्दिक अर्थ है जो नहीं जानता, जिज्ञासु।**

नचिकेता अभी बालक ही था, किन्तु उसने देखा कि **मुक्ति की कामना से पिता महर्षि उद्दालक जिन गौओं का दान कर रहे थे, वे अत्यन्त वृद्ध थीं। उन्हें देना या न देना लगभग एकसा ही था। यह केवल दान का स्वांग भर था।**

दान का यह स्वांग देखकर नचिकेता को अत्यन्त दुःख हुआ। उसने अपने पिता से पूछा, आप अपना सम्पूर्ण धन-धान्य दान करने का निर्णय ले चुके हैं। पुत्र भी पिता का ही धन होता है, तो मुझे आप किसे दान में देंगे?

महर्षि उद्दालक ने नचिकेता की बात अनसुनी कर दी। पर नचिकेता मानने वाला कहां था। उसने दूसरी बार पूछा, मुझे किसे दान में देंगे? और फिर तीसरी बार भी वही प्रश्न किया, मुझे किसे दान में देंगे?

तीसरी बार वही प्रश्न सुनकर महर्षि उद्दालक को क्रोध आ गया। उन्होंने कहा - ***'मृत्यवे त्वां ददामि इति।'*** **अर्थात् मैं तुम्हें मृत्यु को देता हूं...**

पिता का यह कहना कि **'मैं तुम्हें मृत्यु को दूंगा...'** एक प्रकार से रूपक है, एक उपमा है। यह संवाद कुछ वैसा ही है जैसा कुछ वर्ष पहले तक घरों में देखा जाता था, जब संतान से अत्यंत क्रुद्ध होकर माताएं ऐसे ही कह देती थीं, 'जा, मर जा।' महर्षि उद्दालक का यह कथन भी उसी भावभूमि का रहा होगा, मैं तुम्हें मृत्यु को देता हूं।

नचिकेता के अत्यधिक प्रश्न से महर्षि उद्दालक क्रोधित हो गए। देने की वृत्ति तो थी नहीं, पर दान करने चले थे।

वास्तव में वे केवल वही धन निकाल रहे थे जो स्वयं के लिए अनुपयोगी हो गया था। वर्तमान युग इसका आधुनिक संस्करण है अपने पुराने, थके हुए वस्त्र या अनुपयोगी उपकरण किसी और को दान में दे देना।

नचिकेता ने सोचा, मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

किंतु वह युग ऐसा नहीं था। वह युग ऐसा था कि जो कहा जाता था, वही घटित हो जाता था।

नचिकेता यम के द्वार पर पहुंचा। वह अग्नि की भांति दैदीप्यमान था। यम के पुत्र वैवस्वत उसके लिए जल आदि लाते हैं, पूछताछ करते हैं कि क्या उसे कुछ खाना-पीना चाहिए, पर नचिकेता शांत चित्त होकर यम के लौटने की प्रतीक्षा करता रहा।

नचिकेता बिना कुछ खाए-पीए तीन दिनों तक यमराज के लौटने की प्रतीक्षा करता रहा।

जब यमाचार्य लौटे तो उन्होंने कहा - **हे नमस्कार के योग्य ब्राह्मण! हे अतिथि! तुम तीन रात्रियां बिना भोजन के मेरे घर में रहे हो। तुम्हें मेरा प्रणाम है।**

तुमसे पूछताछ की गई, फिर भी तुम बिना कुछ खाए-पीए मेरी प्रतीक्षा करते रहे। तुम मेरे अतिथि थे और तीन दिनों तक भूखे रहे। **मैं पाप का भागी नहीं बनना चाहता, इसलिए मैं तुम्हें तीन वर देना चाहता हूं।**

नचिकेता ने पहला वर मांगा कि, **मेरे पिता का मन शांत हो जाए, उनका क्रोध समाप्त हो जाए।**

नचिकेता ने दूसरा वर मांगा, **स्वर्ग साधक अग्नि का ज्ञान। वह अग्नि जो स्वर्ग की ओर ले जाती है।**

स्वर्ग में यम यहां गुरु की भूमिका में हैं। वैसे भी गुरु मृत्यु के समान होता है, क्योंकि उसके द्वार पर हमारे अहंकार की, हमारे अज्ञान की मृत्यु हो जाती है। नचिकेता स्वर्ग साधक अग्नि के रहस्यमय ज्ञान के विषय में जानना चाहता है।

एक उत्तम गुरु की भांति यम उसे बताते हैं कि स्वर्ग होता क्या है? जब तक यह न जाना जाए कि स्वर्ग है क्या, तब तक उस अग्नि को जानकर क्या होगा जो वहां ले जाती है?

स्वर्ग सुख और सुविधाओं की पराकाष्ठा है, वहां न भूख है, न वृद्धावस्था। भूख नरक का द्वार है और वृद्धावस्था कलह का द्वार है।

यमराज ने नचिकेता को स्वर्ग साधक अग्नि का ज्ञान दिया। नचिकेता शांत चित्त होकर उसे सुनता रहा। उसके ज्ञान और पात्रता से अभिभूत होकर यमराज बोले - 'आज से इस स्वर्ग साधक अग्नि का नाम 'नचिकेता अग्नि' होगा।'

उन्होंने उसे एक माला भी दी, जो 'त्रि-नचिकेत' कहलाती है। जो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ इन तीनों संधियों में **'नचिकेता अग्नि'** की साधना करता है, वह इस संसार से तर जाता है।

ये संधियां जीवन के साधारण मोड़ नहीं, बल्कि चेतना के गहरे पड़ाव हैं। जैसे दिन और रात के बीच की संधि केवल समय का परिवर्तन नहीं होती, बल्कि प्रकाश और अंधकार के संतुलन का क्षण होती है। वैसे ही संधियां व्यक्ति के भीतर घटित होने वाले रूपांतरण का संकेत हैं।

ब्रह्मचारी को एक समय पर संधि पार कर गृहस्थ बनना होता है। यह केवल विवाह या जिम्मेदारियां ग्रहण करने का निर्णय नहीं है, यह उस अहं का विसर्जन है जो केवल स्वयं के लिए जीता था। यहां व्यक्ति **'मैं'** से **'हम'** की यात्रा करता है। इसके बाद गृहस्थ को भी एक संधि पार करनी होती है, वानप्रस्थ में प्रवेश की। **यह वह अवस्था है जहां मनुष्य धीरे-धीरे आसक्ति से विरक्ति की ओर बढ़ता है, जहां कर्तव्य रहते हैं पर पकड़ ढीली होने लगती है और जो वन की ओर गया है, उसे अंततः संन्यास भाव में प्रवेश करना होता है। जहां न केवल वस्तुओं का, बल्कि कर्तृत्व के भाव का भी त्याग हो जाता है।**

इन तीन संधियों को पार करना ही वास्तव में तीन कर्म हैं। **कर्म केवल बाहरी क्रिया नहीं है; कर्म वह आंतरिक साहस है,** जो पुरानी पहचान को छोड़कर नई अवस्था में प्रवेश करने के लिए चाहिए। जो व्यक्ति इन संधियों को पार नहीं करता, वह किसी एक आश्रम में अटक कर रह जाता है **या तो जीवन भर जिम्मेदारी से भागता रहता है, या जिम्मेदारी को ही जीवन का अंतिम सत्य मान लेता है, या फिर त्याग का अभिनय करता है पर भीतर से मुक्त नहीं हो पाता।**

प्रत्येक संधि से गुजरने पर एक नचिकेता अग्नि उत्पन्न होती है। यह अग्नि बाहरी नहीं, भीतर जलने वाली अग्नि है जिज्ञासा की, प्रश्न की, सत्य को जानने की। जैसे **ब्रह्मचर्य से गृहस्थ में प्रवेश करते समय एक अग्नि प्रकट होती है, जो व्यक्ति से पूछती है 'क्या तुम केवल अपने लिए जीओगे, या जीवन को आगे बढ़ाओगे?' उसी प्रकार गृहस्थ से आगे बढ़ते समय अग्नि पूछती है 'क्या तुम संग्रह में अटके रहोगे, या सार को पहचानोगे?'**

प्रत्येक संधि से निकलने पर जो अग्नि उत्पन्न होती है, वही मनुष्य को अमृत की ओर ले जाती है। क्योंकि अमृत कोई वस्तु नहीं, एक अवस्था है जहां जीवन का भय समाप्त हो जाता है। जो इन अग्नियों से डरता नहीं, जो प्रश्न से भागता नहीं, वही नचिकेता की तरह मृत्यु के द्वार पर भी ज्ञान की याचना कर पाता है।

इसलिए संधियों से बचना नहीं चाहिए। संधियां संकट नहीं, अवसर हैं। वे जीवन को तोड़ती नहीं, परिष्कृत करती हैं और जो संधि को साहस के साथ पार कर लेता है, वही अंततः जीवन के पार के सत्य को उपलब्ध होता है।

चैत्र कृष्ण पक्ष - 4 मार्च 2026 से 19 मार्च 2026
चैत्र अमावस्या - 19 मार्च 2026

नचिकेता यम संवाद जीवन के उन क्षणों से जोड़ता है, जहां मनुष्य अनिवार्य परिवर्तन के सम्मुख खड़ा है...

नचिकेता अग्नि विद्या साधना

अस्थिर मन का अनुशासन, मन की स्थिरता, विवेक, संयम, धैर्य...

आंतरिक अग्नि को विधिपूर्वक साध कर ही जीवन सहजता से आगे बढ़ाया जा सकता है...

आंतरिक ऊर्जा को दबाना नहीं, बल्कि उसे विवेक, विधान से संचालित करना ही जीवन-सफलता का आधार है...

नचिकेता अग्नि विद्या केवल यज्ञ मात्र नहीं है बल्कि इच्छा की अग्नि, चेतना की अग्नि, अनुशासन की अग्नि का सार है। ऊर्जा को बिखरने न देना, बल्कि उसे क्रम, नियम और लय में प्रवाहित करना।

जब मनुष्य एक स्थिति से दूसरी स्थिति में बहुत तेज़ी से जाता है निर्णय का समय कम होता है पुरानी पहचान टूटती है, नई बनी नहीं होती तब चिंतन, मनन और प्रतिक्रिया सब अव्यवस्थित हो जाते हैं।

उपनिषद् में इसे स्पष्ट कहा गया है कि जब मन इंद्रियों के पीछे भागने लगता है और बुद्धि सारथी नहीं रह पाती।

यही कारण है कि परिवर्तन के समय व्यक्ति गलत निर्णय लेता है, आवेश में बोलता है, स्वयं पर नियंत्रण खो देता है।

जैसे यज्ञ में अग्नि को अर्घ्य एक विशिष्ठ विधान और कालखण्ड के अनुसार किया जाता है, वैसे ही जीवन में हर परिवर्तन के समय मन को एक विधि, एक अभ्यास, एक केंद्र चाहिए।

जो मृत्यु और परिवर्तन के क्षण में भी अपने चित्त को स्थिर रख सकता है, वही जीवित है। वर्तमान में इसका अर्थ है परिस्थितियों के बदलाव में भी अपने आत्मसम्मान, अपने वास्तविक आनन्द की रक्षा। परिस्थिति बदले, पर विवेक न बदले गति तेज हो, पर दिशा स्थिर रहे।

आज का नचिकेता कौन? **आज का नचिकेता वह है जो परिवर्तन से भागता नहीं, जो तुरंत लाभ के प्रलोभन में नहीं फंसता, जो अपने भीतर की अग्नि को अनुशासन देता है।**

परिवर्तन को रोका नहीं जा सकता, पर परिवर्तन में स्वयं को खोने से बचाया जा सकता है। यही नचिकेता की अग्नि विद्या है।

ये परिवर्तनशील अवस्थाएं कई प्रकार की हो सकती है जैसे - कैरियर चुनते समय, जीवन साथी का चयन करने समय, स्थान बदलते समय, परिवार से दूर जाते समय, नौकरी बदलते समय, व्यापार में घाटा-लाभ के मोड़ पर, व्यापार बदलते समय, संबंध टूटने या बनने के क्षणों में ऐसी अनगिनत परिस्थितियों में जीवन में बहुत परिवर्तन आते है। इन परिवर्तनों के साथ सामंजस्य स्थापित करना, वो भी आनन्द के साथ नचिकेता अग्नि विद्या के माध्यम से संभव है।

तकनीक और समाज के तीव्र परिवर्तन में सामान्य मनुष्य अक्सर मानसिक रूप से यमलोक जैसे संक्रमण क्षेत्र में पहुंच जाता है अर्थात् मृत्युतुल्य चिन्तन में पहुंच जाता है। जबकि परिवर्तन के समय सबसे बड़ा खतरा यह नहीं कि चीज़ें बदल रही हैं, बल्कि यह है कि **हम तत्काल सुख के लोभ में अपना विवेक नहीं खो दें, विवेक जो बदलती परिस्थितियों में हमें सही ज्ञान दें।**

आपके पास मन है और यह मन इस शरीर में रोम-रोम में स्थापित है और शास्त्र जिसे आत्मा कहते है, आत्मा ज्योति स्वरूप है..., यह परमात्मा की ज्योति है निर्माणकर्त्ता ब्रह्म की ज्योति है जो आपके भीतर प्रज्जवलित हो रही है।

इस परमात्मा की ज्योति को तुम्हारा शरीर मिला है और इस शरीर के माध्यम से सबसे पहला काम यह करना है कि यह ज्योति निरन्तर प्रज्जवलित रहनी चाहिये। इसे आरोग्य द्वारा हम सुरक्षित रख सकते है। इस ज्योति को कर्म द्वारा तीव्र कर सकते है। जब यह ज्योति तीव्र रहेगी तो आप स्वयं आभावान हो जायेंगे क्योंकि परमात्मा आभा स्वरूप है।

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

नचिकेता अग्नि विद्या

मृत्यु का पाश अपने ही सामने काट कर जीवन में स्वर्ग के समान आनन्द प्राप्त करने की क्रिया का नाम ही नचिकेता अग्नि विद्या है। इसमें केवल आवश्यकता है निर्दोष श्रद्धा, अडिग ओज की, आकांक्षा, क्षुद्र प्रलोभन से रहित होकर धैर्य के साथ कार्य करने की, तभी वह आनन्द पूर्ण रूप से बना रहता है।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इसका आधार अग्नि है, अग्नि को साक्षी रखते हुए अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है और इस प्रयोग को किसी भी रविवार को अथवा किसी भी श्रेष्ठ मुहूर्त में सम्पन्न किया जा सकता है।

इस साधना हेतु एक अग्नि कुण्ड पात्र, जो कि लोहे का अथवा तांबे का बना हो, व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए, सुविधानुसार जमीन पर यज्ञवेदी मिट्टी से बना सकते हैं, मूल अनुष्ठान इसी पर सम्पन्न किया जाता है।

इसके अतिरिक्त साधना में **'बारह सविता चक्र'**, **'हिरण्मयेन पात्र'**, **'अग्नि प्रोक्त यंत्र'** आवश्यक हैं, साथ ही लाल चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य, सुपारी, तिल, कुश, चावल, दूध, अष्टगंध आवश्यक हैं।

साधना विधान

साधना अनुष्ठान के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले उठकर स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें, तथा एक लोटे में जल लें, उसमें चन्दन और सरसों डालें, बाएं हाथ से जल को अपने पूरी देह पर थोड़ा छिड़ककर पवित्रीकरण रूप से स्पर्श कराएं तथा थोड़े जल को बांईं नासिका से स्पर्श कर अपनी देह में भगवान शंकर का चिन्तन करें, अब एक ताम्र पात्र में गन्ध, जल, चन्दन, तिल, कुश, चावल, दूध, अष्टगंध मिलाकर सूर्य की ओर मुंह कर सूर्य को प्रणाम कर उसे अर्ध्य अर्पित करें, सूर्य पूजा करते समय मंत्रों द्वारा सूर्य का आह्वान करें -

ॐ भूः ब्रह्महृदयाय नमः।

ॐ भुवः ब्रह्मशिरसे।

ॐ स्वः रुद्र शिखायै।

ॐ भूभुर्व स्वः ज्वालामालिनी शिखायै।

ॐ महः महेश्वराय कवचाय।

ॐ जनः शिवाय नैत्रेभ्यः।

ॐ तपः तापकाय अस्त्राय फट्।

इस प्रकार तीन बार अर्ध्य अर्पित करने के पश्चात साधक अपने पूजा स्थान में जायें तथा संक्षिप्त रूप में गुरु, गणपति पूजन तथा शिव पूजन सम्पन्न करे, तत्पश्चात् अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करे, कि मैं अपने बच्चों (यहां बच्चों का नाम लें) के दुःस्वप्न नाश हेतु, आयु वृद्धि हेतु, दृश्यमान और अदृश्यमान बाधाओं के नाश हेतु, अपने गुरु, सूर्य, शिव और गणेश को साक्षी रखते हुए यह अग्नि विद्या सम्पन्न कर रहा हूं, सभी देव मेरी साधना में सहायक हों।

अब अपने सामने एक बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर मध्य में **'हिरण्मयेन पात्र'** एक चावल की ढेरी पर स्थापित करें और इसके आगे मंत्र सिद्ध **'अग्नि प्रोक्त यंत्र'** रखें, इस पर चन्दन का तिलक लगाएं और पूजन प्रारम्भ करें, एक दीपक बांईं ओर तथा एक दांईं ओर जला दें।

अब अग्नि मंत्र जप करते हुए **'हिरण्मयेन पात्र'** पर चन्दन, सुपारी, दूध, अष्टगंध अर्पित करें -

अग्नि मंत्र

॥ॐ नमो भगवते हिरण्मयं ज्योति रूपं आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा॥

अब यज्ञ कार्य प्रारम्भ किया जाता है, इस हेतु श्रेष्ठ लकड़ी, उपले (गोबर के कण्डे), तिल, जौ, यज्ञ सामग्री पैकेट की व्यवस्था कर लें, अग्नि जला कर थोड़ी प्रचण्ड होने दें और उसके पश्चात् तिल, जौ से मिश्रित यज्ञ सामग्री से आहुतियां प्रारम्भ की जाती हैं।

सर्व प्रथम अग्नि के बारह मंत्रों का आह्वान किया जाता है, और निम्न मंत्रों का जप करते हुए आहुति दी जाती है -

ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा
ॐ धाताय नमः स्वाहा
ॐ भगाय नमः स्वाहा
ॐ पूषाय नमः स्वाहा
ॐ मित्राय नमः स्वाहा
ॐ वरुणाय नमः स्वाहा
ॐ अर्यमाणाय नमः स्वाहा
ॐ अंशु नमः स्वाहा
ॐ विवस्वान् नमः स्वाहा
ॐ त्वष्टाय नमः स्वाहा
ॐ सविताय नमः स्वाहा
ॐ विष्णु नमः स्वाहा

अब अग्नि के बारह स्वरूपों का यज्ञ करना है, इस हेतु पूजा सामग्री में लाये हुए **'बारह सविता चक्रों'** का प्रयोग करें, ये बारह निम्न स्वरूप हैं -

1. तपिनी, 2. तापिनी, 3. धूम्रा, 4. मरीचि, 5. ज्वालिनी, 6. रुचि, 7. सुधूम्रा, 8. भोगदा, 9. विश्वा, 10. बोधिनी, 11. धारिणी, 12. क्षमा।

इन **'बारह सविता चक्रों'** की आहुति देने के पश्चात् अग्नि मंत्र बोलते हुए 108 आहुति तिल-जौ की और 108 आहुति घी की देनी है, इस प्रकार कुल 216 आहुतियां सम्पन्न करनी हैं। आहुति के समय ऊपर लिखित अग्नि मंत्र का उच्चारण करना है।

इसके पश्चात् उपसंहार आहुति सम्पन्न की जाती है, जिसमें अग्नि देव को दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हुए निवेदन करें कि - जिस प्रकार अग्नि से अन्धकार का नाश होता है, उसी प्रकार हमारे सभी दोषों का दुष्प्रभाव नष्ट हो, यह पूर्ण यज्ञ आपको समर्पित है, ऐसा बोलकर शेष बची सारी सामग्री यज्ञ कुण्ड में अर्पित कर देनी चाहिए।

जब यह प्रयोग पूर्ण हो जाय तो गुरु आरती सम्पन्न करें, तथा सामने पात्र में रखा हुआ जल पूरे घर में छिड़कें, बच्चों पर जल का स्पर्श कराएं तथा प्रसन्न मन से ब्राह्मण भोजन कराएं अथवा इच्छानुसार दान इत्यादि सम्पन्न करें।

यह अग्नि विद्या रहस्यात्मक विद्या है, और इसका प्रभाव चमत्कारिक रूप से स्पष्ट होता है, सिद्ध होने पर अग्नि देव साक्षात् साधक के भीतर समाकर उसे तेजोमय बना देते हैं, बालकों की रक्षा करते हैं, और जिस प्रकार अग्नि में कोई भी वस्तु भस्म हो जाती है, उसी प्रकार रोग, शोक, दुःख भस्म होकर पूर्णतः समाप्त हो जाते हैं।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 700/-

आप अपने घर में भी यज्ञ-अनुष्ठान सम्पन्न कर सकते है पर वह पूर्ण विधि-विधान से हो और यदि उसके बारे में आपको स्वयं जानकारी नहीं हैं और जब आप किसी कार्य की पूर्ण वैधानिकता के बारे में स्वयं आश्वस्त नहीं हों तो वह यज्ञ-अनुष्ठान का कार्य सद्गुरुदेव के निर्देशन में ही करना चाहिए।

जिन साधकों के लिये यज्ञ-अनुष्ठान सम्पन्न करना स्वयं संभव नहीं है वे आरोग्यधाम 'मनोज भारद्वाज' जी से सम्पर्क कर गुरु सान्निध्य में यज्ञ-अनुष्ठान सम्पन्न करवा सकते है। शिव स्वरूप सद्गुरु देव से आज्ञा प्राप्त करने के पश्चात् ही यज्ञ-अनुष्ठान को सम्पन्न करना चाहिये और जब यह अनुष्ठान गुरु सान्निध्य में, गुरुधाम में सम्पन्न होता है तब गुरुकृपा से उच्च स्थिति को प्राप्त कर लेता है। यज्ञ-अनुष्ठान आपकी संकल्पानुसार एक दिन, तीन दिन, ग्यारह दिन, सवा माह अथवा एक वर्ष का भी हो सकता है। यज्ञ में मंत्र शक्ति और आहुति का संगम होता है, स्वाहा तो देवता को अपने समर्पण भाव व्यक्त करने का श्रेष्ठतम् मार्ग है।

गुरुगीता का अर्थ और साधक की जिज्ञासा

गुरुगीता के पाठ से क्या लाभ होगा? यह प्रश्न हर साधक के मन में स्वाभाविक रूप से उठता है। चाहे श्रीकृष्ण की गीता बार-बार यह शिक्षा दे कि साधक को फल की आसक्ति छोड़ देनी चाहिए, फिर भी साधक अपने साधन के परिणाम के प्रति उत्सुक रहता है। जप, तप, पूजा और उपासना के बाद साधक यही सोचता है मिलने वाला फल क्या है? गुरुगीता का पाठ करने वाले साधक के भीतर भी यही जिज्ञासा जागती है कि इस महान ग्रंथ के जप से जीवन में कौन-सा परिवर्तन आएगा, कौन-सी बाधाएँ दूर होंगी और कौन-से लाभ प्राप्त होंगे।

गुरु-सान्निध्य के तुल्य फल

सर्वोप द्रवकुष्ठादिदुष्ट दोषनिवारिणी।
यत्फलं गुरु-सान्निध्यात्तत्फलं पठनाद्भवेत्।।

इसका भाव यह है कि गुरु के प्रत्यक्ष सान्निध्य से जो फल मिलता है, वही फल गुरुगीता के पाठ से भी प्राप्त होता है। साधक के जीवन से कष्ट दूर होते हैं, उपद्रव समाप्त होते हैं, रोग, दुःख और दोष नष्ट होते हैं। मानसिक अशांति कम होकर स्थिरता आती है और साधक के भीतर दिव्य शक्ति का उदय होता है।

विभूतियों और सिद्धियों की प्राप्ति

महाव्याधिहरा सर्वविभूतेः सिद्धिदा भवेत्।
अथवा मोहने वश्ये स्वयमेव जपेत् सदा।।

गुरुगीता साधकों की महाव्याधियों का नाश करती है और सभी प्रकार की विभूतियां तथा सिद्धियां प्रदान करती है। यदि कोई साधक आकर्षण, सम्मोहन या वश्यता हेतु जप करना चाहे, तो यह भी संभव है, बशर्ते उद्देश्य शुद्ध और धर्मसंगत हो।

आसन की महत्ता

कुशदूर्वासनै देवी ह्यासने शुभ्रकम्बले।
उपविश्य ततो देवी जपेदेकाग्रमानसः।।

साधना में आसन का चयन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दूर्वा के आसन, शुभ्र कंबल या विशेष आसन पर बैठकर किया गया जप साधक की ऊर्जा स्थिर करता है और एकाग्रता बढ़ाता है। पहले मन और शरीर को स्थिर करना चाहिए, फिर एकाग्र होकर जप करना चाहिए।

आसन के रंग और साधना का प्रभाव

शुक्लं सर्वत्र वै प्रोक्तं वश्ये रक्तासनं प्रिये।
पद्मासने जपोन्नित्यं शान्तिवश्यकरं परम्।।

सामान्य साधना में श्वेत (सफेद) आसन श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि यह पवित्रता और शांति का प्रतीक है। वश्य साधना के लिए लाल आसन उपयुक्त माना गया है। पद्मासन में बैठकर नित्य जप करने से मन की शांति बढ़ती है, साधक का प्रभाव बढ़ता है और आकर्षण-शक्ति सिद्ध होती है।

किन आसनों से बचना चाहिए

वस्त्रासने च दारिद्र्यं पाषाणे रोगसम्भवः।
मेदिन्यां दुःखमाप्नोति काष्ठे भवति निष्फलम्।।

कपड़े के बिछे हुए ढीले आसन पर जप करना दरिद्रता लाता है। पत्थर पर बैठकर जप करने से रोग उत्पन्न होते हैं। सीधे धरती पर बैठकर जप करने से दुःख का अनुभव होता है। लकड़ी (काष्ठ) पर किया गया जप निष्फल होता है। इससे स्पष्ट है कि साधना में ऊर्जा की दिशा और प्रवाह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

विभिन्न आसनों के फल

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्ष श्रीर्व्याघ्रचर्मणि।
कुशासने ज्ञानसिद्धिः सर्वसिद्धिस्तु कम्बले।।

कृष्णमृग की खाल पर बैठकर साधना से ज्ञान की सिद्धि होती है। व्याघ्रचर्म पर बैठने से मोक्ष का लाभ मिलता है। कुशासन चित्त को अत्यंत स्थिर और शुद्ध बनाकर ज्ञान-साधना में सहायक होता है। साधारण कंबल का आसन भी विविध सिद्धियां प्रदान करता है।

जप की दिशा का विज्ञान

आग्नेय्यां कर्षणं चैव वायव्यां शत्रुनाशनम्।
नैर्ऋत्यां दर्शनं चैव ईशान्यां ज्ञानमेव च।।

आग्नेय कोण में बैठकर जप करने से आकर्षण और कर्षण शक्ति बढ़ती है। वायव्य कोण में जप शत्रुओं का नाश करता है। नैऋत्य कोण में दिव्य दर्शन की संभावना बढ़ती है। ईशान कोण परम ज्ञान का केंद्र माना गया है।

उदङ्मुखः शान्तिजप्ये वश्ये पूर्वमुखस्तथा।
याम्ये तु मारणं प्रोक्तं पश्चिमे च धनागमः।।

मंत्रजप के बारे में बताते हुए शिव कहते है कि उत्तरमुख होकर जप शांति देता है। पूर्वमुख जप वश्यता और प्रभाव वृद्धि देता है। दक्षिणमुख जप शत्रुओं के विनाश हेतु बताया गया है। पश्चिममुख जप धन-प्राप्ति कराता है।

मोहन, बंधमोक्ष और प्रभावशक्ति

मोहनं सर्वभूतानां बन्धमोक्षकं परम्।
देवराज्ञां प्रियकरं राजानं वशमानयेत्।।

गुरुगीता सभी प्राणियों को मोहित करने की शक्ति रखती है। यह बंधनों से मुक्ति देने वाला अद्‌भुत ग्रंथ है। यह साधक को ऐसा तेज और प्रभाव प्रदान करता है कि राजा तक को वश में करने की क्षमता मिलती है अर्थात नेतृत्व, प्रभाव और आदर की वृद्धि।

वाणी का प्रभाव और दुष्कर्मों का नाश

मुखस्तम्भकरं चैव गुणानां च विवर्धनम्।
दुष्कर्मनाशनं चैव तथा सत्कर्मसिद्धिदम्।।

गुरुगीता वाणी को स्थिर, प्रभावशाली और सारगर्भित बनाती है। साधक के गुणों की वृद्धि होती है। पुराने दुष्कर्मों का नाश होता है और सत्कर्मों की सिद्धि निश्चित हो जाती है।

ग्रह, स्वप्न और कार्य-सिद्धि

असिद्धं साधयेत् कार्यं नवग्रहभयापहम्।
दुःस्वप्ननाशनं चैव सुस्वप्न फलदायकम्।।

गुरुगीता असंभव कार्यों को भी संभव बना देती है। नवग्रहों का भय दूर होता है। बुरे स्वप्न मिटते हैं और शुभ स्वप्नों का फल प्राप्त होता है।

मोहशांति और आत्मज्ञान

मोहशान्तिकरं चैव बन्धमोक्षकरं परम्।
स्वरूपज्ञाननिलयं गीता शास्त्रमिदं शिवे।।

यह ग्रंथ मोह का शमन करता है, बंधनों से मुक्ति देता है और साधक को आत्मस्वरूप का साक्षात्कार कराता है। यह शिव की ओर ले जाने वाला सर्वोच्च मार्ग है।

सब मनुष्य एक-समान है और जो मनुष्य अपनी शक्ति का जितना विस्तार करता है उतना वह जीवन में उन्नत होता है, पुष्ट बनता है, श्रेष्ठ बनता है...।

शक्ति तो सभी में होती है..., आवश्यकता है उसके विस्तार की...।

और विस्तार के लिये आवश्यक है मंथन, मन का मंथन...।

अपने मन का मंथन करते समय किसी भी प्रकार का भावनात्मक उद्वेग नहीं रखें। निष्पक्ष होकर परखें, तब अपने कार्य के गुण-दोष, अपने व्यक्तित्व के गुण-दोष, अपने विचारों के गुण-दोष सब स्पष्ट हो जाते है।

फिर स्पष्ट होता है कि शक्ति का विस्तार किस ओर करना है, किस ओर नहीं करना है...

- सद्‌गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

पहला तल है - आपका मन। दूसरा तल है - आपकी आत्मा और तीसरा तल है - परमात्मा अर्थात् शिव।

पहले तल से और गहरे जाओगे तो आत्मा का तल प्राप्त होगा और फिर उससे भी गहरे जाओगे तो परमात्मा का तल प्राप्त होगा। वहां विराट् ऊर्जा का भण्डार है। शिव और शक्ति का भण्डार है और वह कभी खाली नहीं होती लेकिन वहां पहुंचा जा सकता है केवल और केवल प्रयत्न द्वारा। केवल मन से नहीं पहुंच सकते, क्योंकि मन तो गोल-गोल वर्तुल रूप में घूमने वाला है...

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

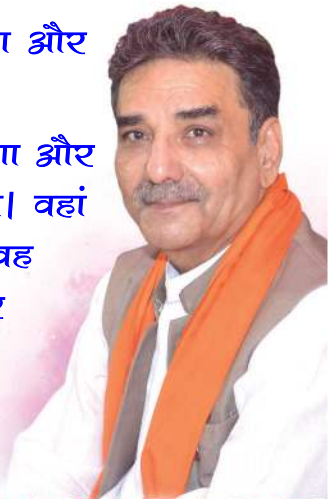

इच्छाएं निश्चय पूर्वक पूर्ण होती हैं

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चयम्।
नित्यं सौभाग्यदं पुण्यं तापत्रयकुलापहम्।।

साधक जिस इच्छा का चिंतन करता है, उसे वह निश्चित रूप से प्राप्त होती है। गुरुगीता सौभाग्य देती है, पुण्य बढ़ाती है और तीनों तापों का नाश करती है।

स्त्रियों के लिए विशेष कल्याणकारी

सर्वशान्तिकरं नित्यं तथा वन्ध्या सुपुत्रदम्।
अवैधव्यकरं स्त्रीणां सौभाग्यस्य विवर्धनम्।।

यह नित्य शांति देती है। संतानहीन स्त्री को सुपुत्र प्राप्त होता है। स्त्रियों को विधवा-दशा से रक्षा मिलती है और सौभाग्य में वृद्धि होती है।

आयु, आरोग्य और ऐश्वर्य

आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम्।
निष्कामजापी विधवा पठेन्मोक्षमवाप्नुयात्।।

यह दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य और ऐश्वर्य देती है। संतान तथा पौत्र-पौत्रियों की वृद्धि होती है। विधवा स्त्री यदि निष्काम भाव से जप करे तो उसे मोक्ष प्राप्त होता है।

अगले जन्म में भी सौभाग्य

अवैधव्यं सकामा तु लभते चान्यजन्मनि।
सर्वदुःखमयं विघ्नं नाशयेत्तापहारकम्।।

इच्छापूर्वक जप करने वाली स्त्री को अगले जन्म में भी अखंड सौभाग्य प्राप्त होता है। गुरुगीता सभी दुःखों और विघ्नों का नाश करती है।

चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति

सर्वपापप्रशमनं धर्मकामार्थमोक्षदम्।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।

गुरुगीता पापों को शांत करती है और धर्म, अर्थ, काम, मोक्षचारों पुरुषार्थ प्रदान करती है। साधक जो इच्छा करता है, वह निश्चित रूप से पूर्ण होती है।

कामधेनु, कल्पवृक्ष और चिंतामणि की तरह फलदायी

काम्यानां कामधेनुर्वै कल्पिते कल्पपादपः।
चिन्तामणिश्चिन्तितस्य सर्वमंगलकारकम्।।

गुरुगीता कामनाओं की कामधेनु है, इच्छाओं को पूर्ण करने वाला कल्पवृक्ष है और मनोकामनाओं को साकार करने वाली चिंतामणि है।

गुरुभक्ति का उदय

लिखित्वा पूजयेद्यस्तु मोक्षश्रियमवाप्नुयात्।
गुरुभक्तिर्विशेषेण जायते हृदि सर्वदा।।

जो साधक गुरुगीता को लिखकर पूजन करे, उसे मोक्ष का महान सौभाग्य प्राप्त होता है और उसके हृदय में गुरु-भक्ति का सतत उदय होता रहता है।

सभी संप्रदायों द्वारा स्वीकार्य

जपन्ति शाक्ताः सौराश्च गाणपत्याश्च वैष्णवाः।
शैवाः पाशुपताः सर्वे सत्यं सत्यं न संशयः।।

शाक्त, सौर, गणपति उपासक, वैष्णव, शैव और पाशुपतसभी गुरुगीता का जप करते हैं। यह सत्य है, इसमें कोई संशय नहीं।

संवत् 2083 : फाल्गुन मास

साधनात्मक खगोलीय घटनाएं

सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण

सूर्य ग्रहण : 17 फरवरी 2026 (दोपहर 3:26 से सांय 7:57)

चन्द्र ग्रहण : 03 मार्च 2026 (दोपहर 2:14 से सांय 7: 53)

ग्रहण एक अद्भुत खगोलीय घटना है और सृष्टि में जब-जब भी ग्रहण होता है, तब-तब सृष्टि में एक विशेष प्रकार की आध्यात्मिक एवं साधनात्मक ऊर्जा का सृजन होता है। इस विशुद्ध आध्यात्मिक और साधनात्मक ऊर्जा को ग्रहण करने के लिये योगी, तपस्वी, तांत्रिक, उच्चकोटि के साधक ग्रहण काल में विशेष अनुष्ठान, साधना, मंत्र-जप इत्यादि सम्पन्न करते है ताकि स्वयं को आध्यात्मिक और साधनात्मक स्तर पर और अधिक श्रेष्ठ एवं परिष्कृत बनाया जा सके।

साधना के क्षेत्र में सिद्धि के इच्छुक साधकों ग्रहण काल अमृत सिद्धि कल्प के समान है। ग्रहण काल के समय अर्जित किया गया पुण्य अक्षय होता है। भारतीय दर्शन में इसी कारण से इस समय का बहुत अधिक महत्व है। ग्रहण काल संकल्प और साधना करने का श्रेष्ठ काल है, ग्रहण काल में साधक साधना, शक्तिपात दीक्षा, अनुष्ठान, दान, तप इत्यादि का संकल्प लेकर भी ग्रहण की शक्ति अपने जीवन में धारण कर सकता है।

ग्रहण काल साधनात्मक कल्प साधक को जीवन में धन, पद, प्रतिष्ठा, यश, मान, ऐश्‍वर्य, कुण्डलिनी जागरण, पूर्णता, श्रेष्ठता, तेजस्विता और जीवन में वह सब जो हम चाहते हैं प्रदान करता है क्योंकि ग्रहण काल में सम्पन्न की गई साधना कभी निष्फल नहीं होती है। भगवान वेदव्यास जी ने कहा है कि - सामान्य दिन या किसी अन्य मुहूर्त पर किये गये जप, तप, ध्यान की अपेक्षा चन्द्र ग्रहण में किया गया जप, तप, ध्यान एक लाख गुना और सूर्य ग्रहण में दस लाख गुना अधिक फलदायी होता है।

सूर्य ग्रहण काल में उग्र महाविद्याएं, शत्रु बाधा, मृत्युबाधा, तंत्र बाधा, भय, मारण, मोहन, विद्वेषण इत्यादि से सम्बन्धित साधना-शक्तिपात दीक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

साधनाएं-दीक्षाएं जिन्हें सूर्य ग्रहण पर सम्पन्न करें अथवा संकल्प लें।

महामृत्युंजय - साधना - दीक्षा - अनुष्ठान

महाकाली - साधना - दीक्षा

पापांकुशा - साधना - दीक्षा

छिन्नमस्ता - साधना - दीक्षा

बगलामुखी - साधना - दीक्षा

कृत्या - साधना - दीक्षा

चन्द्र ग्रहण काल में सौम्य महाविद्याएं, अप्सरा, योगिनी, सम्मोहन-वशीकरण, मनोकामना पूर्ति, प्रेम-सौन्दर्य, कायाकल्प, रोग मुक्ति, इत्यादि से सम्बन्धित साधना-दीक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

साधनाएं-दीक्षाएं जिन्हें चन्द्र ग्रहण पर सम्पन्न करें अथवा संकल्प लें।

ललिताम्बा - साधना - दीक्षा

सरस्वती ज्ञान - साधना - दीक्षा

रसेश्‍वरी मांतगी - साधना - दीक्षा

अप्सरा - साधना - दीक्षा

सौन्दर्य सिद्धि कायाकल्प - साधना - दीक्षा

लक्ष्य सिद्धि कमला - साधना - दीक्षा

☆ तुम मुझे न शब्दों में बांध सकते हो और न मेरा मूल्यांकन करने की क्षमता है तुममें। मेरा परिचय केवल ज्योतिषी, मंत्र मर्मज्ञ, तंत्रज्ञ या आयुर्वेदज्ञ ही नहीं है, ये शब्द तो बहुत ही घिसे-पिटे और बौने हैं।

☆ इन शब्दों से मुझे पहिचाना नहीं जा सकता, अगर मेरी परिभाषा ही करनी है, तो कोई नया शब्द गढ़ना होगा, नए शब्द का सृजन करना होगा क्योंकि मैं एक साथ कई-कई रूपों में हूं।

☆ पूरा आकाश और ब्रह्माण्ड मेरा विचरण स्थल है, समस्त ग्रह-नक्षत्र मेरे आवास स्थल। मंत्र मेरे सामने हाथ बांधे खड़े रहते हैं, तो सिद्धियां मुझे रिझाने के लिए नृत्य करती रहती हैं, देवता मेरा सान्निध्य पाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, तो यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, सेवा कर अपने आपको अहोभागी अनुभव करते हैं।

☆ और मैं तुम्हारे पाखण्ड, तुम्हारी संदेहशीलता, तुम्हारे शक, तुम्हारी न्यूनता, तुम्हारा ओछापन और तुम्हारी निर्लज्जता को मृत्यु देता हूं।

☆ मैं प्रेम से आपूरित हूं, श्रद्धा का सौन्दर्य हूं, विराटता का आकार हूं, सिद्धियों का अजस्र प्रवाह हूं। मैं तुम्हारा जीवन्त, जाग्रत, चैतन्य गुरु हूं, मेरे व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिए कोई नया शब्द ही गढ़ना पड़ेगा तुम्हें।

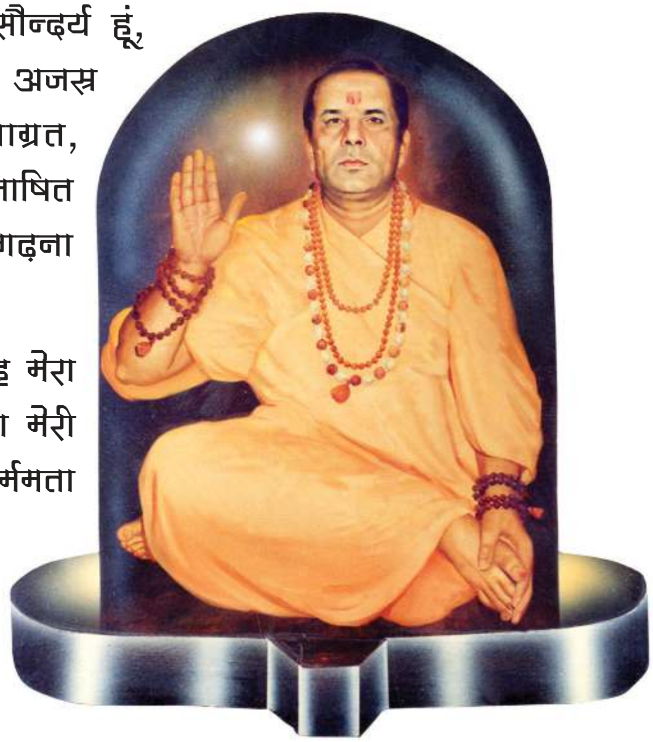

☆ मैं लीक से हटकर चलता हूं, विद्रोह मेरा स्वभाव है, रूढ़ियों पर प्रहार करना मेरी नियति है, पाखण्ड और ढोंग पर निर्ममता पूर्वक प्रहार करना मेरा जीवन है।

☆ जो कुछ तुमने कूड़ा-करकट अपने दिमाग में भर लिया है वह जल जाए, जो कुछ संदेह की दीवारें खड़ी कर दी हैं वे भरभरा कर गिर जाएं, जो कुछ कंकर-पत्थर चुनकर इकट्ठे किए हैं वे हट जाएं।

☆ तुम्हारे चित्त, मन, हृदय पर जो कुछ स्याह है, कालापन है वह समाप्त हो जाए, आज तक तुममें जो गंदा-गलीच था वह मर जाए, तब फिर मैं नए सिरे से तुम्हारा निर्माण करूं देवदूत की तरह, अद्वितीय मानव की तरह, दुर्लभ शिष्य की तरह।

☆ मैं उत्तराधिकार में तुम्हें प्रहार करने की कला सिखाना चाहता हूं, जिससे कि वे ढोंगियों और आलोचकों पर वज्र की तरह प्रहार कर सकें, चुनौतियों का जवाब दे सकें और फुफकारती आंखों को नोचकर फेंक सकें।

☆ और उत्तराधिकार में देना चाहता हूं प्रेम... ताकि वे दग्ध हृदयों पर फुहार बनकर बरस सकें, जलते हुए दिलों का मरहम बन सकें, बिलखते हुए आंसुओं की हंसी बन सकें, छटपटाते हुए प्राणों की संजीवनी बन सकें।

☆ मैं, मेरी करुणा, मेरा स्नेह, मेरी आत्मीयता और मेरा प्रेम ही उत्तराधिकारिता के रूप में अपने शिष्यों को देना चाहता हूं।

शिष्य धर्म

- शिष्य यदि सच्चे हृदय से पुकारे, तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि उसका स्वर गुरुदेव तक न पहुंचे। उसकी आवाज गुरु तक पहुंचती ही है। इसमें कभी संदेह नहीं करना चाहिए।
- शिष्य चाहे वह बीस दिन पहले जुड़ा हो अथवा बीस साल पहले, गुरु की दृष्टि में सभी बराबर ही होते हैं। इसलिए प्रत्येक शिष्य को वरिष्ठ गुरुभ्राताओं एवं गुरुबहिनों को सम्मान तो देना चाहिए, आदर तो करना चाहिए, परन्तु उसे अपनी श्रद्धा को मात्र गुरुदेव के चरणों के लिए ही सुरक्षित रखना चाहिए।
- यथा सम्भव व्यर्थ की चर्चाओं में न पड़कर गुरुदेव का ही ध्यान, मनन करें। दूसरों की आलोचना अथवा निन्दा करने से शिष्य का जो बहुमूल्य समय अपने कल्याण में लगना चाहिए, वह व्यर्थ हो जाता है, जिसका प्रभाव उसके द्वारा की गई साधनाओं पर भी पड़ता है।
- यह आवश्यक नहीं कि कोई समस्या हो अथवा जीवन में कोई बाधा आई हो, तभी गुरु चरणों में पहुंच कर प्रयोग सम्पन्न किए जाएं। गुरु के दर्शन मात्र से ही शिष्य का सौभाग्य एवं पुण्य कर्म जाग्रत होते हैं, इसलिए शिष्य को निरन्तर गुरु से सम्पर्क बनाए रखना चाहिए।
- शिष्य के लिए गुरु ही सर्वस्व होता है। यदि किसी व्यक्ति की मित्रता राजा से हो जाए, तो उसे किसी छोटे बड़े अधिकारी की सिफारिश की क्या आवश्यकता है? इसलिए श्रेष्ठ शिष्य वह है, जो अपने मन के तारों को गुरु से जोड़ता है।
- यदि कोई मंत्र लें, यदि कोई साधना विधि लें, तो गुरु से ही लें अथवा गुरुदेव रचित साहित्य से लें। अन्य किसी को भी गुरु के समान नहीं मानना चाहिए।
- शिष्य का धर्म है कि वह व्यर्थ के वाद-विवाद या चिंतन में न पड़कर पूर्ण तल्लीन होकर गुरु सेवा करे। मन पर नियंत्रण प्राप्त करने का गुरु सेवा से अच्छा कोई माध्यम नहीं है।
- गुरु की आलोचना या निंदा करना या सुनना सच्चे शिष्य के लक्षण नहीं है। गुरु एक उच्च धरातल पर होते हैं इसलिए उनके व्यवहार को समझ पाना संभव नहीं। शिष्य का तो यह धर्म है कि वह इस ओर ध्यान न दे कि गुरु क्या कर रहे हैं अपितु इस बात पर ध्यान दे कि गुरु ने उसे क्या करने को कहा है।
- गुरु तो स्वयं शिव है, यही भाव लेकर अगर शिष्य चलता है तो एक दिन स्वयं शिवत्व उसमें समाहित हो जाता है। गुरु का यही उद्देश्य है कि शिष्य को शिवत्व प्रदान करे। इसलिए इसी चिंतन के साथ शिष्य को गुरु का स्मरण करना चाहिए।

'श्री' रूपी फल रहे जीवन में सदा स्थापित

डाकोरजी की तपोस्थली, तीर्थ भूमि पर सम्पन्न हुए 'श्रीविद्या सायुज्य जगद्गुरु श्रीकृष्ण तत्व गुरु पूर्णिमा महोत्सव' में सद्गुरुदेव का ओजस्वी प्रवचन -

गुरु पूर्णिमा का महोत्सव, आषाढ़ मास की पूर्णिमा, इन्द्र और वरूण अपने पूर्ण पराक्रम के साथ धरती के प्राणियों वन, जंगल, नदियों को तृप्त करते हुए और ऐसे आनन्द पूर्ण माहौल में गुरु और शिष्य का मिलन।

पूर्ण शिष्य, पूर्ण गुरु और पूर्णिमा की तिथि। दिव्य श्लोक है -

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात पूर्ण मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते।।

आप सभी को बहुत-बहुत बधाई, आशीर्वाद। बहुत शिष्य यहां आये है और हजारों लाखों शिष्य अपने-अपने स्थानों पर गुरु पूर्णिमा सम्पन्न कर रहे है। उन सभी को मेरा बहुत-बहुत स्नेह, आशीर्वाद।

यही तो शिष्य के जीवन में वर्ष का सबसे बड़ा पर्व होता है - गुरु पूर्णिमा।

प्रेम से भरे गुरु और प्रेम से भरे शिष्य का मिलन होता है।

कोई कहता है कि गुरु विशेष आशीर्वाद देते है। अरे भाई! गुरु का तो हर आशीर्वाद विशेष ही होता है।

गुरु वही है जो सदैव शिष्य को वर प्रदान करे। वरदाता है गुरुतत्व। गुरु महिमा में कहा गया है -

शिव रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन।
गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न संशयः।।

पर गुरु को रुष्ट होने का अधिकार तो ईश्वर ने छिन ही लिया है। तो पहली बात आप अपने हृदय की किताब पर लिख दो कि गुरु कभी नाराज हो सकते है। गुरु कभी नाराज नहीं होते। वे तो शिष्य को सदैव ऊंचा और ऊंचा देखना चाहते है। गुरु की यही भावना होती है कि शिष्य का कल्याण हो।

ज्ञानशक्ति समारुढ तत्वमाला विभूषिणे
भुक्तिमुक्ति प्रदात्रे च तस्मै श्री गुरुवै नमः

अब जो व्यक्तित्व अपने शिष्यों को भुक्ति और मुक्ति, भोग और स्वतंत्रता, दीनता से मुक्ति के मार्ग पर गतिशील करता है, वह तो कभी रूष्ट नहीं हो सकता। ज्ञान के माध्यम से निरन्तर शिष्य को उन्नति प्रदान कराते है।

आज गुरु पूर्णिमा है, कुछ बात खुलकर मैं करना चाहता हूं।

शिष्य बनने से पहले, साधक बनने से पहले आपका जीवन थोड़ा अलग था और शिष्य और साधक बनने के बाद जीवन थोड़ा अलग हो गया। क्या अन्तर पड़ा?

यह गंभीर प्रश्न आपसे स्पष्ट तौर से पूछ रहा हूं कि गुरु क्या बदलाव लाते है शिष्य के जीवन में?

आप विचार करो, लेकिन उससे पहले एक बात जान लो कि आपके जीवन में केवल दो ही बातें है।

पहली सबसे महत्वपूर्ण बात है आप स्वयं और दूसरी महत्वपूर्ण बात है आपका रचियता, आपका रचनाकार ईश्वर।

गुरु से मिलने से पहले आपको ज्ञात नहीं था कि ईश्वर से, शक्ति से कैसे सम्पर्क बनाया जाये? आपको अपने शारीरिक बल और मानसिक बल पर ही अभिमान था।

दैवीय शक्ति का सहयोग नहीं था, इसीलिये कभी जल्दी निराश हो जाते थे, कभी जल्दी खुश हो जाते थे। थोड़ा मिल गया तो खुश, थोड़ा चला गया तो नाखुश।

भीतर ही भीतर घुटते रहते थे।

भक्ति काल में संत कबीर ने कहा है कि -

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काकु लागे पाय
बलिहारी गुरु आपनो गोविन्द दियो बताय

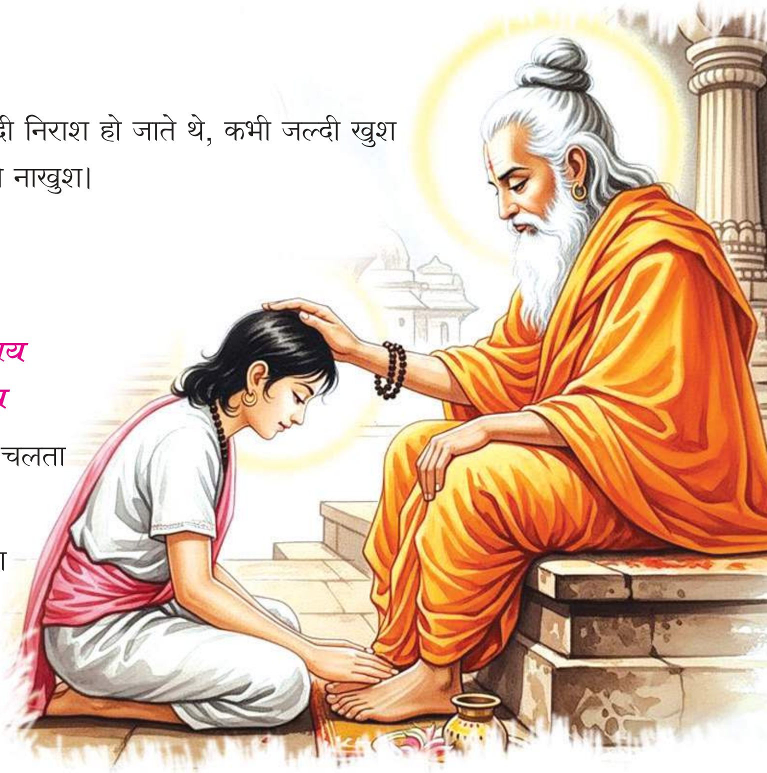

गुरु आते है उसके बाद ही मनुष्य को ईश्वर का पता चलता है। ऐसा संत कह रहे है।

हो सकता है कई लोगों ने संत को भी कहा होगा कि ईश्वर तो सृष्टि के प्रारम्भ से है। गुरु की क्या आवश्यकता? बिना गुरु के भी हम ईश्वर का पता ढूंढ़ लेंगे?

देखों भाई! ईश्वर तो सृष्टि के प्रारम्भ से ही है। दैवीय शक्ति सृष्टि के प्रारम्भ से ही है लेकिन जब तक व्यक्ति शिष्य नहीं बनता है, उसके लिये दैवीय शक्ति का अनुभव, अनुभूति की संभावना बहुत कम होती है।

क्या कारण है?

चलो एक बात सुनों, बहुत साल पहले की बात है कि एक व्यक्ति से मिलने गया। अंधेरे में बैठा था, गर्मी का मौसम था, पसीने से बेहाल था। मैंने कहा, पंखा क्यों नही चलाते हो? बोला, सबकी लाईट गई हुई है, पंखा कैसे चलाऊं? मैंने बिजली के स्वीच को ऑन किया, लाईट चालू थी।

उसने कहा कि अरे! मैं तो इतनी देर बेकार ही उमस में बैठा रहा। मैं सोच रहा था सबके यहां लाईट नहीं है। सब अंधेरे में बैठे है, मैंने कहा लो अब प्रकाश और हवा आ गई।

अब आपको समझ में आया - गुरु आकर आपकी जिन्दगी में प्रकाश का स्वीच ऑन करते हैं।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया
चक्षुरुन्मीलितं तस्मै श्री गुरुवे नमः

थोड़ा में बातचीत करने लगा, मैंने कहा तुमने एक बात पर ध्यान दिया क्या? हवा तो तुम्हारे चारों तरफ है लेकिन जब तक पंखा नहीं चलाया था, तब तक गर्मी में बैठे थे, हवा की अनुभूति नहीं हो रही थी।

मुझे मालूम था कि वह आदमी कि गुरु और ईश्वर में आस्था कम है इसीलिये मैंने बात को उस दिशा में मोड़ते हुए कहा कि -

प्रकाश और हवा की तरह गुरु और ईश्वर भी हमारे जीवन में हर समय उपस्थित है। लेकिन जब तक कोई शक्ति हमें अंधकार से प्रकाश की ओर नहीं ले जाती, तब तक हम ईश्वर की सत्ता का अनुभव नहीं करते है।

उस व्यक्ति ने फिर कहा - भाई साहब, न हवा दिखाई देती है, न ईश्वर दिखाई देता है।

मैंने कहा मैं तो यह समझता हूं कि ईश्वर हर समय उपस्थित है। मैंने कहा विचार करना - और चला आया।

थोड़े दिन बाद मुझे समाचार मिला कि इस बार तूफान आया तो उसके घर की छत के ऊपर लगी हुई टिन की चद्दर उड़ गई थी। फिर मैं पहुंचा उसके घर की भई बहुत बुरा हुआ। छत ही उड़ गई। मैंने कहा भयंकर तुफान तुम्हें सुनाई दिया क्या।

उसने कहा - कैसे बात करते हो आपको तूफान सुनाई भी दिया और दिखाई भी दिया। मैं शांत स्वर में कहा - ठीक इसी प्रकार ईश्वर भी सदैव दिखाई देते है, सुनाई देते है लेकिन इसकी अनुभूति केवल और केवल साधक शिष्य को होती है।

जो सामान्य व्यक्ति होते है वे इस अनुभव से वंचित रहते है। उन्हें ईश्वर की उपस्थिति केवल और केवल गंभीर घटनाओं में नजर आती है। जैसे तूफान, सुनामी, बाढ़, वर्षा, अतिवृष्टि इसीलिये इन घटनाओं को एक्ट ऑफ गॉड act of god कहा गया है।

ये भगवान के प्रकोप है, भगवान रुष्ट हो गये।

आप क्या कहते हो? जब बाढ़ वगैहरा आ जाती है, तूफान आ जाता है तो कहते हो ना यह कैसी ईश्वर की लीला है? तब आप मानते हो ईश्वर है। तो रोज ईश्वर नहीं है, ऐसा कैसे कह सकते हो?

सरल बात यह है कि नित्य प्रति शक्ति के रूप में, शुभ शक्ति के रूप में ईश्वर को एक शिष्य ही अनुभव कर सकता है और गुरु पूर्णिमा के दिन शिष्य अपनी इसी शक्ति का नवीनकरण कराने के लिये गुरु के पास आता है।

वह चाहता है कि ये ईश्वरीय अनुभूति, दैवीय शक्ति सदैव उसके भीतर जाग्रत रहे और वह अपने संसार के कर्मों को श्रेष्ठ रूप से सम्पादित कर सके।

आप सब चाहते हो कि आपमें शक्ति स्थापित हो जाये और प्राप्त करना चाहते हो अपने भौतिक जीवन में आनन्द। पर महत्वपूर्ण बात यह है कि भौतिक जीवन में परम आनन्द के लिये आध्यात्मिक शक्ति चाहिये और गुरु इस शक्ति का स्वरूप होते है।

भौतिक जीवन में आनन्द के लिये आध्यात्मिक शक्ति चाहिये ही चाहिये।

अब मैं दूसरी बात पूछता हूं - गुरु क्यों मिलते है शिष्य को?

अब तब आपने एक भ्रम पाल रखा है कि मैं शिष्य गुरु का चुनाव करता हूं।

आप नहीं करते हो, गुरु चुनते है शिष्य को। गुरु शिष्य के मिलते है उसे पूर्ण करने के लिये और इस विशेष क्रिया को चमत्कार को कैसे करते है।

पहली शर्त है - गुरु सुपात्र का चयन करते है।

सुपात्र शब्द में आया है पात्र। आप आप किसी पात्र को, बर्तन को नल के नीचे जल भरने के लिये रख दोगे और उस पात्र में छेद हुआ तो जल रुकेगा नहीं क्योंकि छिद्र उसे खाली कर देगा, अब आगे आपने छिद्र को बंद कर दिया और नल को भी बंद कर दिया तो भी जल नहीं भरेगा क्योंकि आपने जल के स्रोत को ही बंद कर दिया है। सरल उपाय है, छिद्र को बंद करो।

स्रोत को खोल दो जीवन का पात्र भर जायेगा।

जीवन उस पात्र की भांति है। सुपात्र और कुपात्र शब्द यही से आये है।

सुपात्र कौन? जिसने छिद्र को भर दिया है और स्रोत खोल दिया है वह उद्‌गम से भी लाभ ले रहा है।

कुपात्र वह पात्र है जिसे अपने जीवन क्या छेद है उसका मालूम नहीं। वह जानता ही नहीं कि उसके जीवन में कष्ट का कारण क्या है? वह कैसे शांति पायेगा? वह कैसे पूर्ण होगा?

सुपात्र के पास श्री की शक्ति है, संस्कार की शक्ति है। इसीलिये गुरु सबसे पहले संस्कार देते है। **'गुरु शक्ति स्थापना संस्कार'** का अर्थ है - **'अच्छे संस्कारों की स्थापना', जीवन के छिद्रों को भरना।**

गुरु जब आपके जीवन में आते है तो वे आपके जीवन की कमियों को भर देते है। विशेष बात क्या है? जीवन का यह स्वभाव है, वह स्वयं अपने आपको नवीन कर लेता है। कैसे करता है?

इसे कहते है - टाईम, समय, काल। समय के प्रवाह में जीवन अपने आपको निरन्तर नवीन करता रहता है।

शरीर को देखों हर रोज नई-नई कोशिकाओं का निर्माण हो रहा है और पुरानी कोशिकाएं समाप्त होती है।

अभी आपने पढ़ा होगा कि नैनीताल के जंगलों में आग लग गई। कुछ साल बाद आप देखोंगे कि वह वन फिर से नवीन हो गया है। वापिस नये वृक्ष उग गये, क्योंकि वन में सबकुछ अपने आप बढ़ता है।

ऐसे ही जीवन है, इसमें स्वयं को नवीन करने की शक्ति है।

स्वयं को नवीन करने की शक्ति को ही तंत्र कहते है। जिसने अपने स्वयं के तंत्र का विकास कर लिया वह बार-बार अपना नवीनकरण करता रहता है, अपने दोषों को हटाता रहता है।

आज हम उसी शक्ति का आह्वान कर रहे है, उसी कर्मशक्ति का जिसका स्वरूप श्रीकृष्ण है। उसी ज्ञान शक्ति का जिसका स्वरूप निखिल है। उसी शक्ति का जिसका नाम श्री है।

आप देखों कभी-कभी आपको चोट लग जाती है और वह चोट अपने आप खुद भर जाती है, ठीक हो जाती है।

आपको केवल एक काम करना है। उस चोट के बारे में भूल जाना है। यदि आप उस चोट को रोज-रोज खरोचोंगे तो क्या भरेगा? बिल्कुल नहीं भरेगा।

ऐसा कोई व्यक्ति हुआ है जिसके जीवन में कोई दुर्घटना घटित नहीं हुई हो, कोई धोखा नहीं मिला हो? मन में बहुत घाव लगा था उस समय लेकिन पन्द्रह साल तक उस छल को, कपट को ही याद रखोंगे तो व्यथित क्या होगा? आपका मन, आपका हृदय ही।

इसीलिये आज गुरु पूर्णिमा पर मन का भी नवीनीकरण करना है। यदि मन का नवीनीकरण नहीं किया तो हर समय पीड़ा रहेगी।

सुपात्र अपने जीवन को पूर्ण बनाने के लिये नवीनीकरण करने हेतु निरन्तर प्रयासरत रहता है।

आप यहां मुझे सुन रहे हो और जो दूर बैठे भी सुन रहे है वे सभी शिष्य सुपात्र है और आप सुपात्र को मैं यही वर देना चाहता हूं कि आप को अपने जीवन रस को भरा हुआ रखना है, कभी शुष्क नहीं होना है, रुखा-सूखा नहीं बनना है।

किस तरह से आप अपने जीवन रस को सिंचोगे। चार उपाय है और चारों साथ-साथ चलेंगे।

1. इच्छाशक्ति
2. आशा शक्ति
3. विद्या शक्ति
4. सुमति शक्ति

इसके बाद ही आप अपने जीवन में पूर्णता अनुभव करोगे और आपकी भाषा में कहूं तो आपको जीवन में आनन्द आने लगेगा।

पर आपकी पूर्णता में बाधक क्या है?

आपका शून्य से भय, खाली होने से भय। अंधेरे में भयवश रस्सी को सांप समझने लग जाते हो।

भयवश कई बार आपको छाया दिखाई देती है।

भयवश कई बार रात को बुरे सपनें आते है और बुरे सपनों को याद कर आप अपने भय को ओर मजबूत कर लेते हो।

सोचने के दो तरीके है। एक तरीका है - आज सबकुछ शुभ-शुभ होगा।

एक तरीका है आज तो कुछ अशुभ होगा।

अब आप सोचों कि आप किस दिशा में ज्यादा सोचते हो? ज्यादातर लोग थोड़ा सुख आते ही सोचते है अब तो कुछ अशुभ होगा। जबकि सद्गुरु निखिल से जुड़े शिष्य तो यही सोचते है कि आज शुभ है, अभी शुभ है और आगे भी शुभ ही शुभ होगा।

काम पर जाते हो तब भी यही सोचते हो? क्यों व्यर्थ का सोचते हो? इस सोच का मूल कारण है आपके मन का भय। देखों भाई, भय का नाश करने के लिये शून्यता को अपनाना पड़ेगा।

हमारा सौर मण्डल भी बिल्कुल शून्य की तरह है और इस विशाल शून्य में ही सबकुछ समाप्त हो जाता है। जब कुछ नहीं था, तब भी शून्य था और जब सबकुछ है तब भी शून्य है। शून्य का अर्थ खाली नहीं है, शून्य का अर्थ है पूर्णता।

आप खाली होने से डरते हो।

आज आपको स्पष्ट कह रहा हूं। भय का नाश करना है तो अपने स्वयं के तंत्र को मजबूत करना होगा। और यह मजबूती बैठे-बैठे नहीं आयेगी।

कृत्य अर्थात् कर्म करना पड़ेगा।

कृत्या भाव और कर्ता भाव एक ही है। जो कृत्य करता है उसे कर्त्ता कहते है और जो कर्त्ता है उसे ही तो जगत का कर्त्ता भगवान शिव शक्ति प्रदान करते हैं।

अपने कर्म की शक्ति कृत्या शक्ति को प्रबल बनाओं। हुंकार के साथ कार्य करो।

कृत्या अर्थात् हुंकार की शक्ति और हुंकार केवल मुंह से नहीं निकलता है, हृदय से निकलता है। हमने व्यर्थ के अहंकार को बहुत प्रेम से पकड़कर रखा है।

अभी बहुत कृत्य करने है, कर्म करने है। जब तक जीवन है तब तक कर्म करना है। क्या छोड़ना है? व्यर्थ का अहंकार।

अभी मैंने एक सुन्दर कथा पढ़ी थी, प्रतीक कथा है। एक राही ने पहाड़ी नदी को पूछा। अरे नदी! इतनी तेज गति से क्यों जा रही हो, इतनी क्या जल्दी है। नदी ने कहा मुझे सागर से मिलना है। बोला, सागर से मिल गई तो तुम्हारे पास क्या बचेगा?

नदी ने कहा किसको बचाना है, सागर से मिल जाऊंगी तो पूर्ण हो जाऊंगी। नदी कहती है, सच्चा शिष्य कहता है –

जब पहचान पिछले जन्म की होती है,
तो मन अनायास ही खिंचता चला जाता है
मेरा तो उद्भव भी तुम ही से हुआ है
और विलीन होना भी तुम्ही में है
मेरे सारे भाव समर्पित
मन के सब उद्भव समर्पित
सांस सांस है तुझे समर्पित
मैं पूर्ण रूप से तुम्हें समर्पित

पर कई मनुष्य है कि खाली होने से डरते है। शून्य के बिना पूर्णता नहीं मिल सकती।

गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु के पास क्यों आये हो? पूर्ण बनने के लिये आये हो ना। फिर खाली होने से क्यों डरते हो, शून्य होने से क्यों डरते हो?

कोई भी नई शुरुआत करने के लिये बदलाव आवश्यक है और बदलाव से आपको बड़ा डर लगता है।

समय परिवर्तनशाली है। शक्ति निरन्तर परिवर्तनशाली है।

समय के साथ, शक्ति से जुड़ जाओ और परिवर्तन को खुले ह्रदय से स्वीकार करो।

मेरे पास लोग आते है। बहुत धूमधाम से बेटा-बेटी की शादी करते है और फिर छः महिने बाद शिकायत भी करते है कि अब बेटा तो बदल गया है। उसका व्यवहार पहले जैसा नहीं रहा।

शांत दिमाग से सोचों कैसे रहेगा? उसके पास भी अब श्री की शक्ति आ गई है। इसलिये बदलाव स्वभाविक है। नहीं बदले तो तुम्हें चिन्ता होनी चाहिये?

जहां भी श्री, श्रीमान् या श्रीमति के रूप में श्री आयेगी वहां बदलाव होता है। आपकी बेटी के शादी के बाद भी उसके जीवन में श्री आये, श्रीमान् आये वह श्रीमति हो गई, तो परिवर्तन आयेगा।

आज गुरु पूर्णिमा पर स्पष्ट कह रहा हूं, जीवन का अर्थ परिवर्तन है और उससे ही जीवन में अर्थ आता है।

एक बात आप अपने जीवन में भी देखना, जब भी जीवन अर्थहीन लगे तो समझना, परिवर्तन आने वाला है, और नया अर्थ लायेगा।

बस आप अपनी शक्ति के साथ, गुरु शक्ति के साथ सदैव आशावान रहे।

गुरु पूर्णिमा है, स्पष्ट कह रहा हूं – निराशा को जीवन में स्थान नहीं देना है। आपकी उम्र कितनी ही बढ़ जाये,

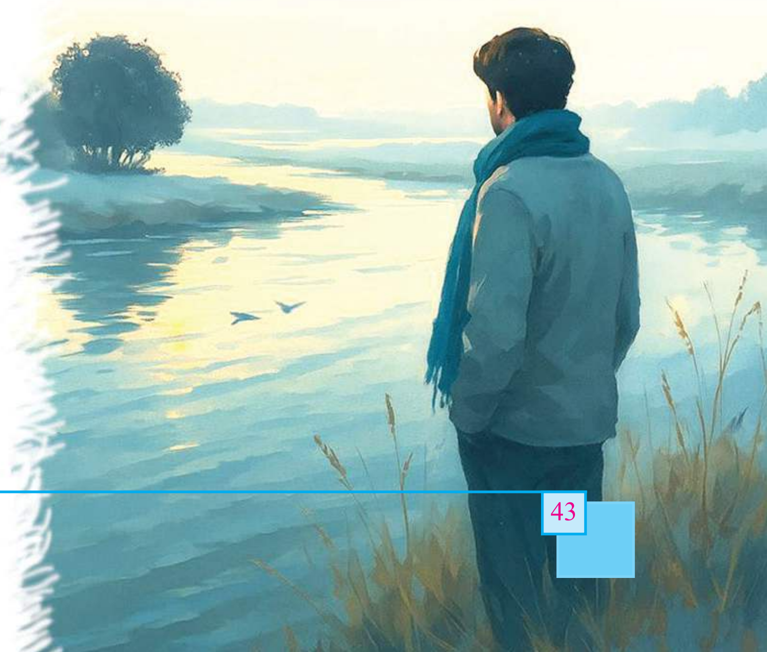

आशावान रहोगे तो आप जीवन्त हो और आपको केवल जीवित नहीं, जीवन्त रहना है।

एक कहानी याद आती है, पेड़ से पत्ते सूख जाते है तो पेड़ से टूट कर अलग हो जाते है। ऐसे ही एक पत्ता सूख कर पेड़ से अलग हो गया, गिर गया। बाकी हरे पत्ते उसका मजाक उड़ाने लगे। वह हरी भरी घास में गिर गया। घास ने भी उसका मजाक उड़ाया। अरे! इस हरियाली में तेरा क्या काम? बाकी पत्तों से, घास से तानें सुनकर सूखा पत्ता निराश हो गया। अब जीवन में रस ही नहीं रहा।

तभी एक घटना घटी, तेज हवा का झौंका आया और सूखा पत्ता उड़ कर पानी में जा गिरा। छोटा हौद था, अब उस हौद में एक चींटी गिर गई थी, वह अपनी जान बचाने के लिये भरसक प्रयास कर रही थी। गिरा हुआ पत्ता सामने आये, चीटीं चढ़ गई उस पर और धन्यवाद दिया कि आज आपके कारण मेरी जान बची।

सूखे पत्ते ने कहा कि – मैं तो आपको धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने मेरे जीवन का नया अर्थ दिया, अन्यथा बाकी हरे-भरे पते तो सब मेरा मजाक उड़ा रहे थे।

चीटीं ने कहा कि देखों! जो हरा भरा है वह भी कल सूख जायेगा और यह कहावत हजारों सालों से चली आ रही है कि –

डूबते को तिनके का सहारा...

हर चीज उपयोगी बन सकती है। हर जीवन उपयोगी हो सकता है। हमारा जीवन भी उपयोगी हो सकता है। यदि हम परिवर्तन को स्वीकार कर ले।

कोरोनाकाल में आपने डर कर परिवर्तन को स्वीकार किया, अब सब सामान्य है हंसी-खुशी से नये परिवर्तन को स्वीकार करों।

पर इस परिवर्तन की शक्ति को आत्मसात् करना सहज नहीं है क्योंकि जीवन के इस मार्ग में कहीं विश्राम नहीं है।

देखों भाई! जीवन है तो हर समय बदलेगा। बदलाव का नाम ही जीवन है और इसे आत्मसात् करने की क्षमता प्रकृति ने स्त्री स्वरूप में दिया है। आप अपने घर-परिवार को देखों, आपकी पत्नी अपना घर-बार सब छोड़कर आपके साथ आई। फिर भी उसे बार-बार सुनना पड़ता है कि इस घर में ऐसा नहीं होता, इस घर में ऐसा नहीं होता।

अरे भाई! इससे पहले घर कहा था? पत्नी आने के बाद ही तो गृहस्थ जीवन की शुरूआत होती है।

बिन घरनी घर भूत का डेरा...

शक्ति हमेशा स्त्री तत्व है और बल हमेशा पुरुष तत्व है।

इस बात को याद रखना – **शक्ति हमेशा स्त्री तत्व है और बल हमेशा पुरुष तत्व है।**

इसीलिये आप भी देवताओं से अधिक महाविद्या की साधना करते हो। दस महाविद्या की साधना करते हो।

यह मजाक वाली बात आपको भी मालूम होगी कि एक बार पति-पत्नी में युद्ध हो गया। जहां गृहस्थी है, वहां युद्ध चलता रहता है। लम्बी लड़ाई है और साथ भी रहना है। पुरुष ने कहा, मैं अधिक बलशाली हूं, स्त्री ने कहा मैं अधिक शक्तिशाली हूं। बहस हो गई, स्त्री ने कहा शादी हई तो क्या हुआ।। आप बारात लेकर आये थे हमारे यहां कितने लोग थे? फूफा, चाचा, मामा

सबको लेकर आये थे और मेरी हिम्मत, मेरी शक्ति देखों, मैं तो सबकुछ छोड़-छोड़कर तुम्हारे साथ आ गई हूं, निडर भाव से।

खैर, यह तो हंसी मजाक की बात हुई, यथार्थ जिन्दगी मे भी स्त्री शक्ति अपने आपको पुरुष से हीन समझती है। वास्तव में ऐसा है नहीं। मैंने कहा ना जिस पात्र में छिद्र होता है वह पात्र खाली हो जाता है।

शक्ति को गौरवान्तिव करें, सम्मान करें। जीवन महत्वपूर्ण हो जायेगा, आज अपने बल पर अभिमान न करें, अपनी शक्ति का विस्तार करें।

मेर पास भी जब आप पति-पत्नी सहित आते है तो मुझे अच्छा लगता है कि दोनों में सांमजस्य है, प्रेम है। दोनों के जीवन की आधार शक्ति गुरु है। तुम झूठ बोलकर मुझसे मिलने आये, पत्नी को बिना बतायें मुझसे मिलने आये मुझे अच्छा नहीं लगेगा।

तुम्हारे अन्दर इतना आत्मबल होना चाहिये कि गुरु के पास आओं तो घरवालों को पूरी जानकारी होनी चाहिये।

साधना करो तो छुपकर के मत करो। आपको किसी से डरने की आवश्यकता नहीं है। आप श्रेष्ठ कार्य कर रहे है।

अभी की ही घटना है, एक नवदम्पती मेरे पास आये, आपस में अनबन थी, बात सम्बन्ध विच्छेद तक पहुंच गई। लड़के के मां-बाप ने मेरे पास सुलह के लिये भेजा था। ध्यान देना, मां-बाप ने भेजा था। वो भी मेरे शिष्य थे।

मुझे गर्व है कि 45 साल में दो पीढ़ी बदल गई लेकिन 1990 से लेकर के 2024 तक 44 साल में पिता भी शिष्य, पुत्र भी शिष्य और पौत्र भी शिष्य।

यह है शिष्य परम्परा और यह है गुरु परम्परा।

खैर, दम्पत्ति की बात कर रहा था। दोनों बैठे थे, थोड़ी देर इधर-उधर की बात की। मैंने पूछा क्या बात है? बोला मेरी पत्नी बहुत नेगेटिव है, हर बात में खामी ढूंढती है, जबकि दूसरा पहलू भी होता है।

पत्नी से पूछा तो बोली पति मेरी समस्याओं को समझते ही नहीं है। मैं भी जॉब करती हूं, अध्यापिका हूं और इनको मेरे से बहुत अपेक्षा है। अब मेरी जूम पर क्लॉस चल रही है और बारिश आ जाये तो यह कहते है छत से कपड़े ले आओं। अब दोनों काम तो नहीं हो सकते है ना। इनके साथ कैसे निभेगी?

मुझे स्कूल से आकर भी बच्चों की कॉपी चैक करनी पड़ती है। सब कुछ बारीकी से देखना पड़ता है, क्लॉस टेस्ट के लिये पेपर तैयार करना होता है और साथ-साथ घर-गृहस्थी के काम भी।

मैं सुनता रहा चुपचाप, फिर कहा कि तुम कहते हो कि पत्नी बड़ी नेगेटिव है, चीजों को आधे स्वरूप में ही देखती है। यदि तुम्हें रोज सिर्फ भोजन में रोटी, सलाद और पानी दे दे तो तुम क्या कहोगे? तुम यही कहोगे ना कि खाना आधा अधूरा क्यों दिया? सब्जी कहां है? और सोचों, पत्नी कहे इतने नेगेटिव क्यों हो रहे हो, तुम्हारे पास जो चीजें है, परौसी है, उन्हें ही खा लो पेट भर जायेगा। तो तुम्हें कैसा लगेगा?

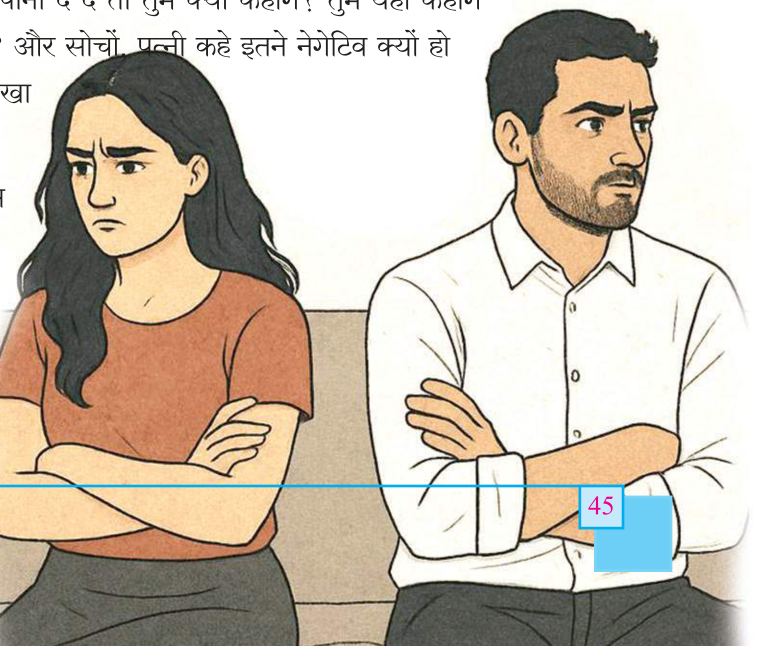

तुम्हारी पत्नी नेगेटिव नहीं है, वह पूर्णता पर फोकस करती है। जब उसका स्कूल का काम होता है तो वह पूरी तरह से स्कूल का काम करती है, घर का काम होता है तो पूरी तरह से घर का काम करती है क्योंकि शक्ति का स्वरूप ही पूर्णता है।

शक्ति का नाम पूर्णता है।

बात पति को समझ में आ गई कि भाई गृहस्थी की गाड़ी में दूसरे पक्ष के भी समझना चाहिये।

अब मैंने पत्नी को कहा देखों, तुम हर बात पर ध्यान दोगी तो कलह बढ़ती जायेगी। तुम हो शक्ति स्वरूपा।

शक्ति के पास तो हर कोई प्रार्थना लेकर आता है, आप भी इसीलिये शक्ति साधना करते है। अब आपकी किन प्रार्थनाओं को पूर्ण करना है और किन को पूर्ण नहीं करना है इसका भी निर्णय आप लोगे या शक्ति लेगी?

हमारे शिव भी शक्ति से रहित होकर शांत हो जाते है।

मैंने स्त्री को समझाया कि स्त्री अर्थात् श्री, श्री अर्थात् शुभमति और शुभ की आवश्यकता हर एक को होती है। हम कोई नया काम शुरु करते है तो घर के दरवाजें पर क्या लिखते है - शुभ-लाभ।

सिर्फ लाभ-लाभ नहीं लिखते।

जिस व्यापार के मूल में, जिस कार्य के मूल में शुभ नहीं है वह फलता-फूलता नहीं है। नौकरी हो, घर हो मूल है शुभ भाव।

आगे मैंने और पूछा, अनबन हो जाती है तो क्या हाथा-पाई करते हो, बोली नहीं। वैसे तो मेरा स्वभाव बहुत शांत है, मुझे अपना काम करना है और मैं जानती हूं कि लड़ाई-झगड़ा मन की शांति छिन लेता है। विवेक से निर्णय लेती हूं।

मैंने कहा देखों भाई, तुम हो श्रीमति, शुभमति, तुम्ही हर बात में परमिशन मांगोंगी तो किस की भूल है? क्यों ध्यान देती हो कि पति मुझमें कमियां निकालता है, यह भी तो सोचो कि आपको प्रेम भी तो करता है, घर की तिजोरी की चाबी भी आपको दे रखती है, आपको अपना काम करना है, दूसरे क्या कहते है इस पर इतना ज्यादा ध्यान मत दो।

यह बात मैं सबको कहता हूं। दूसरे क्या कहते है? इस पर ध्यान दिया तो तुम्हारा जीवन रुक जायेगा। इस बात को पूरी तरह से समझना।

मैंने कहा तुमने यह कहा कि पति तुम्हारे मन के अनुकूल आचरण नहीं करता है। पर कई सम्बन्ध ऐसे होते है जहां तुम्हारे मन के अनुकूल आचरण नहीं होता।

मैंने पूछा क्या तुम्हारा अधिकारी तुम्हारे मन के अनुकूल आचरण करता है।

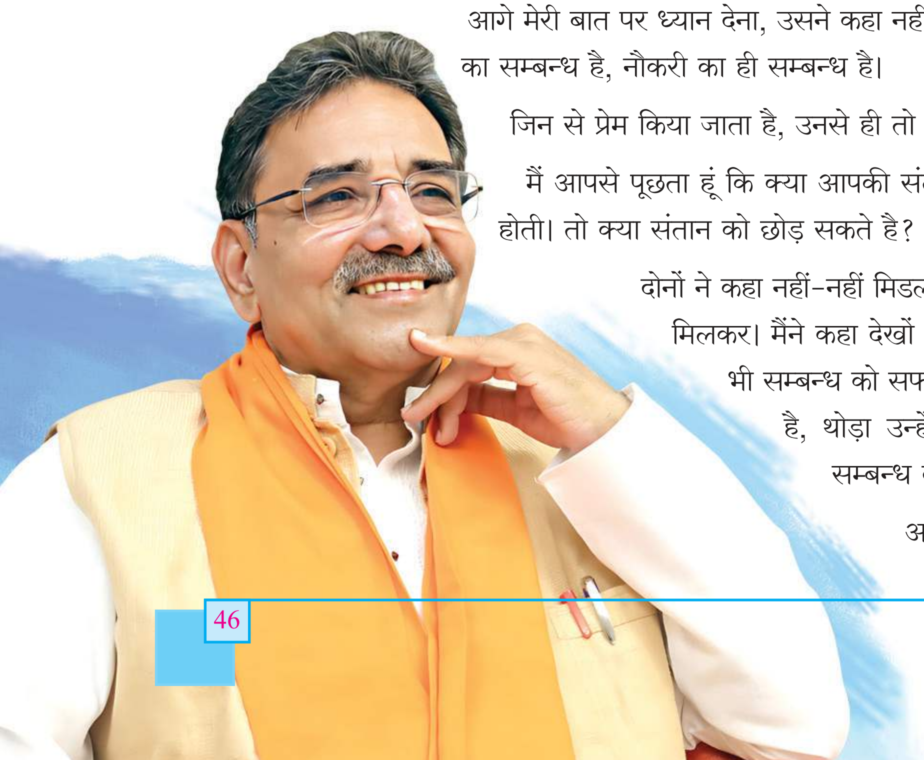

आगे मेरी बात पर ध्यान देना, उसने कहा नहीं-नहीं। वहां प्रेम नहीं है वहां केवल सुविधा का सम्बन्ध है, नौकरी का ही सम्बन्ध है।

जिन से प्रेम किया जाता है, उनसे ही तो अपेक्षा रख सकते है।

मैं आपसे पूछता हूं कि क्या आपकी संतान आपके मनोनुकूल है? किसी की नहीं होती। तो क्या संतान को छोड़ सकते है?

दोनों ने कहा नहीं-नहीं मिडल पाथ निकालते है माता-पिता और संतान मिलकर। मैंने कहा देखों गृहस्थ जीवन में भी यही करना है। किसी भी सम्बन्ध को सफल बनाने के लिये थोड़ा हमें बदलना पड़ता है, थोड़ा उन्हें बदलना पड़ता है, बिना बदलाव किये सम्बन्ध दीर्घजीवी नहीं हो सकता।

आप भी सोचों आपके पांच वर्ष के बेटे

के साथ जैसा सम्बन्ध था, अब बेटा 25 साल का हो गया है तो क्या वैसा ही सम्बन्ध रहेगा। बहुत कुछ बदलेगा।

सम्बन्ध परिपक्व तभी होता है जब सम्बन्ध का रूप बदलता है।

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन यज्ञ में क्रिया के रूप में आहुति देता है और इन आहुतियों के द्वारा वह फल प्राप्ति की इच्छा रखता है।

मैंने जो बात कहीं उसको ध्यान से सुनना - जीवन एक यज्ञ है और क्रिया उस यज्ञ में दी गई आहुति।

फल प्राप्ति की सभी इच्छा रखते है और आप सब चाहते हो कि घर में, परिवार में, ऑफिस में, व्यापार में, रिश्तेनाते में सबसे सम्बन्ध मधुर रहे।

है कोई ऐसा चाहता है लड़ाई-झगड़ा रहे।

कोई नहीं चाहता है। हर कोई शुभ और लाभ चाहता है। पर एक बात है, कुछ लोग आपसे हमेशा नाराज रहेंगे। कहते है ना शादी में फूफा सबसे नाराज चलता है। उसको हर बात में कमी दिखाई देती है। भाई ऐसे व्यक्तित्व की आप परवाह मत करो।

आप अपने जीवन यज्ञ में श्री की अपेक्षा करते हो, सम्बन्ध शुभ रहे, ऐसी आशा भी रखते हो और फल की भी मांग करते हो। फल के आगे कुछ सोच ही नहीं पाते हो।

कोई-कोई होता है जो गुरु से श्री का आशीष मांगता है। जीवन में फल, श्रीफल चाहिये, श्रीरूपी फल चाहिये।

इसलिये हम स्तोत्र के अंत में फलश्रुति गाते है। देव प्रार्थना में अंत में घर, घोड़ा, गाड़ी, स्वास्थ्य, नौकरी इत्यादि का फल मांगा जाता है। जब यह स्तोत्र रचे गये तो पट्रोल की गाड़ी नहीं थी, अश्व संचालित रथ थे। धन का प्रतीक गौ धन था। लक्ष्मी सूक्त में शक्ति के विषय में कहा गया है कि

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने

प्रिय शिष्य! धन और श्री में, श्री ऊपर है जैसे शरीर का रथी मन है वैसे ही धन का रथी श्री है, श्री सर्वोच्च है।

वेदों में स्पष्ट कहा गया है कि जो व्यक्ति धन से सम्पन्न है वह महान् नहीं है, जो गुणों से सम्बन्ध है। वही व्यक्ति महान् शक्ति से सम्पन्न है।

गुरु पूर्णिमा है, गुरु से आप आशीर्वाद के आकांक्षी है, जीवन में धन आना चाहिये, लेकिन सदैव याद रखना मनुष्य की ख्याति धन से नहीं श्री से होती है।

धन तो कैसे भी आ सकता है, सही-गलत दोनों मार्गों से आता है लेकिन श्री हमेशा शुभ पथ को चुनता है और श्री के पथ पर चलने वाला व्यक्ति कभी अंहकारी नहीं होता, सदैव आभारी रहता है। हे ईश्वर मैं जीवन में शुभपथ पर चलूं।

यज्ञ करते है हम तो अंत में नारियल अर्थात् श्रीफल डालते है क्योंकि श्री परिवर्तन का सूचक है।

कुछ नया होगा, कुछ बदलाव होगा।

अब एक छोटी सी बात करना चाहता हूं। आप सबसे अधिक किस बात की चिन्ता करते है। धन की, स्वास्थ्य की, संतान की।

पहला सुख क्या है? पहला सुख निरोगी काया। दूजा सुख घर में माया अर्थात् लक्ष्मी और अब आज गुरु पूर्णिमा

है तो लक्ष्मी का अर्थ समझों श्री का वास है।

स्वास्थ्य की बात कर रहा हूं, निरोगी काया।

आज आपसे एक प्रश्न पूछता हूं...

क्या तुम स्वस्थ रहना चाहते हो, मैं तुम्हें महामृत्युंजय दीक्षा के साथ-साथ एक संकल्प भी चाहता हूं। तुम उस संकल्प को पूरा करो - इससे पहले एक बात सुनों -

एक बार, एक व्यक्ति ने कहा कि गुरु जी मुझे स्वस्थ रहने का कोई उपाय बताओं। मैंने कहा जरूर बताऐंगे। सदैव स्वस्थ रहना चाहते हो? मैंने कहा कितनी उम्र है? बोला 35 साल। पत्नी भी साथ थी, गुरु जी मुझे भी उपाय बताओं। उसकी उम्र होगी 32-33 साल। मैंने पूछा, बच्चे हो गये, खुशी-खुशी बोली दो है - एक लड़का-एक लड़की। मैंने कहा एक ही उपाय है, आज जो तुम लोगों ने सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहन रखें है, यदि यही वस्त्र 55 साल की उम्र में भी आप पहन सको तो आप स्वस्थ हो। हर साल पेट का घेरा बढ़ता जाये, कमर का घेरा बढ़ता जाये, गर्दन मोटी होती जाये और हर साल महंगे-महंगे नये-नये कपड़े सिलवाने पड़े तो समझ जाना आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

35 साल में जितना वजन है, 70 साल तक उतना ही वजन कायम रखना। 2-4 किलो कम हो जाये तो बहुत अच्छी बात है, जो कपड़े अभी पहनने लायक है, उसी फिटिंग के कपड़े 60 साल में भी काम आने चाहिये।

व्यर्थ का कपड़ों का भी खर्च बचेगा, लक्ष्मी भी व्यर्थ की कपड़ों पर व्यय नहीं होगी और स्वस्थ भी रहोगे। यही सबसे बड़ी आरोग्य दीक्षा है।

जीवन आपका है, आप विचार कर लेना।

अब बताओं, स्वास्थ्य के प्रति आपका ऐसा रुझान रहना चाहिये या नहीं रहना चाहिये।

एक बार एक भक्त के सपने में भगवान आएं। उन्होंने पूछा कि भक्त तुम जो दिन रात पूजा-पाठ करते थे, उसका फल तो तुम्हें मिल गया। धन है, सत्ता है, संतान है अब और क्या चाहते हो?

भक्त ने भगवान से कहा कि धन तो है, लेकिन मैं चाहता हूं कि मेरी बुद्धि हमेशा धन के सदुपयोग में लगी रहे।

धन का अभिमान नहीं हो मुझे, बल्कि धन को मैं श्रीपथ, श्रेय पथ पर ले जाऊं, संतान सन्मार्ग का चयन करें तथा धन का उपयोग जीवन को शुभ के रास्ते पर ले जाने के लिए करूं।

भगवान प्रसन्न होकर बोले तुम फल नहीं बल्कि श्रीफल चाहते हो।

श्री की आवश्यकता हर पथ पर पड़ती है तथा जो भी मुझसे श्री हेतु प्रार्थना करेगा, मैंने उसे श्री का आशीष देने का संकल्प लिया है।

हमारे जीवन में श्री अर्थात् नेक भावना, गुण, अच्छाई, परोपकार यह क्रम निरन्तर चलते रहना चाहिये।

जीवन यज्ञ में हमें श्री की प्राप्ति हो

देवता और राक्षस में क्या अन्तर है। राक्षस वह है जो परोपकार का प्रति उत्तर नहीं देता

है। सिर्फ स्वयं का ही भला चाहता है।

मनुष्य वह है जो परोपकार का उतना ही प्रति उत्तर देता है जितना आवश्यक है। इसे आपकी भाषा में कहते है हिसाब बराबर करना कहते है।

तुने मेरे लिये इतना किया, मैं तेरे लिये इतना कर देता है।

देवता वे है जो सदैव परोपकार की मशाल जलाये रखते है।

आपने देखा होगा कि - जब ऑलम्पिक शुरु होता है तो सूर्य की किरणों से एक मशाल जलाई जाती है और आगे एक के बाद एक दूसरे को मशाल थमाते है।

आप सभी पूर्ण होना चाहते है। इसके लिये साथ-साथ चलना पड़ता है। यह मार्ग आसान नहीं है।

सबके साथ-साथ चलते हो तो सबसे धीरे चलने वाले की स्पीड़ पूरे ग्रुप की स्पीड़ बन जाता है।

वैष्णों देवी की चढ़ाई में देखा होगा। यदि कोई धीमे चल रहा है तो पूरे ग्रुप की स्पीड़ धीरे हो जाती है। इस गति को तेज करना है, कोई धीरे नहीं रहे, सब उन्नति करे।

धीरे वाले को तेज चलाना है, सहयोग कर।

इसलिये गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर शिष्य गुरु से मिलने आता है, पूर्ण बनने के लिये शक्ति युक्त बनने के लिये।

गुरु पूर्णिमा पर आपके लिये भी मेरा संदेश है - पूर्णता से युक्त होकर पूरा निखिल मंत्र विज्ञान परिवार एक साथ चलेगा तो यह क्रांति होगी, सामाजिक क्रांति होगी, आर्थिक बदलाव होगा।

आप चिन्ता मत करो, चिन्तन करो। गुरु शिष्य की हर कमी को, हर लेते है।

यो गुरुः स शिवः प्रोक्तो यः शिवः स गुरुः स्मृतः।

गुरु की शक्ति शिष्य को सिंचती है और गुरु का कार्य है शिष्य को पूर्ण करना इसलिये गृरु मातृ स्वरूप है और भाव भरी प्रार्थना है -

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

- परम पूज्य गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

(श्रीविद्या सायुज्य जगद्‌गुरु श्रीकृष्ण तत्व गुरु पूर्णिमा महोत्सव - 2024)

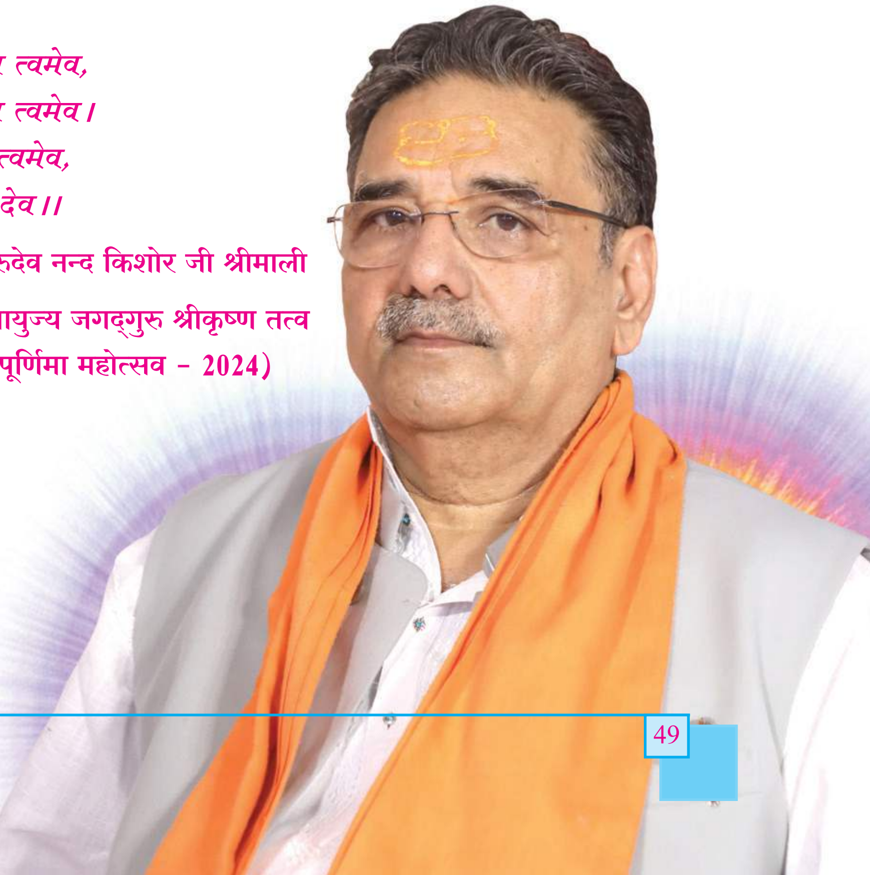

कलहपूर्ण वातावरण में स्वयं को सुरक्षित रखने की कला

जीवन में हर व्यक्ति शांति और सुख की कामना करता है। शायद ही कोई ऐसा होगा जिसे शांति प्रिय न हो। फिर भी यह एक सच्चाई है कि संसार में बहुत कम घर ऐसे होते हैं जो पूरी तरह कलह से मुक्त हों।

अधिकांश घरों में कलह किसी बड़े कारण से नहीं, बल्कि बहुत छोटी-छोटी बातों से जन्म लेती है और धीरे-धीरे वही बातें घर के वातावरण को बोझिल बना देती हैं।

अक्सर ऐसा होता है कि घर का कोई एक सदस्य अधिकतर पिता अनजाने में पूरे घर का माहौल कलेशी बना देते हैं।

कार्यालय से थके हुए लौटे पिता, बाहर की चिंता और तनाव घर के भीतर ले आते हैं। चाय जरा देर से मिल गई, टीवी की आवाज अधिक हो गई, बच्चे जोर से हंस दिए और बात अचानक तानों में बदल जाती है।

'इस घर में किसी को समझ नहीं है।'

'दिनभर मेहनत हम करें और यहां किसी को कद्र नहीं।'

बात चाय या टीवी की नहीं होती, पर शब्दों का भार पूरे घर पर पड़ता है। मां चुप हो जाती है, बच्चे सहम जाते हैं, और घर जो विश्राम का स्थान होना चाहिए, तनाव का क्षेत्र बन जाता है।

कई बार अनुशासन के नाम पर हर बात पर टोकना शुरू हो जाता है।

'लाइट क्यों जल रही है?'
'मोबाइल हाथ में क्यों है?'
'इतना हंस क्यों रहे हो?'

इन प्रश्नों में चिंता कम और नियंत्रण अधिक होता है। धीरे-धीरे घर संवाद का स्थान नहीं रह जाता, बल्कि निर्देशों और नाराज़गी का केन्द्र बन जाता है।

जब कोई व्यक्ति लम्बे समय तक ऐसे कलहपूर्ण वातावरण में रहता है, तो उसका स्वभाव भी प्रभावित होने लगता है। वह या तो चिड़चिड़ा हो जाता है या भीतर ही भीतर टूटने लगता है। कलह हमारी मानसिक ऊर्जा को क्षीण करता है और हमारे आत्मविश्वास तथा आंतरिक संतुलन को धीरे-धीरे खा जाता है।

स्वाभाविक है कि मन यह चाहता है कि ऐसे वातावरण से दूर चला जाए। पर व्यवहार में यह सदैव संभव नहीं होता। क्योंकि कलह करने वाला व्यक्ति कोई बाहरी नहीं, बल्कि हमारा अपना ही होता है पिता, जीवन साथी, भाई या कोई निकट संबंधी जिसे हम न तो छोड़ सकते हैं और न ही उससे पूर्णतः अलग हो सकते हैं।

ऐसी स्थिति में प्रश्न यह नहीं रह जाता कि सामने वाले को कैसे बदला जाए, बल्कि यह हो जाता है कि हम स्वयं को कैसे बचाएं?

उत्तर है - कलह को अपनी सोच से अलग करना। क्योंकि जैसा हम सोचते हैं, वैसा ही हम बनते चले जाते हैं।

अष्टावक्र गीता में अष्टावक्र, राजा जनक की जिज्ञासा का शमन करते हुए कहते हैं -

मुक्ताभिमानी मुक्तो हि बद्धो बद्धाभिमान्यपि।
किंवदन्तीह सत्येयं या मतिः सा गतिर्भवेत्।।

अर्थात मनुष्य वास्तव में वही है, जैसा वह अपने को

कलह मूलतः बाहरी टकराव नहीं, बल्कि मन के भीतर पैदा हुई असंतुलित ऊर्जा का प्रकट रूप है। यह अक्सर शब्दों से शुरू होती है, पर धीरे-धीरे भावनाओं, संबंधों और वातावरण को ग्रसित कर लेती है।

लंबे समय तक कलह में रहने से व्यक्ति या तो आक्रामक हो जाता है या भीतर ही भीतर स्वयं को खोने लगता है। सबसे बड़ा खतरा यह है कि कलह संक्रामक होती है जिससे हम पीड़ित होते हैं, अनजाने में वही स्वर और वही कठोरता हम भी अपना लेते हैं। तब संघर्ष बाहरी न रहकर हमारी पहचान का हिस्सा बन जाता है।

कलह का वास्तविक समाधान सामने वाले को बदलने में नहीं, बल्कि अपनी प्रतिक्रिया, दृष्टि और चेतना को स्थिर रखने में है।

– सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली।

मानता है। जो स्वयं को मुक्त मानता है, वह मुक्त हो जाता है, और जो स्वयं को बंधा हुआ मानता है, वह बंधन में ही रहता है। जैसी बुद्धि होती है, वैसी ही गति बन जाती है।

जीवन में हम वही बन जाते हैं, जैसा हम सोचते हैं। हमारा चिंतन ही हमारा ईश्वर है। हम वही प्राप्त करते हैं, जिसकी आकांक्षा हम भीतर से करते हैं। हम बंधे हैं या मुक्त यह बाहरी परिस्थितियां नहीं, बल्कि हमारा चिंतन तय करता है। और वही चिंतन धीरे-धीरे हमारा सत्य बन जाता है।

यह एक अत्यंत क्रांतिकारी सत्य है दो धार वाली तलवार की भांति जिसके प्रति सदा सजग रहना आवश्यक है। कलहपूर्ण वातावरण में सबसे बड़ा खतरा यह होता है कि हम अनजाने में उसी स्वर, उसी कठोरता और उसी असंतुलन को अपना लेते हैं, जिससे हम पीड़ित हैं। भीतर लगातार एक मानसिक बहस चलती रहती है क्या कहना था, क्या कह दिया, क्या उत्तर देना चाहिए था। धीरे-धीरे हमारी ऊर्जा उसी संघर्ष में नष्ट हो जाती है।

इसीलिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि कलह के बीच रहते हुए भी अपने व्यक्तित्व, अपनी सहजता और अपने आंतरिक संतुलन को कैसे सुरक्षित रखा जाए?

पहला सूत्र है कि – हर संघर्ष व्यक्तिगत नहीं होता

अक्सर पिता जो कठोर बोलते हैं, वह द्वेष से नहीं, बल्कि अपने भीतर की असफलताओं, भय और दबाव से बोलते हैं। यह समझ आते ही क्रोध की तीव्रता कम हो जाती है। हर बात को दिल पर लेना आवश्यक नहीं होता।

दूसरा सूत्र है – प्रतिक्रिया और उत्तर का अंतर समझना

प्रतिक्रिया तुरन्त होती है और आग में घी का काम करती है। उत्तर विवेक से आता है और कई बार मौन, सबसे शांत और प्रभावशाली उत्तर बन जाता है।

तीसरा है – अपने अधिकार क्षेत्र को पहचानना

हम दूसरों का स्वभाव नहीं बदल सकते, पर अपनी सोच, अपनी वाणी और अपनी प्रतिक्रिया अवश्य बदल सकते हैं। यहीं से संतुलन आरंभ होता है।

चौथा है – भावनात्मक दूरी, संवेदनहीनता नहीं है

हर कटु शब्द को भीतर उतार लेना आत्महानि है। कुछ बातों को वहीं छोड़ देना, स्वयं की रक्षा करना है।

पांचवां उपाय है – नियमित आत्म चिंतन और साधना

जब बाहर अशांति हो, तब भीतर का दीपक और तेज़ जलाना पड़ता है। ध्यान, जप, प्रार्थना या स्वाध्याय के माध्यम से।

छठा – हर युद्ध लड़ना आवश्यक नहीं

कुछ स्थितियों में पीछे हट जाना, स्वयं को अलग कर लेना कायरता नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता है।

और अंत में स्मरण रखें

कलह के बीच शांत रह पाना कोई साधारण बात नहीं है। यह स्वयं में एक साधना है। जिसने अपने भीतर संतुलन साध लिया, उसके लिए बाहरी कलह केवल एक घटना रह जाती है उसकी पहचान नहीं।

वसंतोत्सव : 4 मार्च 2026 से 2 अप्रैल 2026

जहां शीत टूटता है, वहीं वसंत जन्म लेता है...
शीत ठहराव चाहता है, वसंत प्रवाह...
शीत संरक्षण है, वसंत परिवर्तन...

शीत और वसंत शत्रु नहीं हैं। शीत तैयारी है, वसंत प्रसव, शीत तप है, वसंत फलन। यदि केवल शीत हो, तो जीवन जम जाए यदि केवल वसंत हो, तो जीवन बिखर जाए। इसी संतुलन में सृष्टि चलती है, इसी द्वंद्व में जीवन सांस लेता है।

शीत को अपने ऊपर अभिमान था, हो भी क्यों नहीं वह शिव को प्रिय था। शिव की तरह वह भी श्वेत था और शिव की तरह ही वह संयमित था। उसके आने पर उछलती-कूदती नदी भी हिम-शीतल बनकर रुक जाती थी। सब कुछ जम जाता था शांत और निर्विकार। बर्फ की चादर ओढ़े प्रकृति निस्तब्ध और निर्विकार हो जाती थी।

जैसा कि होता है, अंत से ही आरंभ होता है। शिव ने जिस कामदेव को जला दिया था, वही उनके प्रिय शीत का शत्रु था। वह आता और निर्विकार हुई प्रकृति में विकार आ जाता। यह विकार दोष नहीं था, वह विकार जीवन की गति था। विकार ही वसंत है, जो जीवन को बदल देता है, पूरा का पूरा बदल देता है।

ऐसा ही है वसंत, क्योंकि वही आरंभ है। उसके आते ही जमी हुई नदियां पिघलने लगती हैं। वह घास, जिसे बर्फ ने जकड़ दिया था, वह भी पिघल जाती है; उसमें कोपलें फूट पड़ती हैं। वृक्षों में नई कोंपलें आती हैं, चारों ओर हरियाली छा जाती है। कोयल कूक उठती है, नायिका के हृदय में हूक उठती है। सरसों के खेतों में सुंदर फूल खिल उठते हैं।

यही वसंत की महिमा है कि सब कुछ बदलने लगता है।

शीत और वसंत की यह कशमकश केवल ऋतुओं की नहीं, अस्तित्व की भी कशमकश है।

शीत ठहराव चाहता है, वसंत प्रवाह...

शीत संरक्षण है, वसंत परिवर्तन...

शीत कहता है - 'रुको। स्थिर रहो। जो जैसा है, वैसा ही बना रहने दो। शांत रहो, निर्विकार रहो, किसी स्पंदन की आवश्यकता नहीं।'

और वसंत उत्तर देता है - 'यदि सब कुछ रुक गया, तो जीवन कहां बचेगा? यदि स्पंदन नहीं, तो श्वास किस काम की?'

शीत का सौंदर्य मौन में है। वह सब कुछ ढंक देता है दोष भी, गुण भी। वह पीड़ा को भी शांति का नाम दे देता है।

उसकी श्वेतता भीतर-भीतर जड़ता रचती है। सब कुछ सुरक्षित तो लगता है, पर जीवित नहीं।

वसंत उस सुरक्षा को तोड़ता है। वह बर्फ की चादर हटाता है, निर्ममता से नहीं, पर अनिवार्यता से। वसंत कहता है - **'अब बहुत हो गया ठहराव, अब गति आवश्यक है।'**

इस संघर्ष में शीत आहत होता है। उसे लगता है कि उसका संयम, उसकी तपस्या, उसकी श्वेत पवित्रता को अपमानित किया जा रहा है।

पर वसंत जानता है संयम यदि सड़ जाए, तो वह तप नहीं, बोझ बन जाता है। इसलिए वसंत आता है। वह जमी हुई नदियों से कहता है 'बहना सीखो' वह वृक्षों से कहता है 'जो भीतर दबा है, उसे बाहर लाओ।' वह धरती से कहता है **'अब गर्भ धारण करो।'**

और शीत चाहकर भी उसे रोक नहीं पाता, क्योंकि शीत स्वयं जानता है उसका भी प्रयोजन पूरा हो चुका है। यही इस कशमकश का रहस्य है

शीत और वसंत शत्रु नहीं हैं। शीत तैयारी है, वसंत प्रसव, शीत तप है, वसंत फलन। यदि केवल शीत हो, तो जीवन जम जाए यदि केवल वसंत हो, तो जीवन बिखर जाए। इसी संतुलन में सृष्टि चलती है, इसी द्वंद्व में जीवन सांस लेता है।

और जब-जब जीवन में सब कुछ ठहर जाए, समझ लेना वसंत आने ही वाला है। हमारा जीवन भी ऋतु की भांति है। जैसे शीत ऋतु में सब कुछ शांत हो जाता है, वैसे ही जीवन में भी कभी-कभी सब कुछ रुका हुआ प्रतीत होता है।

शीत ऋतु से ठिठुरे हुए प्राणियों में नवजीवन का संचार वसंत करता है। वसंत केवल एक ऋतु का नाम नहीं है, बल्कि यह अपने भीतर आगमन, विस्तार और उल्लास का गूढ़ अर्थ समेटे हुए है।

वसंत शब्द की उत्पत्ति संस्कृत धातु 'वस्' से मानी जाती है। वस् का अर्थ है - निवास करना, ठहरना, प्रकट होना, फैल जाना।

जब यह धातु 'अन्त' प्रत्यय से जुड़ती है, तो बनता है वसन्त अर्थात वह काल जिसमें जीवन, रस और सौंदर्य प्रकट होकर चारों ओर फैल जाता है।

ऋषियों ने इस ऋतु को वसंत इसलिए कहा क्योंकि इसी समय प्रकृति में जीवन का वास होता है। वृक्षों में नवजीवन आकर बस जाता है, पुष्पों में सुगंध स्थिर होकर फैलती है और मनुष्य के मन में उल्लास निवास करने लगता है।

पौराणिक दृष्टि से **वसंत को कामदेव का मित्र कहा गया है। जहां कामदेव प्रेम की चिंगारी हैं, वहीं वसंत वह वातावरण है जिसमें प्रेम पनपता और टिकता है। वसंत का आगमन उल्लास, संगीत और सौंदर्य के साथ जुड़ा है। कोयल की कूक, आम्र-मंजरियों की सुगंध, रंग-बिरंगे पुष्प, ये सब प्रेम को केवल जन्म नहीं देते, उसे टिकाते भी हैं। वसंत सिखाता है कि प्रेम केवल आवेग नहीं, एक लय है; केवल आकस्मिक नहीं, एक क्रमिक प्रस्फुटन है।**

इस प्रकार वसंत और कामदेव का संबंध हमें यह बोध कराता है कि प्रेम के लिए केवल भावना पर्याप्त नहीं उसके लिए अनुकूल परिस्थिति, कोमलता और स्वीकार का वातावरण भी उतना ही आवश्यक है। जहां कामदेव हृदय में अग्नि प्रज्वलित करते हैं, वहीं वसंत उस अग्नि को दीपक बना देता है जो न जलाता है, न बुझता है, केवल प्रकाश देता है।

इसलिए कहा गया - **प्रेम बिना वसंत के नहीं ठहरता, और वसंत बिना प्रेम के अधूरा है।**

एक सांकेतिक अर्थ यह भी है कि - **शीत ऋतु मन की जड़ता है ग्रीष्म संघर्ष है, वर्षा करुणा है और वसंत चेतना का उत्सव है।**

इसलिए वसंत का नाम केवल मौसम नहीं बताता, बल्कि यह संकेत देता है - अब जीवन रुकने नहीं, बहने आया है। अब सौंदर्य छिपने नहीं, प्रकट होने आया है। यही कारण है कि भारतीय परंपरा में वसंत को ऋतुराज कहा गया शुभ आरंभों की ऋतु माना गया और ज्ञान, कला, प्रेम तथा साधना का अनुकूल काल स्वीकार किया गया

वसंत नाम नहीं, जीवन के पुनः जागरण की घोषणा है

अंततः शीत और वसंत का द्वंद्व हमें संतुलन सिखाता है। केवल शीत हो तो जीवन जम जाता है, केवल वसंत हो तो जीवन बिखर जाता है। भारतीय दृष्टि में यही कारण है कि वसंत को ऋतुराज कहा गया क्योंकि वह तप के बाद फलन का, मौन के बाद गीत का और ठहराव के बाद प्रवाह का प्रतीक है। जब जीवन में सब कुछ रुका हुआ लगे, तब उसे अंत नहीं समझना चाहिए; वह संकेत है कि भीतर कहीं वसंत जन्म ले चुका है और शीघ्र ही जीवन को फिर से बहना है।

वसंत केवल सुखद अनुभूति नहीं है; वह साहस भी मांगता है। जमी हुई बर्फ का पिघलना आसान नहीं, उसमें टूटन भी होती है। इसी तरह जीवन में परिवर्तन भी कभी-कभी असहज होता है, पुराने ढाँचों को तोड़ता है, सुरक्षित दिखने वाले आवरणों को हटाता है। पर यही प्रक्रिया जीवन को पुनः जीवंत बनाती है। प्रेम, सृजन, कला और चेतनायें सभी वसंत के गुण हैं। वे तभी फलते-फूलते हैं जब मनुष्य जोखिम उठाकर स्वयं को अभिव्यक्त करता है।

वसंतोत्सव : 4 मार्च 2026 से 2 अप्रैल 2026

रंग पंचमी – 8 मार्च 2026

रंग त्रयोदशी – 17 मार्च 2026

रम्भा साधना

वसन्त : जीवन का उत्सव, सौन्दर्य की अभिव्यक्ति

जीवन का उत्स काल अर्थात् जिस काल में मनुष्य अपने जीवन का निर्माण सतत् रूप से करता रहता है, वह 21 से 50 वर्ष के मध्य का होता है। पचास वर्ष के बाद किसी नवीन भाव को स्वीकार करने की चेतना अथवा किसी नये कार्य को हाथ में लेने की क्षमता कम होने लग जाती है।

जीवन का यह मध्य काल केवल शारीरिक व मानसिक क्षमता की दृष्टि से ही नहीं वरन् पचास वर्ष के पश्चात के जीवन को भी क्षमतावान बनाए रखने की दृष्टि से महत्वपूर्ण काल होता है।

जीवन के ऐसे ही क्षणों में ऐसी विशेष साधना को सम्पन्न कर लेना चाहिए, वह होती है अप्सरा साधना, क्योंकि अप्सरा साधना से शरीर को जो ऊर्जा, और शारीरिक ऊर्जा से भी अधिक आवश्यक मानसिक उल्लास प्राप्त होता है वह पूरे जीवन के लिए अनेक रूपों में लाभप्रद सिद्ध होता है।

यह एक अनुभूत तथ्य है कि यदि अप्सरा साधना को सम्पन्न करने के उपरान्त अन्य साधनाओं को प्रारम्भ किया जाए तो उनमें अपेक्षाकृत अधिक तीव्रता से सफलता प्राप्त होने की स्थिति बन जाती है क्योंकि अप्सरा साधना करने के पश्चात निश्चय ही साधक के शरीर में ऐसे परिवर्तन आ जाते हैं, जो उसे आन्तरिक रूप से नित्य यौवनवान बनाए रखने में सहायक सिद्ध होते हैं।

जीवन सौंदर्य से परिचित होकर ही उत्सव मनाया जा सकता है। इसके लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है, बल्कि अपने अंदर झांकना है और तृप्त हो जाना है। जीवन के इस सौंदर्य में एक सुमधुर संगी (अनहद नाद) भी है, साथ ही एक थिरकन है, स्पंदन है, नृत्य है और असली सौन्दर्य को जानने वाले ही इस नृत्य के साथ अपनी लय जोड़कर नृत्य का आनंद उठा सकते हैं, झूम सकते हैं। चूंकि जीवन शाश्वत है, रसमय है, संगीतमय है, विलक्षण है और नृत्य से परिपूर्ण है, इसलिए भीतर तो जीवन का उत्सव स्वयं हो ही रहा है। इसका आयोजन हमें नहीं करना है, सिर्फ उस उत्सव के साथ जुड़ जाना है।

रम्भा-उच्चतम अप्सरा

उच्चकोटि की अप्सराओं की श्रेणी में रम्भा अप्सरा का प्रथम स्थान है, जो शिष्ट और मर्यादित मानी जाती हैं, सौन्दर्य की दृष्टि से अनुपमेय कही जा सकती हैं। शारीरिक सौन्दर्य, वाणी की मधुरता नृत्य, संगीत, काव्य तथा हास्य और विनोद यौवन की मस्ती, ताजगी, उल्लास और उमंग ही तो रम्भा हैं, जिसकी साधना से वृद्ध व्यक्ति भी यौवनवान होकर सौभाग्यशाली बन जाता है। जिसकी साधना से योगी भी अपनी साधनाओं में पूर्णता प्राप्त करते हैं। इच्छित पौरुष एवं सौन्दर्य प्राप्ति के लिए प्रत्येक पुरुष एवं नारी को इस साधना में अवश्य रुचि लेनी चाहिए। सम्पूर्ण प्रकृति-सौन्दर्य को समेट कर यदि साकार रूप दिया जाय तो उसका नाम रम्भा होगा। सुन्दर मांसल शरीर, उन्नत एवं सुडौल वक्षस्थल, काले, घने और लम्बे बाल, सजीव एवं माधुर्य पूर्ण आंखों का जादू, मन को मुग्ध कर देने वाली मुस्कान, दिल को गुदगुदा देने वाला अंदाज, यौवन भार से लदी हुई रम्भा अप्सरा, जिसकी देह यष्टि से प्रवाहित दिव्य गंध से आकर्षित देवता भी जिसके सानिध्य के लिए लालायित देखे जाते हैं।

- सुन्दरतम वस्त्रालंकारों से सुसज्जित चिरयौवना, जो प्रेमिका या प्रिया के रूप में साधक के समक्ष उपस्थित रहती हैं, साधक को सम्पूर्ण भौतिक सुख के साथ मानसिक ऊर्जा, शारीरिक बल एवं वासन्ती सौन्दर्य से परिपूर्ण कर देती हैं।
- रम्भा अप्सरा साधना के सिद्ध होने पर वह साधक के साथ छाया की तरह जीवन भर सुन्दर और सौम्य रूप में रहती हैं तथा उसके सभी मनोरथों को पूर्ण करने में सहायक होती हैं।
- रम्भा साधना सिद्ध होने पर सामने वाला व्यक्ति स्वयं खिंचा चला आए, यही तो चुम्बकीय व्यक्तित्व है।
- इस साधना से साधक के शरीर से रोग, जर्जरता एवं वृद्धता समाप्त हो जाती है।
- यह जीवन की सर्वश्रेष्ठ साधना है; जिसे देवताओं ने सिद्ध किया, इसके साथ ही ऋषि-मुनि, योगी संन्यासियों आदि ने भी इसे सिद्ध किया है, यह सौम्य साधना है।
- इस साधना से प्रेम और समर्पण की कला व्यक्ति में स्वतः प्रस्फुटित होती है क्योंकि जीवन में यदि प्रेम नहीं होगा तो व्यक्ति तनावों से, बीमारियों से ग्रस्त होकर समाप्त हो जाएगा। प्रेम की अभिव्यक्ति करने का सौभाग्य और सशक्त माध्यम है रम्भा साधना। जिन्होंने रम्भा साधना नहीं की है, उनके जीवन में प्रेम नहीं है, तन्मयता नहीं है, प्रफुल्लता भी नहीं है।

साधना-विधान

सामग्री - **प्राण प्रतिष्ठित रम्भोत्कीलन यंत्र, अप्सरा माला, सौन्दर्य गुटिका तथा साफल्य मुद्रिका।** यह रात्रिकालीन 7 दिन की साधना है। इस साधना को **वसंतोत्सव, किसी भी पूर्णिमा को, शुक्रवार को अथवा किसी सिद्धि मुहूर्त** से प्रारंभ करें।

साधना प्रारंभ करने से पूर्व साधक को चाहिए कि स्नान आदि से निवृत्त होकर अपने सामने चौकी पर गुलाबी वस्त्र बिछा लें, पीले या सफेद किसी भी आसन पर बैठें, आकर्षक और सुन्दर वस्त्र पहनें, पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें, घी का दीपक जला लें, सामने चौकी पर एक थाली या प्लेट रख लें, दोनों हाथों में गुलाब की पंखुड़ियां लेकर रम्भा का आह्वान करें।

॥भो रम्भे आगच्छ पूर्ण यौवन संस्तुते॥

यह आवश्यक है कि यह आह्वान कम से कम 101 बार अवश्य हो। प्रत्येक आह्वान मंत्र के साथ एक-एक पंखुड़ी थाली में रखते जाएं इस प्रकार आह्वान से पूरी थाली पुष्प-पंखुडियों से भर दें।

अब **अप्सरा माला** को पंखुडियों के ऊपर रख दें इसके बाद अपने बैठने के आसन पर और अपने ऊपर इत्र छिड़कें। **रम्भोत्कीलन यंत्र** को पुष्प आसन पर स्थापित करें। गुटिका को यंत्र के दायीं ओर तथा **साफल्य मुद्रिका** को यंत्र के बांयीं ओर स्थापित करें। सुगन्धित अगरबत्ती एवं घी का दीपक साधनाकाल तक जलते रहना चाहिए।

सबसे पहले गुरु पूजन और गुरु मंत्र का जप कर लें। फिर यंत्र तथा अन्य साधना सामग्रियों का पंचोपचार से पूजन सम्पन्न करें। इसके बाद बायें हाथ में गुलाबी रंग से रंगे हुए चावल रखें, और निम्न मंत्रों को बोलकर यंत्र पर चढ़ावें।

ॐ दिव्यायै नमः।
ॐ वागीश्वयै नमः।
ॐ सौन्दर्य प्रियायै नमः।
ॐ यौवनप्रियायै नमः।
ॐ सौभाग्यदायै नमः।
ॐ आरोग्य प्रदायै नमः।
ॐ प्राणप्रियायै नमः।
ॐ ऊर्जस्वलायै नमः।
ॐ देवप्रियायै नमः।
ॐ ऐश्वर्यप्रदायै नमः।
ॐ धनदायै रम्भायै नमः।

इसके बाद उपरोक्त **अप्सरा माला** से निम्न मंत्र का 5 माला प्रतिदिन जप करें।

मंत्र

॥ॐ ह्रीं रं रम्भे! आगच्छ आज्ञां पालय
मनोवांछितं देहि ऐं ॐ स्वाहा॥

प्रत्येक दिन अप्सरा-आह्वान करें और प्रत्येक दिन गुलाब की दो मालाएं रखें। एक माला स्वयं पहन लें, दूसरी माला को यंत्र के पास रखें, जब भी ऐसा आभास हो कि किसी का आगमन हो रहा है अथवा सुगंध एक दम बढ़ने लगे, अप्सरा का बिम्ब नेत्र बन्द होने पर भी स्पष्ट होने लगे तो दूसरी माला सामने रखे यंत्र पर पहना दें।

7 दिन की साधना में प्रत्येक दिन नये-नये अनुभव होते हैं चित्त में सौन्दर्य भाव बढ़ने लगता है। कई बार तो रूप में अभिवृद्धि स्पष्ट दिखाई देती है। स्त्रियों द्वारा इस साधना को सम्पन्न करने कायाकल्प हो जाता है।

सातवें दिन साधना की पूर्णता के पश्चात् मुद्रिका को शिव मन्दिर में अर्पित कर दें, शेष सभी सामग्रियों को अगले दिन जल में प्रवाहित कर दें। पूर्ण मनोयोग से साधना करने पर मनोकामना अवश्य पूर्ण होती ही है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 550/-

कामदेव-रति अनंग दीक्षा

यह संसार आनन्द के लिये बना है, प्रेम के लिये बना है, आकर्षण और सौन्दर्य रस के लिये बना है, योग के साथ भोग के लिये बना है और ये तभी संभव है जब योग के साथ भोग भी जीवन में पूर्णता के साथ हो। काम और रति का अर्थ केवल सम्भोग नहीं अपितु काम का अर्थ मोह, इच्छा, सौन्दर्य, आकर्षण, सामीप्य, भोग, स्वाद और कामना है, रति तत्व का अर्थ है - सौन्दर्य, प्रकृति, चंचलता, श्रृंगार, भोग, आकर्षण बताया गया है।

जीवन में उच्चता प्राप्ति के लिये 'काम-रति अनंग तत्व' आवश्यक है, यही हमारे जीवन का आधार है सृष्टि का आधार ही 'प्रकृति' और 'पुरुष' का मिलन है। अनंग तत्व ही जीवन में पूर्ण यौवन प्रदान करता है, जिसमें तेज होता है आकर्षण, अपूर्व आभा होती है।

जीवन में 'काम-रति अनंग तत्व' को समाहित करने हेतु सद्गुरुदेव से 'कामदेव-रति अनंग दीक्षा' ग्रहण करें। इस दीक्षा को प्राप्त कर साधक अपने जीवन में प्रेम, सौन्दर्य, आकर्षण, अप्सरा, सम्मोहन आदि में सिद्धि प्राप्त कर सकता है।

- काम रति अनंग दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-

आपको याद दिलाने के लिये

जनवरी 2026 अंक में प्रकाशित

आपको इस मास ये साधनाएं सम्पन्न करनी हैं
जिनका पूर्ण विवरण पिछले माह जनवरी 2026 में प्रकाशित है

विजय गणपति साधना

माघ शुक्ल पक्ष जया एकादशी - 29 जनवरी 2026
फाल्गुन कृष्ण पक्ष विजया एकादशी - 13 फरवरी 2026

विघ्नों के समापन के लिये ही शास्त्रों में विघ्नहर्ता विजय गणपति की साधना का उल्लेख आया है। विजय गणपति बुद्धि से भ्रम को ज्ञान में आलस्य को चेतना में बदल देते है। विघ्न चाहे बाहरी हो या आन्तरिक इनके समापन के बिना विजय, उद्देश्य प्राप्ति संभव ही नहीं है।

विजय स्वरूप गणपति का यह स्वरूप तीव्र और प्रचण्ड शत्रुहंता होता है। जीवन में कभी भी किसी भी क्षण, किसी भी मोड़ पर कोई भी शत्रु खड़ा हो सकता है। इन पर विजय प्राप्त करने के लिए सदैव आयुधों से सन्नद्ध रहना चाहिए। जिस जीवन में शत्रु बाधा न हो, वह शौर्यपूर्ण जीवन नहीं कहा जा सकता। शत्रु हो और उसका पौरुष के साथ मुकाबला किया जाए, यही इस साधना का मुख्य पक्ष है। यदि इन शत्रुओं का आपको सामना करना है, तो निश्चित रूप से यह साधना आपके लिए उपयोगी है, क्योंकि इस साधना को सम्पन्न कर आप भविष्य में आने वाली शत्रु बाधा से सुरक्षा का पूर्व उपाय कर लेते हैं और दुर्दान्त शत्रुओं पर निश्चित रूप से विजय प्राप्त कर सकते हैं।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 650/-
(जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 11)

विघ्नहर्ता विजय गणपति दीक्षा

माघ शुक्ल पक्ष जया एकादशी - 29 जनवरी 2026
फाल्गुन कृष्ण पक्ष विजया एकादशी - 13 फरवरी 2026

कर्म फल की सिद्धि में सबसे बड़ा संकट विघ्न बाधा ही है, जिसका विघ्नहर्ता गणपति मूल रूप से अंत कर देते है, तदुपरांत हमारे जीवन में विजय भाव का उदय होता है इसीकारण भगवान गणपति को विघ्नहर्त्ता मंगलकारी देव कहा गया है जो विघ्नों का विनाश कर जीवन में पूर्ण विजय प्रदान करते है।

कर्म एक सतत् क्रिया है और बुद्धि व्दारा इन कर्मों को सही मार्ग, सही दिशा में धकेला जाता है। बुद्धि कर्मों की पूर्णता का ईंधन भी है। भगवान गणपति की कृपा से बुद्धियुक्त होकर सही दिशा में किया गया कर्म साधक के जीवन में शुभ-लाभ, ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक होता है।

साधक को भगवान गणपति की कृपा प्राप्त कर अपने कर्मों, उद्देश्यों, लक्ष्यों को सही दिशा में गतिमान करना चाहिये, इस हेतु साधक को सद्गुरुदेव से कृपा स्वरूप 'विघ्नहर्ता विजय गणपति दीक्षा' प्राप्त करनी चाहिये जिससे उसे उसके कर्म का श्रेष्ठ यथोचित फल प्राप्त हो।

- विघ्नहर्ता विजय गणपति दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 13)

महाशिवरात्रि पूजन अभिषेक

(महाशिवरात्रि - 15 फरवरी 2026)

शिव अभिषेक केवल एक पूजा-विधि नहीं है, बल्कि यह शक्ति को शिव से जोड़ने का मार्ग है। अभिषेक का अर्थ है अन्तर में जल रही तपन को शांत करना, मन को निर्मल बनाना, और अहंकार को पिघलाना।

महाशिवरात्रि पर्व पर विशेष रूप से पूजा, साधना, अभिषेक सम्पन्न किया जाता है। महशिवरात्रि पर्व पर पूजा, साधना, अभिषेक प्राण प्रतिष्ठा युक्त साधना सामग्री और शास्त्रों के विधानानुसार सम्पन्न करना चाहिये। महाशिवरात्रि सृष्टि का सबसे बड़ा पर्व है, शक्ति और शिव के समागम का पर्व है।

शिवरात्रि मिलन का प्रतीक है, जब शिव शक्ति का वरण करते हैं और शक्ति यह अनुभव करती है कि उनका शिव उससे दूर नहीं, उसी के भीतर स्थित है। शक्ति कर्म में अग्रसर हो और शिव चित्त में स्थित हों। जीव का लक्ष्य शिव है और शिवरात्रि उस लक्ष्य की स्मरण-रात्रि है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 17)

अर्धनारीश्वर शिव साधना

(फाल्गुन कृष्ण पक्ष - 2 फरवरी 2026 से 17 फरवरी 2026)

शिव चेतना और प्रकृति शक्ति है, दोनों अलग नहीं है, बल्कि एक ही सत्ता के दो पहलू है। सृष्टि के विकास के लिये चेतना और शक्ति प्रत्येक जीवन में होनी आवश्यक है। भगवान शिव का अर्धनारीश्वर स्वरूप चेतना और शक्ति के संगम का स्वरूप है, जीवन की पूर्णता का स्वरूप है जो यह स्पष्ट करता है कि प्रत्येक पुरुष में स्त्री तत्व है और प्रत्येक स्त्री में पुरुष तत्व विद्यमान है।

सृष्टि शिव और शक्तिमय है, शिव और शक्ति एकीकृत होकर ही संसार को पोषित करते है। शिव और शक्ति के एकीकृत स्वरूप से ही मानव जीवन का कल्याण होता है। शिव और शक्ति का अद्धनारीश्वर स्वरूप प्रत्येक दृष्टि से जीवन का कल्याणकारी स्वरूप है। अर्धनारीश्वर स्वरूप में शिव साधक की कामनाओं की पूर्ति करते है, उसके ज्ञान में वृद्धि करते है, आध्यात्मिक उन्नति में वृद्धि करते है। अर्धनारीश्वर शक्ति साधना साधक को भय मुक्त कर, लघु से विराट् की यात्रा सम्पन्न कराती है। फाल्गुन कृष्ण पक्ष में गृहस्थ साधकों व्दारा शिव और शक्ति के सायुज्य अर्धनारीश्वर साधना सम्पन्न करने से जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 750/- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 21)

ललिताम्बा साधना

(माघ पूर्णिमा - ललिताम्बा सिद्धि दिवस - 1 फरवरी 2026)

यह मनुष्य का सौभाग्य ही है कि वह भगवती ललिताम्बा सिद्धि की ओर प्रवृत्त हो पाए, क्योंकि अन्य देवियों की अपेक्षा भगवती ललिताम्बा की साधना अपने आप में उत्कृष्ट और श्रेयस्कर मानी जाती है।

ललिताम्बा साधना सम्पन्न कर इसे सिद्ध करने पर शत्रु स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं और जीवन में उन्हें किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं रहता। यह साधना बुढ़ापे को समाप्त कर पुनः यौवन प्रदान करने में समर्थ है। ललिताम्बा साधना श्रृंगार तत्व और तेज तत्व का संयुक्त रूप है। ललिता की आठ शक्तियां - प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नंदिनी, सुप्रभा एवं विजया साधक को तेजस्विता, पुरुषार्थ एवं सौन्दर्य प्रदान करने वाली हैं। ललिताम्बा साधना के माध्यम से व्यक्ति अपने पूर्व जन्म एवं इस जन्म के दोषों को जानकर, उनमें रह गई त्रुटियों का निराकरण कर अभाव मुक्त जीवन जी सकता है। ललिताम्बा मंत्र जप से शून्य सिद्धि प्राप्त होती है और व्यक्ति सिद्ध योगी भी बन जाता है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 480/- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 27)

हीरक खप्पर साधना

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
2 फरवरी 2026 से 17 फरवरी 2026

गृहस्थ जीवन कर्म के साथ, भोग, योग और मुक्ति के लिये प्राप्त हुआ है। प्रत्येक मनुष्य की कामना होती है कि वह सुख पूर्वक गृहस्थ जीवन का पालन करें और ईश्वर से जो प्राप्त हुआ है उसे अपनी कर्म शक्ति द्वारा और अधिक विस्तारित करें। गृहस्थ जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप निर्धनता, दरिद्रता ही है। यह भी सत्य है कि सन्तोषी जीवन जीने के लिये उचित मात्रा में धन आवश्यक है। धन को जीवन की प्रवाह शक्ति कहा गया है। जब तक जीवन में धन का प्रवाह रहता है व्यक्ति सन्तुष्ट और आनन्दमय रहता है। धन ऐसी शक्ति है जो आपको शांति और संतोष भी देती है।

हर गृहस्थ चाहता है कि उसके पास प्रचुर मात्रा में धन, सम्पति अवश्य हो और उसका निरन्तर प्रवाह भी हो। जिससे वह परिवार का उचित पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा कर सके और साथ ही दान, धर्म, पुण्य, समाज सेवा और दूसरों को सहयोग भी दे सके।

गृहस्थजनों के जीवन में धन-धान्य और लक्ष्मी के लिये तथा जीवन में दारिद्रय नाश के लिये ही महर्षि वशिष्ठ और उनकी धर्मपत्नी अरुंधति ने शिव और शक्ति की विशेष साधना 'हीरक खप्पर' गृहस्थ व्यक्तियों को प्रदान किया।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 31)

महामृत्युंजय अनुष्ठान

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
2 फरवरी 2026 से 17 फरवरी 2026

महामृत्युञ्जय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम कहा गया है। इस अनुष्ठान में अकाल मृत्यु को समाप्त करने का श्रेष्ठ भाव है और जिस व्यक्ति के जीवन में अकाल मृत्यु या बालघात योग हो, उसके लिए तो महामृत्युञ्जय विधान सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युञ्जय मंत्र अपने आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है तथा सभी ऋषि-मुनियों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यह मंत्र अपने आप में महत्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है। धर्म शास्त्रों में मंत्र शक्ति से रोग निवारण एवं मृत्यु-भय दूर करने तथा अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं, उनमें महामृत्युञ्जय साधना का स्थान सर्वोच्च है।

प्रत्येक साधक को वर्ष में कई-कई बार अपने और अपने परिवार के लिये यह महामृत्युंजय अनुष्ठान अवश्य सम्पन्न करना चाहिये। महामृत्युंजय अनुष्ठान केवल बाधाओं की समाप्ति का स्वरूप नहीं है यह जीवन में रसधार निरन्तर बहती रहे उसका भी स्वरूप है। सरस, आनन्द और प्रेम से युक्त जीवन ही शिव की कृपा का स्वरूप है। नियमित रूप से सम्पन्न करें, महामृत्युंजय मंत्र जप अनुष्ठान।

- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 55)

फरवरी 2026

नक्षत्रों की वाणी

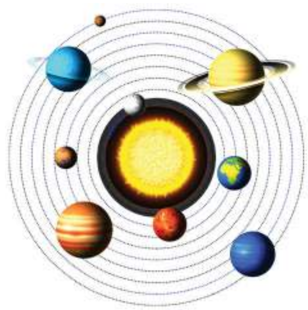

मेष

नवग्रहों की गणना से पता चलता है कि, वर्तमान समय आपके लिये मिश्रित फलकारक है माह के प्रारम्भ में आपको थोड़ी प्रतिकूलता का सामना करना पड़ सकता है। किन्तु बाद में परिस्थिति आपके अनुकूल हो जायेगी किन्तु आप आर्थिक पक्ष को लेकर सावधानी रखें परिवार में व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें अन्यथा क्लेश की स्थिति बन जायेगी। आपके लिये अदालती कार्य में सफलता जरूर शांतिप्रदायक है। आप अनुकूलता हेतु **'ललिताम्बा साधना'** (जनवरी 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथिया - 9, 17, 26, 27 हैं।

वृषभ

आलस्य एक ऐसी चीज है, जिससे व्यक्ति की सफलता भी असफलता में बदल जाती है, इसलिये आज के कार्य को कल पर न टालें और कर्म पथ पर गतिशील रहें। परिवार में किसी के स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। किसी सामाजिक समारोह विवाह इत्यादि में शामिल होने का अवसर प्राप्त होगा जिस कारण मित्रों एवं रिश्तेदारों से मुलाकात होगी। आप अनुकूलता हेतु **'महामृत्युंजय अनुष्ठान'** (जनवरी 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 4, 15, 20, 28 हैं।

मिथुन

समय भाग्योदय कारक है, परिश्रम द्वारा समय का लाभ उठायें। उन्नति केवल योजना बनाने से नहीं होती, परिश्रम द्वारा योजनाओं को साकार करने से होती है। नौकरी क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति कार्य के प्रति लापरवाही न करें अन्यथा उच्च अधिकारी के क्रोध का सामना करना पड़ेगा। परिवार में किसी के स्वास्थ्य को लेकर समय और धन दोनों खर्च हो सकते है। विद्यार्थी वर्ग के लिये समय अनुकूल है। आप अनुकूलता हेतु **'विजय गणपति साधना'** (जनवरी 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 18, 19, 27, 28 हैं।

कर्क

कार्य में जब तक सफलता न मिले, उसे तब तक गोपनीय ही रखना चाहिये। इस माह आय के संसाधन बढ़ाने के लिये नवीन योजनायें बनायेंगे, किन्तु जब तक आपके प्रयास पूर्ण न हों जायें, गोपनीयता बनाये रखें। व्यर्थ के वाद-विवाद से अपने को दूर रखें अन्यथा आपकी उन्नति प्रभावित हो सकती है। साथ ही व्यक्ति के लिये सबसे महत्वपूर्ण उसका परिवार होता है, इसलिये कार्य की व्यस्तता में परिवार की अनदेखी न करें। आप अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'कार्य सिद्धि दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 2, 14, 20, 25 हैं।

सिंह

भावनात्मक निर्णय के लिये कभी-कभी पछताना पड़ता है, इसलिये महत्वपूर्ण निर्णय करते समय भावनाओं की अपेक्षा बुद्धि-विवेक से निर्णय करें। लम्बित कार्य पूर्ण होने से आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी। इस माह व्यर्थ के वाद-विवाद से दूर रहें अन्यथा शांति-संतोष मानसिक अशान्ति में बदल जायेगा। परिवार में हर्ष का वातावरण रहेगा, इस माह स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आप अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'रसेश्वरी मातंगी दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 8, 17, 25, 27 हैं।

कन्या

वर्तमान समय आपके लिये लाभकारी है, व्यापार क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति अपने कार्य विस्तार की जो योजना बना रहे हैं, उसके लिये आपको यात्रा इत्यादि पर जाना पड़ सकता है। व्यापारिक यात्राएं आपके लिये लाभप्रद होगी, अटके धन की प्राप्ति होने से आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। घर परिवार में कोई मांगलिक कार्यक्रम होगा किन्तु आपके लिये उचित रहेगा की धन का अपव्यय करने की अपेक्षा भविष्य के लिये निवेश करें। अनुकूलता हेतु **'कामाख्या साधना'** (अक्टूबर 2025) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 2, 9, 12, 25 हैं।

तुला

बुद्धि-विवेक से समस्याओं का समाधान खोजें, चिन्ता करने से समस्याएं हल नहीं होती उल्टा मन के साथ-साथ स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। रोजगार-व्यापार में सफलतादायक समय है, दूसरे नौकरी क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को पदोन्नति के रूप में लाभ हो सकता है। इस माह बेरोजगार व्यक्तियों के संघर्ष का समय समाप्त हो सकता है। विवाह योग्य युवक-युवती के विवाह का योग है। आप अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'धूमावती दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 4, 12, 18, 22 हैं।

वृश्चिक

आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी, भविष्य की जो योजना है उसके साकार होने से आत्म-विश्वास बढ़ेगा और आप दूगने उत्साह से कार्य करेगें। इस माह आप अपनी वाणी पर नियन्त्रण और संयम भी रखें अन्यथा व्यर्थ के वाद-विवाद और मानसिक अशान्ति का सामना करना पड़ सकता है। विद्यार्थी वर्ग के लिये समय बहुत ही अनुकूल है, यदि आप परिश्रम के साथ कर्म करेगें तो आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होगें। अनुकूलता हेतु **'भुवनेश्वरी दीक्षा'** अवश्य ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 2, 11, 21, 28 हैं।

धनु

माह के प्रारम्भ में आपको थोड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, किन्तु बुद्धि-विवेक के साथ हर परिस्थितियों का सामना करें। कोई नवीन कार्य अभी प्रारम्भ न करें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। माह के अन्त में परिस्थिति एक दम बदल जायेगी धन का आगमन होगा जिससे आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी, मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। विद्यार्थी वर्ग को पूर्ण सफलता प्राप्ति का योग है अनुकूलता हेतु **'शक्तिमय गुरु साधना'** (नवम्बर 2025) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 15, 18, 22, 25 हैं।

मकर

जीवन में सब कुछ दुबारा मिल सकता है, किन्तु समय वापिस नहीं मिलता। अतः समय को व्यर्थ में खराब न करें, अपने कार्य व्यवसाय पर ध्यान दें। व्यापार क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय करने पड़ सकते हैं, निर्णय बुद्धि-विवेक से करें, आगे चलकर इसका आपको लाभ होगा। अविवाहित युवक-युवती के श्रेष्ठ जगह विवाह का योग है। विद्यार्थी वर्ग को भी उनके परिश्रम के अनुरूप सफलता प्राप्त होगी। आप अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'शिव गौरी दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 6, 12, 26, 27 हैं।

✰ **सर्वार्थ सिद्धि योग -** 1, 8, 11, 15, 16, 20, 22, 24, 25, 27 फरवरी/1, 7, 9, 15 मार्च ✰ **अमृत योग -** 11, 20 फरवरी/20 मार्च ✰ **द्विपुष्कर योग -** 16, 24 मार्च ✰ **त्रिपुष्कर योग -** 28 फरवरी ✰ **रविपुष्य योग -** 1 फरवरी/1 मार्च ✰

कुम्भ

क्रोध अग्नि है, जिससे सोचने-समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है। आप क्रोध का त्याग कर, कर्म पर ध्यान दें। आपके परिश्रम के फलस्वरूप आपको लाभ प्राप्त होगा, नौकरी क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को उच्च अधिकारी प्रमोशन प्रदान कर सकते हैं। परिवार में किसी स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी चिन्ता हो सकती है, किन्तु संतान पक्ष को लेकर जो समस्या और चिन्ता चली आ रही थी उसका समाधान होने से प्रसन्नता भी प्राप्त होगी। अनुकूलता हेतु **'विजय गणपति दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 8, 19, 22, 28 हैं।

मीन

नवग्रहों की गणना बताती है कि वर्तमान समय मिश्रित फलकारक है लम्बे समय से लम्बित किसी कार्य के पूर्ण होने से आत्म विश्वास में वृद्धि होगी। व्यवसाय विस्तार के लिये आपकी जो कार्य योजना है, वह सफल होगी। परिवार में व्यर्थ की बात को लेकर क्लेश की स्थिति बन सकती है, साथ ही खान-पान को नियन्त्रित रखते हुऐ स्वास्थ्य का ध्यान रखें। परिवार में अतिथि आगमन से हर्ष का वातावरण रहेगा। आप अनुकूलता हेतु **'महामृत्युंजय अनुष्ठान'** (जनवरी 2026) करें। शुभ तिथियां - 6, 11, 17, 21 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

13	फरवरी	फाल्गुन कृ.-11	शुक्रवार	विजया एकादशी
14	फरवरी	फाल्गुन कृ.-12	शनिवार	शनि प्रदोष
15	फरवरी	फाल्गुन कृ.-13	रविवार	महाशिवरात्रि
17	फरवरी	फाल्गुन कृ.-30	सोमवार	विजया एकादशी
24	फरवरी	फाल्गुन शु.-08	मंगलवार	होलाष्टक
27	फरवरी	फाल्गुन शु.-11	शुक्रवार	आमली एकादशी
03	मार्च	फाल्गुन शु.-15	मंगलवार	होलिका दहन
03	मार्च	फाल्गुन शु.-15	मंगलवार	पूर्णिमा / चन्द्र ग्रहण

काल निर्णय

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं, और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (फरवरी 1, 8, 15, 22) (मार्च 1, 8, 15)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (फरवरी 2, 9, 16, 23) (मार्च 2, 9, 16)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (फरवरी 3, 10, 17, 24) (मार्च 3, 10, 17)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (फरवरी 4, 11, 18, 25) (मार्च 4, 11, 18)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (फरवरी 5, 12, 19, 26) (मार्च 5, 12, 19)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (फरवरी 6, 13, 20, 27) (मार्च 6, 13, 20)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (फरवरी 7, 14, 21, 28) (मार्च 7, 14, 21)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

आज क्या करना है - वराहमिहिर वचन

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जाएंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाए। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

मार्च - 2026

1. भगवान भास्कर को अर्घ्य देकर दिन का आरम्भ करें।
2. **होलाष्टक** की पूर्व संध्या पर **'होली तंत्र साधनाएं'** (पृष्ठ सं. 12) अवश्य सम्पन्न करें।
3. **हालिका दहन** पर **'फेत्कारिणी साधना'** (पृष्ठ सं. 16) तथा **'चन्द्र ग्रहण'** (पृष्ठ सं. 33) के विशेष कल्प में विशिष्ट साधना-दीक्षा सम्पन्न करें।
4. **'बाधा निवारण गुटिका'** (न्यौ. 200/-) का प्रातः पूजन कर दिनभर जेब में रखें, बाधा समाप्त होगी।
5. ***'ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय नमः'*** का प्रातः 108 बार जप करें, लाभ की स्थिति बनेगी
6. **'गणपति आरती'** सम्पन्न करें, कार्य सिद्धि होगी।
7. पीपल के पत्ते पर काले तिल रखकर घर के बाहर रख दें, बाधा समाप्त होगी
8. **रंग पंचमी** के सिद्ध कल्प में सद्गुरुदेव से **'कामदेव रति अनंग दीक्षा'** (पृष्ठ सं. 56) ग्रहण करें।
9. पांच लड्डू किसी चौराहे पर रख दें, संकट टलेगा।
10. प्रातः पांच तेल के दीपक जलायें, धन प्राप्ति होगी।
11. **कालाष्टमी** पर सद्गुरुदेव से **'तंत्र बाधा निवारण'** (पृष्ठ सं. 24) ग्रहण करें।
12. **'गुरु चेतना मंत्र'** की एक माला जप करके ही, घर से बाहर जायें, लाभ प्राप्त होगा।
13. अष्ट गंध का तिलक करके ही घर से बाहर जायें।
14. घर से बाहर निकलते समय 7 काली मिर्च लेकर जायें तथा रास्ते में निर्जन स्थान पर फेंक दें।
15. **पापमोचनी एकादशी** पर सद्गुरुदेव से **'पापांकुशा शमन दीक्षा'** (पृष्ठ सं. 20) ग्रहण करें।
16. भगवान शिव का पंचामृत से अभिषेक करें।
17. **रंग त्रयोगदशी** के शुभ अवसर पर **'रम्भा साधना'** (पृष्ठ सं. 54) सम्पन्न करें।
18. काले तिल, काले उड़द एक काले वस्त्र में बांधकर किसी शिवलिंग पर चढ़ा दें।
19. **चैत्र नवरात्रि** पर घट स्थापन कर **'चैत्र नवरात्रि त्रिशक्ति साधना पूजन'** (पृष्ठ सं. 07) सम्पन्न करें।
20. प्रात: काल चिड़ियों को अन्न के दाने डालें।
21. **'गुरु जन्म'** दिवस पर **विशेष गुरु पूजन** सम्पन्न कर, गुरु सेवा का संकल्प लें।
22. **मूंगा गणपति** (न्यौ. 300/-) का पूजन कर, कागज पर मनोकामना लिखकर, दोनों को मंदिर में अर्पित कर दें, मनोकामना पूर्ण होगी।
23. सद्गुरुदेव से **'लक्ष्मी आबद्ध'** दीक्षा ग्रहण करें।
24. सरसों का तेल 3 बार अपने सिर पर घुमाकर, हनुमान जी के चरणों में चढ़ायें, ग्रह बाधा समाप्त होगी
25. आज तीन माला **'नवार्ण मंत्र'** से यज्ञ करें।
26. दूध से बनी मिठाई खाकर अपना दिन आरम्भ करें।
27. **रामनवमी** पर के शुभ अवसर पर पत्रिका के आगामी मार्च 26 अंक में प्रकाशित साधना-दीक्षा सम्पन्न करें।
28. एक पात्र में जल लेकर, उसमें पुष्प, कुमकुम, अक्षत डालकर पीपल के वृक्ष की जड़ में डाल दें।
29. **कामदा एकादशी** पर पत्रिका के आगामी मार्च 26 अंक में प्रकाशित साधना-दीक्षा सम्पन्न करें।
30. **अनंग त्रयोदशी** पर सद्गुरुदेव से **'कामदेव रति अनंग दीक्षा'** (पृष्ठ सं. 56) ग्रहण करें।
31. आज हनुमान चालीसा का पाठ कर घर से निकलें।

14-15 फरवरी 2026

नर्मदेश्वर शिव महाशिवरात्रि महोत्सव, ॐकारेश्वर

शिविर स्थल : अतिथि भवन, जायसवाल (कलाल) समाज ट्रस्ट, पेट्रोल पम्प के पास, ॐकारेश्वर, खण्डवा, मध्यप्रदेश

आयोजक मंडलः विष्णु पाटीदार 9826231345 • अशोक प्रजापति 9425074794 • श्रीकुमार शाक्य 9131044850 • ललित जोशी 9826088920 • यतिंद्र सक्सेना 9425059293 • कुंवरसिंह राजपूत 9301060305 • देवना अरोरा 9406917770 • नरेंद्र सिंह सोलंकी (ओम्कारेश्वर) 7772884571 • दीपक पटेल 9009930042 • गणेश मोदिया 9826031845 • मुकेश जैन 9425922222 • रामस्वरूप निखिल 9826091488 • गंगाप्रसाद जायसवाल 9755629061 • मनोज तिवारी 9893338539 • दिलीप धोटे 9826702088 • रघुनाथ सिंह सिसोदिया 8226097320 • कुलदीप यादव 9926018445 • आई डी कुमरे 7224996443 • विमल चौधरी 9893069761 • दीपक कोडापे 9425071172 • एस एल धुर्वे 9993155686 • कौशिक श्रीवास्तव 9425183471 • तेजपुरी गोस्वामी 9285219687 • राजेश परमार 8718088781 • महावीर मंडलोई (ओम्कारेश्वर) 7987893720 • कमल खेड़े 9827233200 • ईश्वरलाल देवड़ा 9009454321 • **बड़वाह (ओम्कारेश्वर):** पंकज देवराय 9399177435 • जगदीश भम ोरिया 9926598052 • विमलसिंह पंवार • दयाराम भमोरिया • नानक राम करोड़ा • तुलसीराम पटेल • मुकेश बोबडिया • **पुनासा (ओम्कारेश्वर):** रघुराज सिसोदिया 7024275845 • रूपेश राज वेद 9424556875 • सुरेश कलाम 6267244077 • लक्ष्छु राम यदुवंशी 9516858384 • सुभाष नागपुरे 9407499831 • अमृतलाल राठौर 9516473722 • रमेश कलम 9893445869 • **सनावद (ओम्कारेश्वर):** मनीष नरिया 9589388279 • घनश्याम पटेल • सुनील बिरला (तमोलिया) • सुनील पुनासिया (मोरट्टका) • कमलेश पटेल (सरपंच) • वासुदेव पटेल (धनगांव) • पुनाजी पटेल (घोसली) • बलराम वाशिंदे • कैलाशसिंह सोलंकी (घोसली) • **खंडवाः** शैलेन्द्र भावसार 8989293797 • रंजीत यादव 8878486317 • राजेंद्र नायक (सेमलदा) • नरेंद्र सिंह राणा 9926344310 • जितेन्द्र सिसोदिया 9827394688 • डॉ जितेन्द्र पटेल 9754084916 • **इंदौरः** उमाशंकर पुरोहित 9009044033 • जी पी परसाई 9340326221 • राम सिंह राजपूत 9425400822 • देव काग 8619110544 • दिनेश साहू 9039207313 • प्रीतम सिंह राजपूत 8889721421 • देवराम वर्मा 9826042471 • नरेश साहू 9229610122 • राजेश शर्मा 8878444044 • राजेश शर्मा (भमोरी) 9424495527 • डॉ दीक्षा राजपूत 9340804586 • आशीष डाले 9406718124 • कमल सिसोदिया 9753208821 • गोपाल वशिष्ठ 9926802121 • जगदीश बैरागी 7587615075 • गिरीश वर्मा 9399686395 • सुनीता धोटे 9111516899 • रूपेश लश्करी 7999347582 • अर्जुन दास बैरागी 9399417091 • चंद्रभान सिंह जी • आसाराम जी • राजाराम चौकसे 998135282 • जाहर सिंह 9826701516 • हेमराज सिंह चौहान • कुसुमखेड़े • मनीष प्रजापत 9399037020 • मनोहर साहू 8349622901 • डॉ राजेंद्र विश्वे 7000065294 • गुलाब सेन 9522422444 • अंकुर चौकसे 9826566821 • लक्ष्मीकांत पांडेय 9827031916 • राहुल अकलेचा 9131216596 • कमलेश सेप्टा 9479449257 • विजय परिहार 97820999908 • आनंद शर्मा 9755547259 • सुभाष धौलपुर 9827700021 • विनोद शर्मा 9827304221 • हेमंत सोलंकी 9826082921 • रामू चौहान 9425071986 • गजेंद्र कौशिक 9926066757 • नितिन नंदवाल 9769862821 • चंचला शर्मा 9827717648 • मोहनसिंह पवार (मेठवाड़ा) 9827865671 • रवि काग 8817470017 • मोनू प्रजापत 8319206611 • जगदीश शर्मा 9179099007 • हेमंत वर्मा 7693033632 • नीतू बंडोले 8319455376 • कैलाश साहू 6268635910 • रामकिशन पंवार 9869361920 • दिलीप फूल माली 7224090205 • दिनेश पटेल 9179815241 • भागीरथ नरवरिया • लालसिंह सिंधिया • अर्जुनसिंह राजपूत 7898795622 • जगदीश जुनवाल(मगरखेडी) 9617224117 • **विदिशाः** राकेश सिंह 9301636074 • नम्रता अरोड़ा 9406910005 • प्रकाश जोशी 9827362754 • सचिन अरोरा 9425614770 • **धामनोदः** डॉ राजेंद्र पाटीदार 9425074801 • लखन कुशवाहा 9755298494 • डॉ बागसिग पंवार 9826860921 • दीपक सिसोदिया 9826887912 • डॉ गांव शिंदे • **कुक्षीः** संजय टक्कर 9770503899 • महेश सेन 9893965160 • स्वयं प्रकाश कुशवाहा 9993356659 • नारायण वर्मा 8223047298 • **बैतूलः** हर्षा मनोजअग्रवाल 8982187885 • गणेश साहू 9977556797 • रघुनाथ लोखंडे 9754788277 • निश्चल कमाविसदार 7987511868 • पंजाब

राव चिलाटे 9165762576 • एस आर उईके 9981273203 • राजश्री मरकाम • विमल मचले • रूषी लाल यादव • अशोक इवने • कमलाकर धाडसे 8989263486 • महेश जखरकर • दिलीप कुलटे • वृंदावन यादव • घनश्याम धुर्वे • जनक लाल मवासे 8319047976 • धर्मेंद्र परिहार • सरनाम सिंह राठौड़ • शशिकांत जयसिंहपुरे 8602431898 • **महेश्वरः** भगवान पांडे 9589634101 • अरविंद पांडे 6264778541 • नंदकिशोर डोंगरे 7000058718 • अमावस्या कन्नौज(खरगोन) 9617800782 • **बड़वानीः** रजनीश पाटीदार 9977315003 • सुशील कुमरावत 989338253 • मोहन निगम 9926703585 • शिव राठौर 9893618728 • विनय जोशी 9893920977 • बांका भाई चौहान 7582001899 • रजनीश पाटीदार 997731503 • **झाबुआः** मनोहरसिंह वर्मा 9425033343 • मनोहरसिंह सिसोदिया 9754408404 • 9584799181 • **अलीराजपुरः** रायसिंग 7223019608 • भदूभाई पचाया 9179563086 • **जावराः** मांगीलाल पटेल 9926488020 • कैलाश सैनी 8120101825 • प्रकाश शेखावत 7582876275 • ओमप्रकाश श्रीमाली 9407150591 • पोलसन गोड 7582876275 • **भीकन गांवः** घन्नालाल प्रजापति 7089571058 • शिवलाल थेपड़ा (धनगांव) • **उज्जैनः** एन के सिजेरिया 9424011686 • भगवान सिजेरिया 9424870726 • गिरीश विश्वकर्मा 8770327857 • कैलाश सोनी 9826571757 • विकास साहू 830584 4785 • विकास नगर 6265275757 • संतोष परमार 7828005116 • अजय चौहान 9691521633 • मुकेश राठौर 8349717181 • दीपक प्रजापति 7879965595 • जितेंद्र सेन 9165115018 • सोनू प्रजापति 7024091398 • **मगरखेडीः** अन्तिम शुक्ला 9993114308 • मुकेश खंडेलवाल • दीपक सिसोदिया • अखिलेश जायसवाल • हिम्मत पटेल • वीरेंद्र सिंह राजपूत • कमल जायसवाल • कमलेश कुशवाहा • रवि सोलंकी • आर के यादव • जोगेन्दर सिंह • दुलिचन्द कुशवाहा • **धारः** रमेश चौहान 9752619050 • अमर सिंह भूरिया 9340070964 • हराकचंद चौधरी 9926039391 • राहुल हटीले 9340025750 • भवानीराम वर्मा 6263101570 • लालाराम पाटीदार 9179828688 • जितेंद्र काग 8305281800 • कपिल जाट 992659459 • अर्जुन पाटीदार 8319030311 • देवेंद्र पाटीदार 9179876180 • शेखर पाटीदार 9993020257 • सुरेश सोलंकी 9977419267 • नंदराम मुनिया 8982341417 • ओम प्रकाश राठौड़ 7489585156 • अजय पाटीदार 9893884799 • विवेक सिसोदिया 8319921146 • **देवासः** विमल चौधरी 9893069761 • मदन प्रजापति 9229993747 • पुखराज प्रजापति 9009926298 • प्रहलाद प्रजापति 9826371343 • राजेंद्र बाघ 9977349487 • संजय पागनीस 9893131200 • दीपक वाकडे 9827385961 • जयदेव चोट्टे 9009926298 • शिवचरण वाघेला 9584328422 • **भोपालः** एस बी साहु 9685124110 • भागीरथ साहू 7869011148 • कृष्ण गोपाल मैथिली 9826571757 • हरिराम प्रजापति 9584955266 • किशोर मैथली 9301380056 • **मैनाः** देवराज वर्मा 7389323879 • विनोद निखिल 7389321266 • महेश निखिल 7566626046 • डॉ.कमल निखिल 8085530184 • मानसिंह निखिल 7223037650 • बाबूलाल निखिल 9685107312 • एन पी तोमर 9926378033 • सिद्धनाथ निखिल 9630001522 • ओम प्रकाश चौटाला 6260672978 • लाडसिंह निखिल 7440507640 • अनिल बन्टु 9630001521 • डॉ राजेंद्र निखिल 9179793351 • प्रदीप जी सोनी 9981328837 • कैलाश प्रसाद मिस्त्री 7354473401 • हर विलास निखिल • **रीवाः** अनिता सिंह 8305217840 • **छिंदवाड़ाः** बी डी दवंडे 9424461118 • सुनीता दवंडे 7067277017 • **बालाघाटः** लक्ष्मण लिल्हारे 9827077484 • छबिलाल वर्मा • संजय भगत • शांतिलाल लिल्हारे • देवेंद्र पिछोडे • रेखलाल दशहरे • **नरसिंहगढ़ः** अरूण कुमार मेहता 94254 45137 • गजराज सिंह राठौड़ 9669826942 • गोविंद सिंह मकवाना 9425445073 • जगदीश गुप्ता 9826997723 • **श्योपुरः** जगदीश शर्मा 9575775602 • रामअवतार शर्मा 9926263620 • ओम प्रकाश जाट 9179331516 • रमाशंकर प्रजापत 9926604600 • निर्मल जाट 835785870732 • **नर्मदा पुरमः** सरनाम सिंह ठाकुर 9425687263 • सुरेश धुर्वे 9340947927 • **गुनाः** पी सी प्रजापति 9826514684 • कंवरलाल कुसवाहा 6265647161 • प्रितम केवट 9826235178 • पर्वत शिंह 9302308877 • जनार्दन शर्मा •

27-28 फरवरी - 1 मार्च 2026

दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

6-7-8 मार्च 2026

जोधपुर दीक्षा कार्यक्रम, जोधपुर

27-28-29 मार्च 2026

दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

11-12 अप्रैल 2026

लक्ष्मी आबद्ध साधना शिविर, कटनी

शिविर स्थल : कटनी, मध्यप्रदेश

आयोजक मंडलः सुशील विश्वकर्मा 9827628085 • पुरुषोत्तम पटेल 7692860806 • बिमलेश चौहान 9340411140 • उमेश पाण्डेय 7067863537 • अरविंद साहू 9131262667 • सुभाष पटेल 9893449023 • बिरेन मैनी 9425153996 • अर्जुन सिंह बाजवा 9425465845 • रामावतार पटेल 9131576719 • राजेश टीपा 9424523134 • द्वारिका कुशवाहा 8319524911 • सूर्यकांत मिश्रा 8889768277 • आदित्य प्रकाश मिश्रा 7999063649 • बी.बी.सिंह 9165116033 • विजय विश्वकर्मा 8964945008 • शंकरलाल सोनी 975200936 • शिवचरण कबीरा 9926659794 • जगदीश गुप्ता 8827665510 • ज्योति पटेल • राकेश श्रीवास्वत • विनोद सिंह 6269449505 • विनोद पटेल 9981585904 • ज्वाला पटेल • लखन पाल 9755156039 • छत्रपाल सिंह 798847331 • विष्णु बालक कुशवाहा 8871774536 • पुष्पेन्द्र सिंह 9755488366 • ओम प्रकाश गुप्ता 9589705399 • संतोष कुशवाहा 9009929838 • नितिन दुबे 9826542287 • मुरलीधर जेसवानी 9300510150 • शक्ति प्रताप सिंह • बी.एस.ठाकुर • विष्णु प्रसाद विश्वकर्मा 9977127362 • अशोक रैदास • शिव शंकर विश्वकर्मा 9226166418 • बिल्लु सरदार • संतोष बरसैया 9827430534 • अशोक पाण्डेय • मनीष शुक्ला 9669155076 • उमेश निगम 9993517919 • हरी प्रसाद राय 9324928328 • ए.पी.सिंह 9575273215 • रामपाल सेन 9827292862 • राजेश खरे 9993265313 • विनय चम्पुरिया 9755305930 • अशोक नगरिया 9893828900 • रामदास विश्वकर्मा 6263143481 • राम प्रसाद चक्रवर्ती • कालूराम पटेल • लल्लू रजक • संतराम तिवारी • शरदकांत मिश्रा • पवन सोधिया • भगवान दास चौरसिया • संजय सिंह रघुवंशी 7024179041 • भगवान दास राय 9755433941 • करूणाशंकर भरोतिया 8462896036 • किशन गुप्ता • सुरेन्द्र पाल बर्मन • अनिल गुप्ता • रमाकांत गुप्ता 9893663284 • राकेश विश्वकर्मा 9340980701 • अनिल यादव 9685583794 • योगेश पाण्डेय 9827641589 • सुनील कुमार गौतम 7974346946 • कालूराम पटेल • भगवत बर्मन • मोहनसिंह पटवारी • गणेश नारायण केवट • विनोद कर्ण • गुलाब पटेल • ब्रह्म कुमार पटेल • माईकल कोल • शंकरलाल गुप्ता • प्रकाश कुशवाहा • **बरहीः** प्रदीप सोनी • प्रहलाद सोनी • धर्मेन्द्र सोनी • बिजेन्द्रसिंह • केदार प्रसाद अग्रवाल • घुन्नु कुशवाहा • गोविन्द बर्मन • **करौदीः** रामहित हल्दकार • रामफल दाहिया • शुभम कुशवाहा • रामभुवन गुप्ता • शिव प्रसाद हर्दिया • सोहन कुशवाहा • राममित्र कुशवाहा • **पिपरिया कलाः** बलराज विश्वकर्मा • संतोष कुशवाहा • अशोक यादव • **कुठिया मुहगवांः** विनोद विश्वकर्मा 8959073411 • गोरेलाल विश्वकर्मा • मुन्ना कुश्वाहा • विनोद विश्वकर्मा 9009320813 • रामकुमार विश्वकर्मा • विजय विश्वकर्मा • श्यामलाल दहिया • **डोली केवलारीः** नित्यानंद तिवारी 8962059037 • दीपक जायसवाल • जगदीश सिंह • गुड्डा तिवारी • **बकेली उमरियाः** संत सोनी 91655057413 • रामदास साहू • श्याम सुंदर जायसवाल • रामकृष्ण कुशवाहा • **पिपराः** रामदास विश्वकर्मा 6263143481 • कमलेश प्रसाद सेन 7489013304 • रामविनोद तिवारी 9174923946 • **सिनगौड़ीः** गोविन्द गुप्ता 9993167138 • केशव गुप्ता • प्रमोद सोनी • श्रीकांत गुप्ता • नीरज निगम • कृष्ण दत्त परौहा • **बकेलीः** सरिता सिंह • हरी सिंधी • सत्यनारायण गर्ग • **कांटीः** के.एल.विश्वास • खज्जू केवट • छोटेलाल बर्मन • विजय नामदेव • **उचेहराः** संतोष पाण्डेय • **टिकुरीः** दलपत केवट 7805061807 • अजय केवट 9243813743 • रामकुमार विश्वकर्मा 9630399700 •

3-4-5 अप्रैल 2026

जोधपुर दीक्षा कार्यक्रम, जोधपुर

19-20-21 अप्रैल 2026

निखिल जयंती महोत्सव, बिलासपुर

शिविर स्थल : बिलासपुर, छत्तीसगढ़

24-25-26 अप्रैल 2026

दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

साधना और दीक्षा से ही जीवन गतिशील

प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री, दीक्षा, भेंट आदि की न्यौछावरआप सीधे
"निखिल मंत्र विज्ञान, जोधपुर" के **UBI Bank A/c. 310001010036403**
में **QR Code Scan** कर जमा करवा सकते है -

Union Bank of India
A/c. 310001010036403
IFSC Code - UBIN0531006

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India
NIKHIL MANTRA VIGYAN
QR919829025517-6403@unionbankofindia
SCAN & PAY
BHIM UPI

इसे अपने Phone में Save कर दें।

Nikhil Mantra Vigyan
SBI Bank A/c. - 32677736690
IFSC Code - SBIN0000659

में भी जमा करवा सकते है।

WhatsApp 9602334847 पर न्यौछावर की जानकारी अवश्य भेजें।

कार्यालय में व्यक्तिगत सम्पर्क केवल इन्हीं चार नम्बरों पर करें

- 9799988915
- 9799988930
- 9799988937
- 9799988938

इन्हें अपने **Phone** में **Save** कर दें।

शिविर, दीक्षा, साधना सामग्री, विधान, पूजन आदि की जानकारी हेतु
निखिल मंत्र विज्ञान जोधपुर के कार्यालय व्यवस्थापक से सम्पर्क करें -

संजय निखिल - मानसिंह - प्रवेश भारती - जगदीश

निखिल मंत्र विज्ञान के दिल्ली कार्यालय में साधनात्मक जानकारी, पूजन-यज्ञ-अनुष्ठान हेतु सम्पर्क करें - मनोज भारद्वाज - 9799988970

RNI No. RAJBIL/2010/34824
Postal Registration No. Jodhpur/366/2025-2027
Licensed to Post without Prepayment
License No. RJ/WR/WPP/13/2025-2027
Every month Posting Date 23-24
Every Month Printing Date 16-17
Posting office at Jodhpur RMS

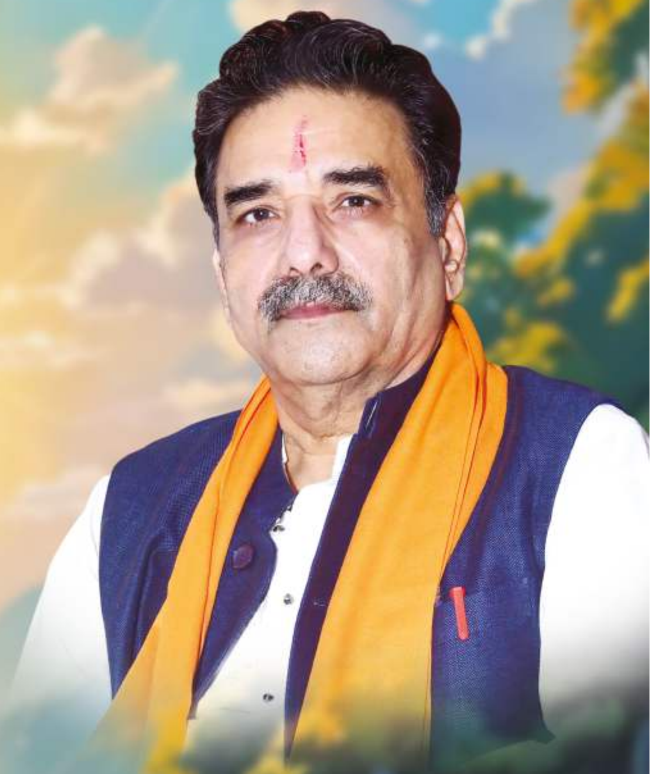

माह : फरवरी और मार्च में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंचकर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान जोधपुर	स्थान आरोग्यधाम (दिल्ली)
6-7-8 फरवरी	27-28 फरवरी - 1 मार्च
6-7-8 मार्च	27-28-29 मार्च

प्रेषक -
निखिल मंत्र विज्ञान
14 A, मेन रोड हाई कोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर - 342001 (राज.)
फोन: 9799988915, 9799988930
9799988937, 9799988938
SMS & WhatsApp - 9602334847
Web Add. - nikhilmantravigyan.org
facebook.com\nikhilmantravigyan.org
Email - nmv.guruji@gmail.com

दिल्ली कार्यालय - आरोग्य धाम, गुजरात अपार्टमेन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 110034,
फोन: 9799988904, 9799988905, 9799988970